







1361

Small, faint, illegible text or stamp, possibly a library or ownership mark.

Small, faint, illegible text or stamp, possibly a library or ownership mark.

Small, faint, illegible text or stamp, possibly a library or ownership mark.



27. Rex do in xpo p[ro]p[ri]o  
sancti martini & galuano  
fian[ti]a in p[ro]p[ri]o

Wenzeslaus  
Heims

Innoce p[ro]p[ri]o 2 m[od]

II. PPS. 15





27 Rex de in xpo p[ro]p[ri]us  
santo martini & galieno  
fian[ti] in p[ro]p[ri]o

Wenceslao  
Herms

Innoce





Petrus credo t. d. p. o. c. c. r. t. f.  
Andreas z t. thm p. f. c. v. d. n.  
Iacobz q. c. e. d. ff. n. ex. m. v. g. f.  
Iohs passus s. b. p. o. a. p. y. c. m. z. f. e.  
Thomas descendit ad inf. t. d. v. a. m.  
Iacobz ascendit ad. ce. se. ad. d. p. a.  
Philippus inde v. e. in v. z. mori  
Bartholomeus Credo t. p. m. f. a. n.  
Matthaeus scam ecclesie cu. f. com.  
Symon vnissi. p. t. o. z.  
Thaddeus sine Iudas Eurusus vsu.  
Matthaeus vita etna post mortem  
v. d. p.

Credo petrus aut z in andreas sup addit  
Cum iacob passus iohann descendit abyssus  
Ascendit iacob philippus in bartholomeus  
Credo sed t. scam matthaeus p. o. z. symon addit  
Petrus iudam noscat dactharchu vitam



Aqua. 1 a. 8 x. 9 d. 10 f. 11 t. 12 v. 13 y. 14 f. 15 b.  
16 c. 17 d. 18 e. 19 f. 20 g. 21 h. 22 i. 23 k. 24 l. 25 m. 26 n. 27 o. 28 p. 29 q. 30 r. 31 s. 32 t. 33 u. 34 v. 35 w. 36 x. 37 y. 38 z. 39 a. 40 b. 41 c. 42 d. 43 e. 44 f. 45 g. 46 h. 47 i. 48 k. 49 l. 50 m. 51 n. 52 o. 53 p. 54 q. 55 r. 56 s. 57 t. 58 u. 59 v. 60 w. 61 x. 62 y. 63 z. 64 a. 65 b. 66 c. 67 d. 68 e. 69 f. 70 g. 71 h. 72 i. 73 k. 74 l. 75 m. 76 n. 77 o. 78 p. 79 q. 80 r. 81 s. 82 t. 83 u. 84 v. 85 w. 86 x. 87 y. 88 z. 89 a. 90 b. 91 c. 92 d. 93 e. 94 f. 95 g. 96 h. 97 i. 98 k. 99 l. 100 m. 101 n. 102 o. 103 p. 104 q. 105 r. 106 s. 107 t. 108 u. 109 v. 110 w. 111 x. 112 y. 113 z. 114 a. 115 b. 116 c. 117 d. 118 e. 119 f. 120 g. 121 h. 122 i. 123 k. 124 l. 125 m. 126 n. 127 o. 128 p. 129 q. 130 r. 131 s. 132 t. 133 u. 134 v. 135 w. 136 x. 137 y. 138 z. 139 a. 140 b. 141 c. 142 d. 143 e. 144 f. 145 g. 146 h. 147 i. 148 k. 149 l. 150 m. 151 n. 152 o. 153 p. 154 q. 155 r. 156 s. 157 t. 158 u. 159 v. 160 w. 161 x. 162 y. 163 z. 164 a. 165 b. 166 c. 167 d. 168 e. 169 f. 170 g. 171 h. 172 i. 173 k. 174 l. 175 m. 176 n. 177 o. 178 p. 179 q. 180 r. 181 s. 182 t. 183 u. 184 v. 185 w. 186 x. 187 y. 188 z. 189 a. 190 b. 191 c. 192 d. 193 e. 194 f. 195 g. 196 h. 197 i. 198 k. 199 l. 200 m. 201 n. 202 o. 203 p. 204 q. 205 r. 206 s. 207 t. 208 u. 209 v. 210 w. 211 x. 212 y. 213 z. 214 a. 215 b. 216 c. 217 d. 218 e. 219 f. 220 g. 221 h. 222 i. 223 k. 224 l. 225 m. 226 n. 227 o. 228 p. 229 q. 230 r. 231 s. 232 t. 233 u. 234 v. 235 w. 236 x. 237 y. 238 z. 239 a. 240 b. 241 c. 242 d. 243 e. 244 f. 245 g. 246 h. 247 i. 248 k. 249 l. 250 m. 251 n. 252 o. 253 p. 254 q. 255 r. 256 s. 257 t. 258 u. 259 v. 260 w. 261 x. 262 y. 263 z. 264 a. 265 b. 266 c. 267 d. 268 e. 269 f. 270 g. 271 h. 272 i. 273 k. 274 l. 275 m. 276 n. 277 o. 278 p. 279 q. 280 r. 281 s. 282 t. 283 u. 284 v. 285 w. 286 x. 287 y. 288 z. 289 a. 290 b. 291 c. 292 d. 293 e. 294 f. 295 g. 296 h. 297 i. 298 k. 299 l. 300 m. 301 n. 302 o. 303 p. 304 q. 305 r. 306 s. 307 t. 308 u. 309 v. 310 w. 311 x. 312 y. 313 z. 314 a. 315 b. 316 c. 317 d. 318 e. 319 f. 320 g. 321 h. 322 i. 323 k. 324 l. 325 m. 326 n. 327 o. 328 p. 329 q. 330 r. 331 s. 332 t. 333 u. 334 v. 335 w. 336 x. 337 y. 338 z. 339 a. 340 b. 341 c. 342 d. 343 e. 344 f. 345 g. 346 h. 347 i. 348 k. 349 l. 350 m. 351 n. 352 o. 353 p. 354 q. 355 r. 356 s. 357 t. 358 u. 359 v. 360 w. 361 x. 362 y. 363 z. 364 a. 365 b. 366 c. 367 d. 368 e. 369 f. 370 g. 371 h. 372 i. 373 k. 374 l. 375 m. 376 n. 377 o. 378 p. 379 q. 380 r. 381 s. 382 t. 383 u. 384 v. 385 w. 386 x. 387 y. 388 z. 389 a. 390 b. 391 c. 392 d. 393 e. 394 f. 395 g. 396 h. 397 i. 398 k. 399 l. 400 m. 401 n. 402 o. 403 p. 404 q. 405 r. 406 s. 407 t. 408 u. 409 v. 410 w. 411 x. 412 y. 413 z. 414 a. 415 b. 416 c. 417 d. 418 e. 419 f. 420 g. 421 h. 422 i. 423 k. 424 l. 425 m. 426 n. 427 o. 428 p. 429 q. 430 r. 431 s. 432 t. 433 u. 434 v. 435 w. 436 x. 437 y. 438 z. 439 a. 440 b. 441 c. 442 d. 443 e. 444 f. 445 g. 446 h. 447 i. 448 k. 449 l. 450 m. 451 n. 452 o. 453 p. 454 q. 455 r. 456 s. 457 t. 458 u. 459 v. 460 w. 461 x. 462 y. 463 z. 464 a. 465 b. 466 c. 467 d. 468 e. 469 f. 470 g. 471 h. 472 i. 473 k. 474 l. 475 m. 476 n. 477 o. 478 p. 479 q. 480 r. 481 s. 482 t. 483 u. 484 v. 485 w. 486 x. 487 y. 488 z. 489 a. 490 b. 491 c. 492 d. 493 e. 494 f. 495 g. 496 h. 497 i. 498 k. 499 l. 500 m. 501 n. 502 o. 503 p. 504 q. 505 r. 506 s. 507 t. 508 u. 509 v. 510 w. 511 x. 512 y. 513 z. 514 a. 515 b. 516 c. 517 d. 518 e. 519 f. 520 g. 521 h. 522 i. 523 k. 524 l. 525 m. 526 n. 527 o. 528 p. 529 q. 530 r. 531 s. 532 t. 533 u. 534 v. 535 w. 536 x. 537 y. 538 z. 539 a. 540 b. 541 c. 542 d. 543 e. 544 f. 545 g. 546 h. 547 i. 548 k. 549 l. 550 m. 551 n. 552 o. 553 p. 554 q. 555 r. 556 s. 557 t. 558 u. 559 v. 560 w. 561 x. 562 y. 563 z. 564 a. 565 b. 566 c. 567 d. 568 e. 569 f. 570 g. 571 h. 572 i. 573 k. 574 l. 575 m. 576 n. 577 o. 578 p. 579 q. 580 r. 581 s. 582 t. 583 u. 584 v. 585 w. 586 x. 587 y. 588 z. 589 a. 590 b. 591 c. 592 d. 593 e. 594 f. 595 g. 596 h. 597 i. 598 k. 599 l. 600 m. 601 n. 602 o. 603 p. 604 q. 605 r. 606 s. 607 t. 608 u. 609 v. 610 w. 611 x. 612 y. 613 z. 614 a. 615 b. 616 c. 617 d. 618 e. 619 f. 620 g. 621 h. 622 i. 623 k. 624 l. 625 m. 626 n. 627 o. 628 p. 629 q. 630 r. 631 s. 632 t. 633 u. 634 v. 635 w. 636 x. 637 y. 638 z. 639 a. 640 b. 641 c. 642 d. 643 e. 644 f. 645 g. 646 h. 647 i. 648 k. 649 l. 650 m. 651 n. 652 o. 653 p. 654 q. 655 r. 656 s. 657 t. 658 u. 659 v. 660 w. 661 x. 662 y. 663 z. 664 a. 665 b. 666 c. 667 d. 668 e. 669 f. 670 g. 671 h. 672 i. 673 k. 674 l. 675 m. 676 n. 677 o. 678 p. 679 q. 680 r. 681 s. 682 t. 683 u. 684 v. 685 w. 686 x. 687 y. 688 z. 689 a. 690 b. 691 c. 692 d. 693 e. 694 f. 695 g. 696 h. 697 i. 698 k. 699 l. 700 m. 701 n. 702 o. 703 p. 704 q. 705 r. 706 s. 707 t. 708 u. 709 v. 710 w. 711 x. 712 y. 713 z. 714 a. 715 b. 716 c. 717 d. 718 e. 719 f. 720 g. 721 h. 722 i. 723 k. 724 l. 725 m. 726 n. 727 o. 728 p. 729 q. 730 r. 731 s. 732 t. 733 u. 734 v. 735 w. 736 x. 737 y. 738 z. 739 a. 740 b. 741 c. 742 d. 743 e. 744 f. 745 g. 746 h. 747 i. 748 k. 749 l. 750 m. 751 n. 752 o. 753 p. 754 q. 755 r. 756 s. 757 t. 758 u. 759 v. 760 w. 761 x. 762 y. 763 z. 764 a. 765 b. 766 c. 767 d. 768 e. 769 f. 770 g. 771 h. 772 i. 773 k. 774 l. 775 m. 776 n. 777 o. 778 p. 779 q. 780 r. 781 s. 782 t. 783 u. 784 v. 785 w. 786 x. 787 y. 788 z. 789 a. 790 b. 791 c. 792 d. 793 e. 794 f. 795 g. 796 h. 797 i. 798 k. 799 l. 800 m. 801 n. 802 o. 803 p. 804 q. 805 r. 806 s. 807 t. 808 u. 809 v. 810 w. 811 x. 812 y. 813 z. 814 a. 815 b. 816 c. 817 d. 818 e. 819 f. 820 g. 821 h. 822 i. 823 k. 824 l. 825 m. 826 n. 827 o. 828 p. 829 q. 830 r. 831 s. 832 t. 833 u. 834 v. 835 w. 836 x. 837 y. 838 z. 839 a. 840 b. 841 c. 842 d. 843 e. 844 f. 845 g. 846 h. 847 i. 848 k. 849 l. 850 m. 851 n. 852 o. 853 p. 854 q. 855 r. 856 s. 857 t. 858 u. 859 v. 860 w. 861 x. 862 y. 863 z. 864 a. 865 b. 866 c. 867 d. 868 e. 869 f. 870 g. 871 h. 872 i. 873 k. 874 l. 875 m. 876 n. 877 o. 878 p. 879 q. 880 r. 881 s. 882 t. 883 u. 884 v. 885 w. 886 x. 887 y. 888 z. 889 a. 890 b. 891 c. 892 d. 893 e. 894 f. 895 g. 896 h. 897 i. 898 k. 899 l. 900 m. 901 n. 902 o. 903 p. 904 q. 905 r. 906 s. 907 t. 908 u. 909 v. 910 w. 911 x. 912 y. 913 z. 914 a. 915 b. 916 c. 917 d. 918 e. 919 f. 920 g. 921 h. 922 i. 923 k. 924 l. 925 m. 926 n. 927 o. 928 p. 929 q. 930 r. 931 s. 932 t. 933 u. 934 v. 935 w. 936 x. 937 y. 938 z. 939 a. 940 b. 941 c. 942 d. 943 e. 944 f. 945 g. 946 h. 947 i. 948 k. 949 l. 950 m. 951 n. 952 o. 953 p. 954 q. 955 r. 956 s. 957 t. 958 u. 959 v. 960 w. 961 x. 962 y. 963 z. 964 a. 965 b. 966 c. 967 d. 968 e. 969 f. 970 g. 971 h. 972 i. 973 k. 974 l. 975 m. 976 n. 977 o. 978 p. 979 q. 980 r. 981 s. 982 t. 983 u. 984 v. 985 w. 986 x. 987 y. 988 z. 989 a. 990 b. 991 c. 992 d. 993 e. 994 f. 995 g. 996 h. 997 i. 998 k. 999 l. 1000 m.

Amarus. 1 a. 2 b. 3 c. 4 d. 5 e. 6 f. 7 g. 8 h. 9 i. 10 k. 11 l. 12 m. 13 n. 14 o. 15 p. 16 q. 17 r. 18 s. 19 t. 20 u. 21 v. 22 w. 23 x. 24 y. 25 z. 26 a. 27 b. 28 c. 29 d. 30 e. 31 f. 32 g. 33 h. 34 i. 35 k. 36 l. 37 m. 38 n. 39 o. 40 p. 41 q. 42 r. 43 s. 44 t. 45 u. 46 v. 47 w. 48 x. 49 y. 50 z. 51 a. 52 b. 53 c. 54 d. 55 e. 56 f. 57 g. 58 h. 59 i. 60 k. 61 l. 62 m. 63 n. 64 o. 65 p. 66 q. 67 r. 68 s. 69 t. 70 u. 71 v. 72 w. 73 x. 74 y. 75 z. 76 a. 77 b. 78 c. 79 d. 80 e. 81 f. 82 g. 83 h. 84 i. 85 k. 86 l. 87 m. 88 n. 89 o. 90 p. 91 q. 92 r. 93 s. 94 t. 95 u. 96 v. 97 w. 98 x. 99 y. 100 z. 101 a. 102 b. 103 c. 104 d. 105 e. 106 f. 107 g. 108 h. 109 i. 110 k. 111 l. 112 m. 113 n. 114 o. 115 p. 116 q. 117 r. 118 s. 119 t. 120 u. 121 v. 122 w. 123 x. 124 y. 125 z. 126 a. 127 b. 128 c. 129 d. 130 e. 131 f. 132 g. 133 h. 134 i. 135 k. 136 l. 137 m. 138 n. 139 o. 140 p. 141 q. 142 r. 143 s. 144 t. 145 u. 146 v. 147 w. 148 x. 149 y. 150 z. 151 a. 152 b. 153 c. 154 d. 155 e. 156 f. 157 g. 158 h. 159 i. 160 k. 161 l. 162 m. 163 n. 164 o. 165 p. 166 q. 167 r. 168 s. 169 t. 170 u. 171 v. 172 w. 173 x. 174 y. 175 z. 176 a. 177 b. 178 c. 179 d. 180 e. 181 f. 182 g. 183 h. 184 i. 185 k. 186 l. 187 m. 188 n. 189 o. 190 p. 191 q. 192 r. 193 s. 194 t. 195 u. 196 v. 197 w. 198 x. 199 y. 200 z. 201 a. 202 b. 203 c. 204 d. 205 e. 206 f. 207 g. 208 h. 209 i. 210 k. 211 l. 212 m. 213 n. 214 o. 215 p. 216 q. 217 r. 218 s. 219 t. 220 u. 221 v. 222 w. 223 x. 224 y. 225 z. 226 a. 227 b. 228 c. 229 d. 230 e. 231 f. 232 g. 233 h. 234 i. 235 k. 236 l. 237 m. 238 n. 239 o. 240 p. 241 q. 242 r. 243 s. 244 t. 245 u. 246 v. 247 w. 248 x. 249 y. 250 z. 251 a. 252 b. 253 c. 254 d. 255 e. 256 f. 257 g. 258 h. 259 i. 260 k. 261 l. 262 m. 263 n. 264 o. 265 p. 266 q. 267 r. 268 s. 269 t. 270 u. 271 v. 272 w. 273 x. 274 y. 275 z. 276 a. 277 b. 278 c. 279 d. 280 e. 281 f. 282 g. 283 h. 284 i. 285 k. 286 l. 287 m. 288 n. 289 o. 290 p. 291 q. 292 r. 293 s. 294 t. 295 u. 296 v. 297 w. 298 x. 299 y. 300 z. 301 a. 302 b. 303 c. 304 d. 305 e. 306 f. 307 g. 308 h. 309 i. 310 k. 311 l. 312 m. 313 n. 314 o. 315 p. 316 q. 317 r. 318 s. 319 t. 320 u. 321 v. 322 w. 323 x. 324 y. 325 z. 326 a. 327 b. 328 c. 329 d. 330 e. 331 f. 332 g. 333 h. 334 i. 335 k. 336 l. 337 m. 338 n. 339 o. 340 p. 341 q. 342 r. 343 s. 344 t. 345 u. 346 v. 347 w. 348 x. 349 y. 350 z. 351 a. 352 b. 353 c. 354 d. 355 e. 356 f. 357 g. 358 h. 359 i. 360 k. 361 l. 362 m. 363 n. 364 o. 365 p. 366 q. 367 r. 368 s. 369 t. 370 u. 371 v. 372 w. 373 x. 374 y. 375 z. 376 a. 377 b. 378 c. 379 d. 380 e. 381 f. 382 g. 383 h. 384 i. 385 k. 386 l. 387 m. 388 n. 389 o. 390 p. 391 q. 392 r. 393 s. 394 t. 395 u. 396 v. 397 w. 398 x. 399 y. 400 z. 401 a. 402 b. 403 c. 404 d. 405 e. 406 f. 407 g. 408 h. 409 i. 410 k. 411 l. 412 m. 413 n. 414 o. 415 p. 416 q. 417 r. 418 s. 419 t. 420 u. 421 v. 422 w. 423 x. 424 y. 425 z. 426 a. 427 b. 428 c. 429 d. 430 e. 431 f. 432 g. 433 h. 434 i. 435 k. 436 l. 437 m. 438 n. 439 o. 440 p. 441 q. 442 r. 443 s. 444 t. 445 u. 446 v. 447 w. 448 x. 449 y. 450 z. 451 a. 452 b. 453 c. 454 d. 455 e. 456 f. 457 g. 458 h. 459 i. 460 k. 461 l. 462 m. 463 n. 464 o. 465 p. 466 q. 467 r. 468 s. 469 t. 470 u. 471 v. 472 w. 473 x. 474 y. 475 z. 476 a. 477 b. 478 c. 479 d. 480 e. 481 f. 482 g. 483 h. 484 i. 485 k. 486 l. 487 m. 488 n. 489 o. 490 p. 491 q. 492 r. 493 s. 494 t. 495 u. 496 v. 497 w. 498 x. 499 y. 500 z. 501 a. 502 b. 503 c. 504 d. 505 e. 506 f. 507 g. 508 h. 509 i. 510 k. 511 l. 512 m. 513 n. 514 o. 515 p. 516 q. 517 r. 518 s. 519 t. 520 u. 521 v. 522 w. 523 x. 524 y. 525 z. 526 a. 527 b. 528 c. 529 d. 530 e. 531 f. 532 g. 533 h. 534 i. 535 k. 536 l. 537 m. 538 n. 539 o. 540 p. 541 q. 542 r. 543 s. 544 t. 545 u. 546 v. 547 w. 548 x. 549 y. 550 z. 551 a. 552 b. 553 c. 554 d. 555 e. 556 f. 557 g. 558 h. 559 i. 560 k. 561 l. 562 m. 563 n. 564 o. 565 p. 566 q. 567 r. 568 s. 569 t. 570 u. 571 v. 572 w. 573 x. 574 y. 575 z. 576 a. 577 b. 578 c. 579 d. 580 e. 581 f. 582 g. 583 h. 584 i. 585 k. 586 l. 587 m. 588 n. 589 o. 590 p. 591 q. 592 r. 593 s. 594 t. 595 u. 596 v. 597 w. 598 x. 599 y. 600 z. 601 a. 602 b. 603 c. 604 d. 605 e. 606 f. 607 g. 608 h. 609 i. 610 k. 611 l. 612 m. 613 n. 614 o. 615 p. 616 q. 617 r. 618 s. 619 t. 620 u. 621 v. 622 w. 623 x. 624 y. 625 z. 626 a. 627 b. 628 c. 629 d. 630 e. 631 f. 632 g. 633 h. 634 i. 635 k. 636 l. 637 m. 638 n. 639 o. 640 p. 641 q. 642 r. 643 s. 644 t. 645 u. 646 v. 647 w. 648 x. 649 y. 650 z. 651 a. 652 b. 653 c. 654 d. 655 e. 656 f. 657 g. 658 h. 659 i. 660 k. 661 l. 662 m. 663 n. 664 o. 665 p. 666 q. 667 r. 668 s. 669 t. 670 u. 671 v. 672 w. 673 x. 674 y. 675 z. 676 a. 677 b. 678 c. 679 d. 680 e. 681 f. 682 g. 683 h. 684 i. 685 k. 686 l. 687 m. 688 n. 689 o. 690 p. 691 q. 692 r. 693 s. 694 t. 695 u. 696 v. 697 w. 698 x. 699 y. 700 z. 701 a. 702 b. 703 c. 704 d. 705 e. 706 f. 707 g. 708 h. 709 i. 710 k. 711 l. 712 m. 713 n. 714 o. 715 p. 716 q. 717 r. 718 s. 719 t. 720 u. 721 v. 722 w. 723 x. 724 y. 725 z. 726 a. 727 b. 728 c. 729 d. 730 e. 731 f. 732 g. 733 h. 734 i. 735 k. 736 l. 737 m. 738 n. 739 o. 740 p. 741 q. 742 r. 743 s. 744 t. 745 u. 746 v. 747 w. 748 x. 749 y. 750 z. 751 a. 752 b. 753 c. 754 d. 755 e. 756 f. 757 g. 758 h. 759 i. 760 k. 761 l. 762 m. 763 n. 764 o. 765 p. 766 q. 767 r. 768 s. 769 t. 770 u. 771 v. 772 w. 773 x. 774 y. 775 z. 776 a. 777 b. 778 c. 779 d. 780 e. 781 f. 782 g. 783 h. 784 i. 785 k. 786 l. 787 m. 788 n. 789 o. 790 p. 791 q. 792 r. 793 s. 794 t. 795 u. 796 v. 797 w. 798 x. 799 y. 800 z. 801 a. 802 b. 803 c. 804 d. 805 e. 806 f. 807 g. 808 h. 809 i. 810 k. 811 l. 812 m. 813 n. 814 o. 815 p. 816 q. 817 r. 818 s. 819 t. 820 u. 821 v. 822 w. 823 x. 824 y. 825 z. 826 a. 827 b. 828 c. 829 d. 830 e. 831 f. 832 g. 833 h. 834 i. 835 k. 836 l. 837 m. 838 n. 839 o. 840 p. 841 q. 842 r. 843 s. 844 t. 845 u. 846 v. 847 w. 848 x. 849 y. 850 z. 851 a. 852 b. 853 c. 854 d. 855 e. 856 f. 857 g. 858 h. 859 i. 860 k. 861 l. 862 m. 863 n. 864 o. 865 p. 866 q. 867 r. 868 s. 869 t. 870 u. 871 v. 872 w. 873 x. 874 y. 875 z. 876 a. 877 b. 878 c. 879 d. 880 e. 881 f. 882 g. 883 h. 884 i. 885 k. 886 l. 887 m. 888 n. 889 o. 890 p. 891 q. 892 r. 893 s. 894 t. 895 u. 896 v. 897 w. 898 x. 899 y. 900 z. 901 a. 902 b. 903 c. 904 d. 905 e. 906 f. 907 g. 908 h. 909 i. 910 k. 911 l. 912 m. 913 n. 914 o. 915 p. 916 q. 917 r. 918 s. 919 t. 920 u. 921 v. 922 w. 923 x. 924 y. 925 z. 926 a. 927 b. 928 c. 929 d. 930 e. 931 f. 932 g. 933 h. 934 i. 935 k. 936 l. 937 m. 938 n. 939 o. 940 p. 941 q. 942 r. 943 s. 944 t. 945 u. 946 v. 947 w. 948 x. 949 y. 950 z. 951 a. 952 b. 953 c. 954 d. 955 e. 956 f. 957 g. 958 h. 959 i. 960 k. 961 l. 962 m. 963 n. 964 o. 965 p. 966 q. 967 r. 968 s. 969 t. 970 u. 971 v. 972 w. 973 x. 974 y. 975 z. 976 a. 977 b. 978 c. 979 d. 980 e. 981 f. 982 g. 983 h. 984 i. 985 k. 986 l. 987 m. 988 n. 989 o. 990 p. 991 q. 992 r. 993 s. 994 t. 995 u. 996 v. 997 w. 998 x. 999 y. 1000 z.

Aer. 1 a. 2 b. 3 c. 4 d. 5 e. 6 f. 7 g. 8 h. 9 i. 10 k. 11 l. 12 m. 13 n. 14 o. 15 p. 16 q. 17 r. 18 s. 19 t. 20 u. 21 v. 22 w. 23 x. 24 y. 25 z. 26 a. 27 b. 28 c. 29 d. 30 e. 31 f. 32 g. 33 h. 34 i. 35 k. 36 l. 37 m. 38 n. 39 o. 40 p. 41 q. 42 r. 43 s. 44 t. 45 u. 46 v. 47 w. 48 x. 49 y. 50 z. 51 a. 52 b. 53 c. 54 d. 55 e. 56 f. 57 g. 58 h. 59 i. 60 k. 61 l. 62 m. 63 n. 64 o. 65 p. 66 q. 67 r. 68 s. 69 t. 70 u. 71 v. 72 w. 73 x. 74 y. 75 z. 76 a. 77 b. 78 c. 79 d. 80 e. 81 f. 82 g. 83 h. 84 i. 85 k. 86 l. 87 m. 88 n. 89 o. 90 p. 91 q. 92 r. 93 s. 94 t. 95 u. 96 v. 97 w. 98 x. 99 y. 100 z. 101 a. 102 b. 103 c. 104 d. 105 e.



Conicta go .p. q. ño

Summa lra.

Eclipsio solis. 62. 1. Time. 63. c.

en. 3.	ep. f.	uz. h.	Go. h.	ng. c.	nh. b.
--------	--------	--------	--------	--------	--------

Fontes | 2 t. v. | 4 x. v. 3. | 76. 3. | 32.

Formica. 76.7.

1811



Frigus 20. b. 17. 7. k. l. Fruges cu perunt 39. x.

Febrio 21. h.

Fecor 25. t. 20. l. o.

Fumus 47. d. 19. k.

Folium 42. o.

Fumus 62. l.

Funda 51. d.

Gaudium sopni efficit 38. o. yf. v.

Gustus digne dulcedinis 31. l. 22. e

Grua 22.

Guce 12. b. 22. e. 6. Ganne 33. h.

Gummy 14. h.

Gustus 31. g. h. 1. k. l. 38. o. 22. e

Galli cantus 21. b. 63. c. 18. b.

Gemma hinc faciem homo f. v. g. 18. y. 54. r. 66. t.

Galaxia 81. r.

Humilitas 20.

Honor 39.

Herbe viventes 18. c. 66. v. y.

Hortus 41. p. 47. d. e. f.

Hausus. 11. r.

Jeunium 21. p. 22. e. 39. l.

Jame 11. a. b. 7. a. d. g. 2. l. o. n. o. 11. l. 10. h. r. 17. v. 30. o. p.

34. 8. 33. 1. 20. d. 22. b. 23. g. 11. x. 18. a. 20. p.

Jocundum 17. h. 29. o. 11. q.

Juber siue pluvia 8. r. 11. o. p. 33. k. 31. f. 41. y. 44. b.

Jure 43. 41. n. 62. p. 61. n. o. p. 61. b.

Jeunium 21. g. h. 1.

Jaus 21.

Jitigium 21.

Jacume 21.

Japie 3. k. 21. q. 43. k. 61. d. 18. d. e.



Limon | 8.v | 9.v | 3.a | 7.8 | 77.ptm | 73.op | 77.v

Lima | 10.8 | 19.ptm | 63.ptm | 62.8 | 64.q

Locuto | 16.0

Lenare | 32.n | lignu pulfomluz | 80.0

Lignu vas | 26.a | lignu igneusta | 30.n | 71.6

Lacime | 26.c | 38.0 | 29.ptm | 1.b

Ligwa | 30.4 | 1

Liquor | ligni | 22.d

Litus | 49.c | 60.ptm

Lac facti gma vire | 11.8 | 12.x | 11.6

Lanna auri r argenti ghumt mtponta zukuwa ut bonace

omembz aliq eu rgeledit | 33.0 | 10.b

Maria virgo | 40.usq | 64

Montes sine altu | 6.8 | 1.n | 1.0 | 8.q | 11.0 | 13.8 | 17.6

Munus | 10.7 | 16.y | 11.6 | 22.x | 61.q | 67.ptm | 11.7

Morbis | 10.1 | 12.2 | 36.d | 17.7 | 22.v | 11.1

Morbis | 10.1 | 12.2 | 36.d | 17.7 | 22.v | 11.1

Mare | 19.1 | 76.7

Musca | 76.8 | 7 edina pstantor nlla e | 12.1

Mel | 30.7 | 22.e

Mors | 29.2 | 61.v

Mortua corpa pectus litus | 49.6 | 11.2

Monsira erit adlitus | 49.8 | 62.7

Morus torre | 60.8 | 11.0 | 13.8

Murus sine tre | 66.2

Martestere | 68.8

Medula | 11.7

Mindragora | 12.2

Matuitas | 64



- t. v.

Aubeo. 6. g. n. n. 8. q. 17. x. y. 13. z. 12. f. 4. 14. o. p. q. r. 15. s. t. v.  
 in p. 39. y. 30. a. 23. z. 44. b. 45. f. 8. nox. hi. cf.  
 n. 7. 4. h. 1. 20. a. c. d. e. f. 8

Aux. 5. h. u. o. 39. y. 63. b.

Rebula. 20. q. 23. a. 29. n. 61. e. no. 3.

Nox. 28. d.

Rigredo. 44. b.

Rigromancia. 49. a.

Rauces trit velocat aditus. 49. c. d. Navigatibz nb adaqlo-  
 ne. 79. d.

Rux. 15. p.

Rucleus. 11. s.

Raufca. 80. l.

Ostia humetta. 36. z.

Oratio. 61. Odio aptis. 20. y.

O. o. 11. v. Orti q. t. f. aduit. 41. b. c. d. 47. d. e. f.

Odor rose. 18. x. 6. 13.

Oleum hui. 37. f. 32. q. 34. v. y.

Oreano ignis apparz. 33. q.

Ossa. 25. b.

Oua. 43. n.

Oculus nidofero atqut cornua. 12. x. y.

Passio. 68.

Poma. 5. q. 20. a.

Peluis. 17. s.

Peslonaa. 13. c. 39. z.

Panno. 16. l.

Poloritio. 11. o. 38. p.

Pulture mali. 18. y.

Plazat p. gaudia. 29. 1.

Pater potuit ples filios g. n. e.

Puluis n. effluit doche.

Pallidus ardis. 11. e. f.

Pannus. 35. c. 47. s. 11. f.

Potubum. 34. t. v. 25. o. q. 11. t.

Potune. 32. o.

Penne. 34. v. 25. o.

Potest. 27. n. 143. p.

Potest. 27. n. 143. p.

Potest. 27. n. 143. p.

Potest. 27. n. 143. p.



**D.** Quies / 67 pto<sup>m</sup> /

**200.** 4. a. b. c. / 5. d. e. f. / 10. h. / 12. h. / 19. 7. / 30. m. / 31. v. / 33. e.  
35. b. c. / 22. e. g. / 24. 7. / 40. q. r. pto<sup>m</sup> / 41. y. / no. 7. a.

**21.** Rosa / 14. c. / 49. t. / 40. f.  
Rubedo / 11. q. / 21. o. / 44. c. / 58. n. / 21. r.  
Mena / 43. n. / 46. g.  
Resurrexio / 10. v.

**22.** Sancti / 11. / Salut surfu. / 20. 2. e  
Stelle / 7. e. / 21. n. / 25. e. / 17. x. / 12. y. / no. v. / 11. e. / 11. d.  
Serpens / 7. f. / 2. v. / 11. h. / 13. d. / 12. h. / 78. a. / 79. g. / 31. x.  
21. o. / 23. y. / 43. n. / 42. r. / no. n. no

**23.** Silex / 2. q. / 31. q. r. / 12. f. / 31. sum. / 39. v. / 31. a. / 31. a.  
Speculum / 11. o. n. p. q. / 17. r. / 14. c. / 19. d. / 48. t. / 14. d. / 18. z.  
**24.** Sol & Luna / 11. v. / 14. n. / 15. t. / 11. e. f. / 18. g. h. i. h. / 19. g.  
25. r. / 21. b. / 44. y. / 54. q. / 55. a. / 18. p.

**25.** Solitudines & valles / 13. b. / 21. a. / 33. h.  
Sol / 19. o. p. / 10. 2. a. / 18. 7. / 44. b. c. / 50. h. / 18. 3. q. / 58. 7.  
no. x. y. / 18. b.

**26.** Spuma / 7. 7. / 19. f. / Sputum / 21. g.  
Sal / 15. f. / 55. t. / Sopnia / 22. f.

**27.** Saguis / 15. m. / 11. e. / 31. y. a. / 33. e. / 51. p. / 58. h. pto<sup>m</sup> / 12. x.  
Sompnus / 19. g. / 38. n. / 41. a. / 50. f. / no. y. / Sensus / 28. e. / 11. d.  
Serenitas / 19. 7. / Syrenes / 52. o.  
Strepitus / 31. t. / 25. 7. / 51. p. / Sydera thut aq. / 11. e.  
Suis / 22. f. / Sonus / 13. e.  
Salsus / 20. e. / Spertum cornu / 12. b.  
Saguta plubi / 11. a.



Campeſtas. | 8. t. | 12. 7. | 32. l. | 42. t. | 49. d. | 60. g. | 69. h. | 69. o. r.

Comitrus. | 14. f. | 10. p. | 33. 7. | 34. t. | 42. c. | 44. h. | 40.

Tranquillitas. | 10. r. | <sup>29. h.</sup> terta figurat. | 31. t. | 36. z.

Chesaurus. | 21. p. | 14. 6.

terre diſpoſicio & ſitus. | 17. o. p. q.

terre motus unde fit. | 60. g.

Tenebras ſentimus. | 11. d.

Trinitas. | 13. 6.

Veniſtas. | 20. 20. | <sup>36. a.</sup> vas n̄ claudat. | 34. x. | 26. 9. | 10. a.

Vilitas. | 19. | <sup>19. 0</sup> Vnius q̄ ſignat fontem. | 19. 0

Venenum. | 8. 6. v. | 12. z. | 18. a. | 32. o. | 38. o. | 23. p. | 64. n.

Valles. | 17. t. | 18. a. | <sup>1. b.</sup> vasis aurea & aſ. | 1. b.

Vene terre. | 13. z.

Vmbra. | 12. 8. | 13. 0. | 19. h. | 11. b. | 42. p. c. | 44. p. x. a.

Videre. | 10. p. x.

Virgo. | 14. e. | 49. p. a.

Vulnera. | 14. e. | 49. z. b. | 13. t. v.

Vindicta. | 18. a. c.

Virga. | 30. h. l. | 31. r. | 68. o.

Viſus. | 19. h. | 36. e. | 12. l.

Vox. | 38. p. | 28. c. | d. e.

Vita. | 29. x. | 20. c.

Ventus. | 28. f. | 43. t. | 33. b.

Vinum. | 44. p.

Vapores. | 46. e.

Vappa. | 19. 7.

Veſtes q̄ ſantillat nocte. | 20. o. | 40. t.

Vitruum. | 21. 6. | 11. d.

Viſoes igneaſ. | 22. f.



[illegible]



Incipit Liber. Exemploz. Et primum quidem De amore tractat capitulum. Quem ipsi igni non immerito dixerimus comparandum. ob rationes varias seu effectus. In

**P**tholomeus. almaest. p. Ignis quidē regionis ethere cap<sup>t</sup> ca<sup>o</sup> nequaquam descendit in orizonta emisp<sup>er</sup>ialitatis mū. **Amoris**

dane nisi rore & lumine mediante. Sic amor celestis gracie neq<sup>u</sup>m defluit in orizonta fidelis aīe. nisi in rore contritiōis

& penitēcie atq<sup>ue</sup> i lumine cognitiōis diuine. **V**nde Augustinus cont. faustū. Amor q<sup>u</sup>pe celestis refrigerij. soli tri-

bunetur penitenti. atq<sup>ue</sup> celestia seu eterna ueraciter cognoscantur. **fontinus** In Descriptiōibus mū. Aque liquidē omniē. maio-

res atq<sup>ue</sup> diffusiores sunt noctis tpe q<sup>u</sup>m in die. Cui<sup>o</sup> i<sup>o</sup> rācō ē. Nam nox ē uehement<sup>er</sup> frigida & humida. ut asserit cōstā-

tinus. Iam sol in die aquas exterminat. i nocte uero minime. q<sup>u</sup>admodū ostendit theophrastus. Sic fontes celestia

amoris & gracie. maiores quidē sunt i nocte tribulatio- nis & penitēcie. q<sup>u</sup>m in die felicitatis affluēcieq<sup>ue</sup> munda-

ne. **V**nde ysidorus. In De Summo Bono. Semp<sup>er</sup> mūmū i mente tribulata. diffunditur uideri<sup>9</sup> amoris diuini re-

frigeria seu fluenta. **theophilus**. In Breuiloquio Diuer- sarū arcū. Carbo igneus. i manu absq<sup>ue</sup> lesione nullaten<sup>us</sup>

retinetur. nisi manus hīc & inde uelocit<sup>er</sup> ueniat. Sic atq<sup>ue</sup> celicus. nullaten<sup>us</sup> possidet. nisi mens nostra incessanter

uirtutū motibus agitetur. **V**nde hugo De scō uictore Nequaquam dulcedo amoris cristi p<sup>er</sup>cipitur. nisi mens omni-

bus uirtute & modestia decoretur. **Archita** Tharentin<sup>us</sup> In hīc De Euentib<sup>us</sup> In Natura. In uasis quidē argenteis

seu aureis. difficilime bullire potit ipa aqua. Cui<sup>o</sup> i<sup>o</sup> rācō ē. Nam ut ait cōmēta<sup>tor</sup> sup<sup>er</sup> g<sup>en</sup>eralia amēne. mūltā

humiditas frigiditas q<sup>ue</sup> argenti & cōnem ignis t<sup>em</sup>perat & restrigit. Sic & i mentibus. Auro mūdanē felicitatis

fulgidis. neq<sup>u</sup>m bulliet amor humanitas q<sup>ue</sup> celestis. **V**nde.



**U**nde. **Barthol.** sup. apoc. **Aug.** in meternu i eo amoris diu  
ni lucebit radus. qui mundano nunc fuerit luce illustratus.  
vnde qz h<sup>o</sup> duntaxat fortunatus. **Galenus** in Anthoditario ve  
teri. **Digitus** igne lesus. ut quidem sanetur facili<sup>9</sup> igni est  
denno applicandus. **Aug.** ratio e. Nam ignis exterior. ignem  
interiore extrahit & educit. ut ostendit **Euenus**. Sic mens  
nostra. igne lesa praece concipit. igni applicetur sananda. amo  
ris atqz caritatis eterne

**U**nde. **Iero.** in. **Ep.** ad paula  
& eustochium. Ignis quidem tam praece concipit qm iehene.  
diuino solum extingendus credit i amore. **Costantinus**. in.

**Tractatu. De sanis. liquidor.** **Ebur** decoctum vno forti. mol  
le atqz terribile efficit uelud. ceta. cera. **Aug.** ratio e. Nam  
ebur ex natura liquorem sibi quemqz nobilem inest. et  
& inbibit. ut refert **fontin.** in Descriptioibus vniuersi. Sic

**ebur** pietatis puritatis. vno decoctum mellisue caritatis  
flexibilioris erant oio efficit pietatis **U**nde **Petrus**  
sup. lucia. Quanto etenim xpc nunc igne i nobis estuauerit  
caritatis. tanto reuera maioris erga nos erunt pietatis.

**philareus** in. **Tractatu. De crisi.** Cumqz oculus noster  
ictu aliquo aut plaga impetitur. festim inde ignis elici  
estimatur. **Aug.** ro tanget infra. **Caplo** De penitentia. Sic  
dum oculus mentis nre. ictu tundit contriciois & penitentie.  
ignis mox ide resultat amoris atqz caritatis diuine

**U**nde. **Ambro.** in. li. De uigilate. Ut quide igne i no  
bis amoris pietatis accedam<sup>9</sup>. mentem necesse e nram itib<sup>9</sup>  
penitentie mundam<sup>9</sup>. **Altabia** in. **Theorica planetar.** Qui

in profunda fouea aut in fonte collocatus fuerit. stellas  
in die dare impideqz indebit. **Aug.** ratio tanget infra  
in **caplo** De visione. Sic qui in fonte amoris pietatis pro  
fundat. celestia & diuina clari<sup>9</sup> atqz limpidi<sup>9</sup> contemplantur

**U**nde **Diom. sine.** in. li. De celesti. gerarchia. Profundari



necesse est mentem in fontibus saluatoris. in fluminibusq; amoris.  
 ut lux nobis ingruat eterni luminis et candoris. **ysidorus** In  
 historijs. naturalib; In estu uehementi. pisces fursum salunt ex  
 aquam. Sic et mentes humane. in estu quidem amoris et ha  
 ruitatis diuine. fursum salunt de aquis presentis miserie. in  
 altum beatitudinis sempiternae. **¶** Unde Richardus de. scō. v. **¶** **¶** **¶**  
 quidē m̃a. diuino estuans i amore. ab oī huius miserie elon  
 gatur et tollitur regione. altitudinē assutendū beatitudinis sepius  
**Sohnus** In. lib. Peri. Serpens. transiens fluiū. suū p̃nus et  
 fundit quomq; uenient. Cuius rō ē s̃lam uenientē serpen  
 tis ē frigidum. ut asserit. Galenus. Sed et aqua magis ē fr  
 gida qm̃ humida. ut recitat constantinus. Duplex igitur frigus  
 serpens ferre nō potest. Sic mens m̃a. illam dei transiens  
 fontaneam haruitatē. omne mor ante reiciat sceleris prau  
 tatem. **¶** Unde Cassianus In. li. Collatōm scōrū p̃m. Inceq;  
 em̃ homo i amoris dei dulcedine iocundetur. ab oī p̃nus neces  
 se est macula expietur. **fontinus**. In. Descriptōibus. vniuersi.  
 Cumq; quis ad mortem p̃fectendus duat. Atinus sibi linee  
 ignee de oculis egredi estimatur. Cuius rō ē. s̃lam mortis i  
 tempore. totus humor capitis. ad cordis deflunt regionē.  
 gulat igitur siccitas capitis. ignem multū facit colere. p̃ vi  
 sua organa estimare. ut ostendit theophrastus de parte  
 sensitiua. Sic et nos cū i morte cotidie traductim̃. salte  
 ad huc in amore celestiu accedim̃. **¶** Unde Rabanus In omē  
 En mors adest foribus. utinā adhuc humanus animus.  
 amore staret celestiu inflamatus. Recitat ad capm̃ de  
 haruitate. **Archita**. **Tharēm**. In. lib. De eueb; In. s̃lata. Ince  
 dio grandi facto. rubescat perpendicularit̃ totū celū. Sic in  
 cendio facto. i dei dulcissimo felicitatimoq; amore. mor tota  
 rubescat regio celestis curie. p̃ i estimabili tam gaudio et  
 dulcore. **¶** Unde Dionisi. In. De diuinis s̃lōib; Cap. 28.  
 Cumq; et nos in dei amore accendim̃. mor tota celestis



aurā. rubore erga nos specialis gaudij illustrat. **Amor**. In lib.  
suorū. orneratū. In quocumq; loco. nocturno tpe flāma eru  
perit sup̄ terram. ibi thesaurus latitare dimittit copiosis. &  
vitas ē. Nam ubi multa aurī argentiq; materia fuerit. ibi  
z multa de sulphure efflāmetur. eo q oīa metallorū gene  
ra. ex sulphure generētur: ut ostendit phis. In. 2. q. 2. 2.  
Sic z i quacumq; mente. flāma diuinū amoris ascenderit.  
ibi thesaurus fore vite ppetue innotescit. Vnde Eusebius  
In. Hermone. Semp̄ em ubi amor nūc celestis ē grē. ibi  
z thāmus felicitatis etne. **fontanus** In. Descripcōibus. Vmili.  
Lapis cadens in aquā. quatuor ī ea effectus efficit z reliquit  
Nam spūmā gignit. Atrepitū efficit. Aquam sicut salire fa  
cit. aridūq; describit. Sic mens. Aquas aduēiens amoris  
atq; dilectōis diuine. mox spūmā gignit deuocōis acie. sive  
pitū efficit laudis interne. saltū in fursū facit iubilatio  
nis intīme. aridūq; describit felicitatis etne. E. ubi. sup̄  
Postq̄m igitur in generali descripsimus Amore crisi  
sumo uero psequenti comparabimus ipm fulmini.  
ob effectus plurimos fulminis. Atq; actū z naturas  
cōiunctas. Sup. 3. q. 2. 2. q. 2. 2. Ignis fulminis seu tonitru.  
solo igne extinguitur corporali. Cuius signū ē flām dū corpa  
igne inflāmata fulminis. nulla uirtute extingui possunt. mox  
cum ignis nō materialis addit. igne ille protim suffoc  
tur. Cuius rō tanget infra caplo De Trinitate. Sic ignis  
amoris ppetui. solo amore ī nobis extinguitur corporali.  
Vnde. ysidorus. In De Summo Bono. Amor quidē celestis.  
solo amore extinguitur terrenū. **Constantinus** In. tractat. De  
naturalis liquidorū. Ignis quippe. aulibz ē ueneno naturalis  
inimicu. Cuius signū ē. Nam dū uenemū igni ī missum  
fuerit. repulsum mox inde resilit z recedit. Cuius causā  
causa tanget infra De visione. Sic ignis dei beatitudie sa



[illegible]



**Aristoteles.** In. li.º problemati. Que uehement' sunt dulcia. gustui amara aliquatim' estimantur. Cui' ratio e. Nam quod excellent' dulce fuerit. obstupescit' facit ipsum gustum. ut refert theophrastus In. De parte sensitiua. Cui' ead' signu' e. Nam Balsamu'. qd' quide' scdm' constat. mlt' cunctos liquores dulcissimu' demon-

**P.**

strat'. Amaru' tu p' minima sui dulcedine aliquatim' estimatur. Sic in effabili illa iocunditas amoris ppetu'. p' minima quidem dulcedine sui gaudij. Amara uideant' & dispida aie peccatrix

**Conde.** Crisostom'. sup. math'. Quanto dulci' amor cristi fuerit. tato peccatib' amari' apparebit. **Constantinus.** In. tractatu. De naturis. liquidor'. post abu' amaru'. potius uehement' uis huius qz dulcescit. Cui' signu' e. Nam ut ait Euen'. Ideo eni' salra & aronidaca edimus. ut potu' dulci' degustem'. Sic et post abum amaru' penitentie. potius nobis dulci' amoris atqz caritatis eterne

**R.**

**Conde.** Raymo. sup. apocalyp'. Quanto penitencia amari' peccatis. tanto gustus suauior diuini refrigerij & amoris. Recitat ad cap. De caritate. **Theophilus.** In Breuiloquio. Dicitur. Arcu'. Qui silicem ore tenet du' bibit. potius sibi dulci' apparebit. Cui' ratio tanget' msa: capto De. Criso. Sic qui cristu' in cessant' ore receperit. amoris profecto gaudia plenius degustabit Recitat ad cap. De

Dulcone **Conde.** Anselm'. In Sermone. Qui cristu' digne ore mentis recepit. gaudia illa amoris. que nullo rati. nulloqz ligato exprimere potu'. tam in pnti qm' in futuro eternalic' degustabit. **Iohāncius.** In. li.º De. Regimine. Sacerdotis.

**R.**

pedes in frigidati. Aut frigore mortui. no aque calide. sed frigide imerguntur. Cui' ratio e. Nam sicut calor calidu' sic frigus frigidu' extrahit a natura. ut ostendit Auicena. In. vi.º orationu'. li.º Sic & affectiones aie. qcto quide' mortue. non frigori calori prauae pcepte. s. frigori intigant' amoris atqz caritatis diuine **Conde.** Ambro'. In. li.º p'fatōm. Affectiones itaqz



noctis. prius corrupte desiderijs. frigore reformetur diuini sola  
 cy et amoris. **phimus.** In Speculo. naturali. Flos quide ois nascit  
 sup aquam. et mergitur ante anno forti. Cuius ratio e. Nam vi  
 num. florem penetrat et no aqua. Quobrem flos. penetra  
 te se vno. aliquoties in gignatur. Quodammodo videmus in pano. q  
 du aqua penetrante humectatus fuerit. fundit protinus ipse  
 petit. ut refert Euemus. Sic et mentes humane. no aqum  
 mundane felicitatis et affluentie. sed vno immerguntur amoris  
 atqz caritatis diuine. **Conde.** Aug. In Soliloqis. Galedit  
 ois ille humanus e animus qui potius fuerit mundi huius nam  
 catibus. qm diuine iocunditatibus gaudijs qz inmersus.  
**Postqum igitur amorem diuinu parauimus.** ob uari  
 os fiducias / dulcedinis qz effectus. mit sequentia  
 font est auementissime parandus ut patebit.  
**Auicena.** In lib. De quatuor. Elementis. ois fons exstat dul  
 cor. noctis tpe qm in die. Cuius ratio e. Nam nox fontes  
 effundit. dies uero fontes absorbet aliquoties et in pellit. ut  
 ostendit alexand. In 3. metharoz. In effusione autem  
 sui. fontes sunt dulciores eo qz et reuocores. ut probat  
 Constantinus. Sic reuera nobis fons dulcor e amoris. et noc  
 te tribulatiois. qm in die mundam huius seu candoris. **Conde.**  
**Origenes.** In li. De. Putu. Scia. Magis quide in tristitia  
 qm letitia huius vite. fontes dulcescit amoris atqz caritatis  
 diuine. **ysidorus.** In. historiis naturalib. Serpens fontem inmer  
 sus. ueneni omne perdit. Cuius ratio habita e sup. Sic pec  
 cator fontem inmersus amoris atqz caritatis diuine. ueneni  
 mor a se uocat amaritudinis sempiternae. **Conde.** Aug. De. Ci  
 dei. Qui semel gustauit diuinu melliflumuqz amore. om  
 nem mor a se repellit mundi huius molestiam et dolorem  
**philaretus.** In. tractatu. De. Naturis. morboz fons. mane  
 et ieiune bibitur. ut estus colere seu febrim extinguatur.

S.

T.

U.



Sic et nos amoremem imbibamus celestis gratie. ut etiam i nob  
 exiguatur. incenditurque iehene. **¶** Unde Iero. ad flepocatum  
 Aut em nunc diuino accendaris i amore. Aut pectus accen  
 daris simplici et dolore. **Fons** in. Descriptioibus. vniuersi.  
 Quanto magis fons aliquis exhaurit. tanto fieri dulcor co  
 probat. Cuius ratio e. Nam dum hauritur aqua. fons ipse al  
 quid renouat. in quantum aqua recens succedit ei que ex  
 tracta fuerit. ut asserit constantinus. Sic quanto et nos ma  
 gis diuinum haurimus bibimusque amore. tanto purior ei  
 gustamus solam et dulcor. **¶** Unde. Aug. in Enchiridion.  
 Amoris suauitas non percipit. nisi sepe et frequentius mens i eis  
 degustet. **Alexander** sup. 2. metharom. fons nouus nequaquam  
 oritur. nisi fons aliquis alius i memo desiccat. Sic neque  
 fons nobis diuine oritur caritatis. nisi fons ipse prius de  
 siccatas fuit illate uoluptatis. **¶** Unde Remigius sup. Jo  
 hanem. Desiccatur fons libidinis. ut fons nobis pateat ha  
 ritatis. **Constantinus** in. Tractatu. De Naturis Liquidorum. fons  
 quide ois. i nocte e maior atque diffusior quam in die. Cuius  
 ratio habita e sup. Sic amor diuinus. copiosior e i noc  
 te tribulationis et penitentie. quam in die felicitatis affluen  
 tieque mundane. **¶** Unde Atrabus. sup. ibn. ad lum. Solus  
 quide dolor et tristitia huius uite. dignus e amoris cristi  
 solacio et dulcore. **archita.** Harctinus. in. ho. de. Ceteri  
 bus. in. natura. Resplendere arui pridesque celesti. exsiccatam  
 naturamque ipsi fontes. Cuius ratio tanget m. f. cap. De vi  
 sione beata. Sic resurgente nobis lumine mundane felicitatis  
 et affluencie. exsiccat propterea fons amoris et caritatis  
 diuine. **¶** Unde Cassianus. in. ho. collationum scorum prim. in  
 lumine magis mundani transitorijque candore. fons ipse in  
 nobis diuine extinguit caritatis. **Avicenna.** in. ho. f. f. or  
 neratim. fons amorem fundum habens. i estate lucet iugiter  
 tota nocte. Cuius causa. tacta e sup. Sic et amor amorem  
 atque p. donec inueniens corda hominum. radum ipse sui est



metit lūmis sempiternū. **¶** Vnde fulgenſ. In. li. orthologiam  
 amor quippe diuinus. corda uidens amara & fulgida. fluencia  
 mor. ſup. addit ac refrigeria ſempiterna. **¶** Hinc itaqz ſonā. **¶**

**¶** Poſtq̃m igitur amorem aucti comparauimus ſonā. **¶** Hinc  
 conſequenter comparabimus ipſum rori. ob roris ef  
 fectus plurimos. ob uaria quoqz accidentia & naturas **.d.**

**alterand. Sup. 3. Gregaroz.** Cumqz ros deſcenderit. die illo  
 ſerēitas p̃ſto erit. Cui⁹ rō ē. Nam ex p̃gato aere. ſerēitas co  
 mīſcitur. ut refert amīcōnā. Per deſcentū aut roris. ipſius  
 aeris regio ex p̃gatur. ut oſtendit p̃hā. In. 3. ubi ſup. **¶** Sic &  
 diuin⁹ ros nobis diuin⁹ amoris tranſmittit. ſerēitatis mor.

uite p̃ſeare comitat⁹. **¶** Vnde b̃arno. ſup. actus ap̃loz. Ta  
 lis inquit ordo & gradus n̄re ſalutis credit⁹. ut p̃no quidē  
 m̄t amor celeſtū tribuatur. ut ex hoc ip̄o m̄t nobis p̃e  
 cūa ſequatur. **¶** Comenſator. In. lib. De Impreſſionibus aeris. Qui

Ros quidē p̃ſtingit n̄ſcitur⁹ ip̄m ignem. Cui⁹ ſignū eſt **.b.**  
 Nam qui ueste rore humida indutus fuerit. nullaten⁹ ſibi  
 die illo a tōrno fulmineqz timebit. ut refert fontē. In

De ſcriptōibus. vniūſi. **¶** Sic amor dilectioqz celeſtis. omnem  
 extinguit metū in cendy inſuſuſ. **¶** Vnde Richrduſ de ſcō  
 victore. **¶** Magis quidē qm̄ mare ſanctillā minnā. ip̄e aor  
 penam extinguit atqz miſeriam commiſam. **¶** Algaſel. In. li.

De forma. Speculi. Proprium ē roris & pruinę. ī nocte deſ  
 cende. nō in die. Cui⁹ ratio ē. Nam ut ait algarabi⁹. ma  
 teriam roris. ſol in die exterminat n̄ in nocte. **¶** Sic & **.c.**  
 proprium ē amoris atqz caritatis diuinę. ī nocte nobis  
 deſcende tribulacōis & anguſtie. nō autē ī die affluencie

h̄i uite. **¶** Vnde fortunatus. In. ome. Amor itaqz diuin⁹  
 ſolis datū afflictis m̄tibus. nō autē h̄is. quos oblecta  
 uerit iſte mūdus. **¶** Theophilus. In. Breuiloquio. Diuitari  
 Arati. In uasē rore p̃ſeno. roſa toto āno recens & florida &



seruatur. Cui<sup>9</sup> causa contingitur nisi. capto De. maria. Sic mens  
plena. Dei dulcissimo felicitissimoqz amore. Ab omni aseruat t<sup>u</sup> mu  
ma molestia z dolore. **V**nde Cassiodor<sup>9</sup> In. historia triper  
citi. Pan amorem dei intra se possidet. nullu unquam t<sup>u</sup> etm  
mali mentis corporis qz incurrat. **philaretus**. In. tractat<sup>9</sup>  
**D**. De Crisi. Qui mane biberit ipm rorem. omne in se febris  
estum exterminat seu calore. Sic qm fluencia mte amoris  
diuini gustauerit. omne in se estu mundanoru eternabit<sup>9</sup> suf  
focabit. **V**nde. Augustin<sup>9</sup>. In. li. Soliloquioz Qui amorem  
mte dei biberit in p<sup>re</sup>enti. omne extinguet estu amiscuqz im  
plicat aut tormenti. **Constantin<sup>9</sup>**. In. tractatu. De. Naturis. liqui  
dorū. Ros infusus recent. idz recent<sup>9</sup> facto vulnere. ipm neqz  
sinit sanguinem emanare. Cui<sup>9</sup> ratio ē. Nam roris natura ē  
ob sin frigiditate claudē z strige ipsos poros. atqz uendru  
aditus seu meatus. ut refert Galienus. Sic Amor infusus  
cordi hois. omne refrigit fluxu amiscuqz prauitatis  
**V**nde Hilari<sup>9</sup> sup. mathē. In fluente celesti amore z gratia.  
iā neqzqz homo defluere poterit ad p<sup>er</sup>ā. **fontinus**. In. De  
scriptioibus. vniūsi. Corpora mortua. rore militemis mades  
cunt. Cui<sup>9</sup> ratio ē. Nam quedam gratia sicut. corrupta z pu  
trida. exsiliens de corporibus mortuis. exsiccāt aliquatū ipm  
rorem. ut ostendit phs. In. problecibus. Sic corda hominū  
p<sup>er</sup>to quidē mortua. nequaquā diuino sunt amore z gratia p  
fundenda. **V**nde. Cassian<sup>9</sup>. In. li. collatōm scōrū p<sup>ri</sup>m. Amo  
rem siquidē dei. nō ipē mortuis. s. solus gustat z percipit  
qui z viuus. **phalome**. Almariceti. i. Tota celestis influentia.  
in rore defluit z descendit. Sic tota virtus celestis gratie. so  
lo nobis tribuitur i amore. **V**nde. Ambrosi<sup>9</sup>. In. li. De. vir  
ginitate. omne quod nobis diuini datur numeris. i rore  
nobis defluit celestis gaudiū z amoris. Cetera De. amore.  
requirunt. In capite. De. caritate. Item In. capto De. dilectione.



**A**lpharabius. In li. de Diffenat. Regionum. In alta Capitalium.  
quippe regione diu sumus. sed cum iſſir De Altitudine  
memur. cia<sup>9</sup> morimur. Cui<sup>9</sup> ratio ē. Nam ut ait phs In. pro  
blematis? sicut subtilitas aeris qui in alta ē regione. subtile  
et acutum facit ſcitatem. sic eadem acuta iſſirmitate effiat et  
lagrem. Sic et nos in Altitudine hui<sup>9</sup> ſeculi. ſum quade ſumus  
et proſpери. ſed ois cia<sup>9</sup> atqz p<sup>9</sup>culos<sup>9</sup> moritur. **¶** Unde Iero<sup>9</sup>  
cont. Ioum<sup>9</sup>enū. Quanto atem nūc alia<sup>9</sup> tollim. tanto utqz  
cia<sup>9</sup> atqz timoroli<sup>9</sup> morem. **Cometator.** In. li. de Inp<sup>9</sup>ſiōibus  
Aeris. Alte nubes. igne ſemp<sup>9</sup> fulminis ualidis inflāmant.  
Cui<sup>9</sup> rō ē. Nam alte nubes. frigide exſtant ualde. ut oſtendit  
Alexander ſup. 3<sup>m</sup>. Metharoz. In frigido aut<sup>9</sup> nubibus. ob ſu  
parariū. iſſamatur uehement<sup>9</sup> ipe ignis. ut probat phs  
ubi ſup. Sic et Alciore hui<sup>9</sup> ſeculi. igne ſemp<sup>9</sup> accenduntur  
aruis ſupplicij ſempiterni. **¶** Unde. haimo. ſup. apocalyp.  
Quanto quid Alciore nūc fuerit dignitatis. tanto ipm iſſa  
mabit ignis ſupplicij iſſiſſalis. **¶** Ret<sup>9</sup>at ad capm de honore  
**Neſtorius.** In. li. de Ocean. Circolo. Sux quide in altis nō  
tibus nō liqueſcit. Cui<sup>9</sup> rō ē. Nam altus aer ſubtilis eſt  
ualde. ut oſtendit Themiſt<sup>9</sup>. In. Summa naturalū Encan. Sub  
tilis aut<sup>9</sup> ē frigidus uehement<sup>9</sup>. ut oſtendit Theop<sup>9</sup>ſtaſtus. In  
De parte. Genſiana. Sic nix celeſtis refrigerij. nunqū li  
queſcit in Altitudine h<sup>9</sup> mundi. **¶** Unde. ſilgencia. In. q<sup>9</sup>to. mytho  
logiarū. Nunqū metemū miras celeſtis iſſuencie. Altitudi  
pronciat h<sup>9</sup> uite. **¶** Regre. De Sublimitate. **Cometator.** Aurois.  
Sup. libri. De. plantis. Ar. ſtoalis. Alciore poma arborū. mino  
ra ſemp<sup>9</sup> cecid ſunt. cia<sup>9</sup> quoqz cadunt. Cui<sup>9</sup> rō ē. Nā altos  
ramos. Attingit ſuali<sup>9</sup> calor ſolis. humore in ipis magis ci  
aus qz deſicando. ut refert. phimus. In. Speculo. nat<sup>9</sup>ali. Sic et  
Alciore hōies hui<sup>9</sup> uite. minores et iſſiores ſūt iſſoalis pie  
tatis diuine. ciāus quoqz in yma mortis recidunt ſempiterni  
ne. **¶** Unde Eusebi<sup>9</sup>. In. S<sup>9</sup>monē. Alciore hominū. minores

6.

h.

3.



quidē sunt. quāntū ad celeste premiu. & mortis ac<sup>9</sup> readent i abis  
sum. **plinius**. In Speculo naturali. Alus uolatus amu. pestilen  
ciam adesse & dicit illo ano. Cui<sup>9</sup> ratio ē. Nam ut refert  
ypocras. In Epithymia. Aues quodā naturali m<sup>9</sup> affectu. corrup  
tū sentiant p<sup>9</sup>m<sup>9</sup> h<sup>9</sup>am. Quam quidē corrupcionem. Dū in  
am<sup>9</sup> fuge. in altis regiones aeris se appetit eleuare. Sic  
& Alacundo presens hominū. eternoz sibi ad esse idicat pestile  
ciam tormentoz. **¶** Vnde. haymo. sup. apocalip. p<sup>9</sup>presens itaqz  
Alacundo hoīs. signū atqz p<sup>9</sup>agū ē p<sup>9</sup>ecae miserie & doloris  
**Aristoteles**. In lib<sup>o</sup>. de Regimine. p<sup>9</sup>icipū. ad alexand<sup>9</sup>. Pul  
la maior habitatio. humane magis iuciens g<sup>9</sup>ruensqz salu  
ti. qm̄ n̄ i montibus s; sub mōtibz g<sup>9</sup>morari. Sic nulla  
tūior uita hoīs. qm̄ nō morari i monte mundanū culmine  
scū honoris. s; ad ymā p<sup>9</sup>fugē pēnitentie & doloris. Vnde  
Seneca. In Ep<sup>9</sup>. ad p<sup>9</sup>eronē. Pul cū<sup>9</sup> in hac uita. qm̄ Alacundi  
nem fugere hū<sup>9</sup> seculi. & humilitati ingiter in cluāri  
Solmus **Solmus**. In li<sup>o</sup>. p<sup>9</sup>erū. Serpens. alto gradies capite  
ceteris ē serpenabz uenenosior vniūis. Sic & homo. qnto  
altaz fuerit. tanto uenenosior ceteris. in diuinis oculis  
apparebit. **¶** Vnde. h<sup>9</sup>lari<sup>9</sup> sup. g<sup>9</sup>athe<sup>9</sup>. Quanto mit quis al  
tor. in honore. cāto post s; profundior in dolore. **Elizabetha** In  
Theorica. planecari. Ignis celestis. semp descendit. ignis uero  
noster. semp sursum tendit. Quēadmo<sup>9</sup> mēd<sup>9</sup> in fulmine.  
Cui<sup>9</sup> ignis. nō sursum. sed deorsum semp fertur. ut reci  
tat cōmētator sup. 3<sup>o</sup>. g<sup>9</sup>etharoz. Sic amor celestis. humi  
litate a nobis semp exigit. Amor uō illicitus & mundan<sup>9</sup>  
Alacundiem semp petit. **Archidia**. Thareninus. In li<sup>o</sup>. de E  
uentibz. In natura. g<sup>9</sup>amus eleuare. p<sup>9</sup>oximus expallescent.  
atqz pallorem p<sup>9</sup>trahunt aliqualem. Cui<sup>9</sup> rō ē. Nam dū ma  
nus in altū eleuata fuerit. sago totus qui i mēibz fuit.  
ad imā corpus defluit & defecit. Quo recedēte. man<sup>9</sup>  
aliquatit expallescent. ut ostendit Euen<sup>9</sup>. ubi sup. Sic et



mentes humano. in altitudinem mundam culmina eleuante. pat  
lorem mox strahunt penarum atq; caligis sempiternae  
**¶** Unde Damascen<sup>9</sup>. In h<sup>o</sup> cont<sup>r</sup> Errores Grecoz. In diuina  
arum etenim mox altitudine mundanarū. mens ipa caligie in  
uoluntur tenebrarū. **Comicator**. In libro. de Impressionibus aeris  
Alte quippe nubes. pluviam nō emittit. Cui<sup>9</sup> ratio ē. Nam al  
te nubes. frigide sunt uehement. ut ostendit Alexander  
sup<sup>r</sup> 3<sup>o</sup> Meteoroz. Nubes aut frigide. sunt penitus indige  
te. ut probat phs ubi sup<sup>r</sup>. Quobrem plue Alte nubes mi  
nime quidem possunt. Sic et alti in hui<sup>9</sup> seculi dignitate.  
nūq̄m ymbem emittunt penitentie deo grāte. Unde Dama  
scus. pp. In Sermone. Vir aut nūq̄m penitentiā dignam fa  
ciunt. qui mundi h<sup>i</sup> altitudinem ascendunt. Requirere de Supbia  
**pluvius**. In Speculo. natural. Alta maris litora. dracones in  
habitant ut frequent. atq; monstra belueq; marine. Sic et al  
tos in hoc mundo homines. dracones ac belue inhabitant  
infernatas **¶** Unde. leo. pp. In Sermone. Altitudo siquide  
mundanorū. latibidi ē priapū inferorū. **Centobius**. In lib.  
De. Gero. orbis. In Alta regione aeris. nulla umq̄m reppit  
uita. Circa q̄ aduertendū. q̄ plato. quedam eē aīalia dixit  
in altis regionibus aeris. per que demones intellexit. qui  
adhuc scdm Augustinū De ciuitate dei. creduntur eē i aīe.  
qui et contraria faciūt. ut opmabatur. Origenes. Loquendo  
tamen. de uita corporali. Dicendū plane. q̄ nullū uiuit q̄  
mahiū in supma aeris regione. Sic et i altitudine q̄ nūc  
in hoc mundo q̄ritur. nulla umq̄m uita celestis grē in uē  
tur **¶** Unde. Gratian<sup>9</sup>. In. apptu. iuris. Nulla uita aīe.  
in Alta mundi hui<sup>9</sup> ceruitur. dignitate. **Alzabici<sup>9</sup>** In the  
orica. planetarū. In superiori intersticio aeris. ē sempiter  
nū frigida et sempiterna nebula. Cui<sup>9</sup> declaratio pate  
bit infra. Sic et in altitudine temporanee dignitatis.  
frigus inuenitur ppetuū atq; extinctio caritatis. nebula.

H.

O.

P.



*Altitudo mundani celsitudinis et honoris.*

quoque petite celsitudinem. **¶** Unde Cassianus. In libro. Collationum. scilicet  
patitur. In eo enim qui altius steterit in hoc seculo. Dei magis sit  
focatur dilectio. et in surgit eterna tenebra seu caligo. **Fontem**  
In desertionibus. vniuersi. Quamuisque alta sit nubes aliqua.  
**¶ Q.** tamen a remotis videtur attingere primum terram. In archa  
videlicet orientis. Sic quantumcumque alta nunc sit dignitas  
huius vite. finaliter tamen terram attinget miserie semper  
terne. **¶** Unde. Eusebius. In sermone. Mundana quidem nunc  
altitudo celum videtur attingere. subito tamen yma at-  
get mortis eterne. **Theophilus.** In Breuiloquio. Dicitur ar-  
cium. Ad hoc igitur ut altius saluamus. gemis aliquando in-  
curramus. Sic ut alta ascendamus celestia. nostra sunt terre hu-  
milis genus inclinanda. **¶** Unde. celestinus. pp. In sermone.

**¶** Ut et nos facilius possimus in altitudinem celestium eleuari.  
**¶ R.** Summare necesse est primum nos humiliter inclinari. Huc usque de al-  
titudine mundane glorie hec dicta sufficiant. Cetera de honore.

**A**ristoteles. In libro problematum. Sumus quidem sp. **Capitulum**  
tpe ymbis et pluuie magis tristes. Cuius ratio de Affluen-  
tia est nam tpe pluuie. magis est in uisita emozione. in corporibus  
vniuersis. ut asserit constantinus. Sic et nos tpe mundane fe-  
licitatis et affluencie. maiori semper deat tristari metuat et  
dolore. **¶** Unde. Cassiodorus. Simp. pp. Quanto quis in affluen-  
cia huius seculi prospicitur. tanto necesse est. maiori dolore et  
tristitia allidatur. **¶** Isidorus. In historiis naturalibus. Ex herbarum  
dulcedine et radice. sunt serpentes fingunt strabimque uene-  
num. Sic et peccatores homines. ex dulcedine quidem mundane fe-  
licitatis et affluencie. uenenum sibi strabunt amaritudinis  
sempiternae. **¶** Unde. Crisostomus. sup. Mattheum. Dulcedo inquit  
affluencie temporalis. amaritudinem gignit sempiternae miserie. Re-  
currat. ad capitulum de felicitate. Cetera de Affluencia. Requi-  
rantur. In capitulo de felicitate et de opibus. **philosophus** In pro-  
blematis. In uasis aureis seu argenteis. diffrahine bullire po-



terit ipsa aqua. Cum etiam ratio tanta est super. Sic et in menta  
bus humanis. mundana felicitate et affluentia fulgidis. neque  
bullire potest aqua felicitatis beatitudinisque celestis. **Unde. hugo**  
**De scō v.** Nulla ibi unquam vera felicitas. ubi mundi fuerit  
huius affluentia seu voluptas. **Nestorius. in libo. De oceanis.**  
**Circulo. Tranquillitate multam maris. tempestas et quassatio**  
**valida comitatur.** Cum ratio est. Nam cum tranquillum est mare  
aqua magis multum sibi aerem attrahit et imbibit. ut osten  
dit **philosophus. in 3o. meteororum.** gustus autem aer inclusus in  
visceribus marinis. suscitatur tempestates. ut probat **paulus?**  
**In li. De gressibus. etc.** Sic et multam tranquillitatem pro  
peritatis affluentiaque mundane. tempestas penultimatis assequi  
sempiternae. **Unde. haimo. super. apocalyp.** Nullus alius finis  
mundane felicitatis et affluentiae. quam in quietudo periret et  
tempestas miserie sempiternae. **Aristoteles. in li. problematum.**  
Cumque stamus in lumine. nequaquam videmus quid nam agatur  
in tenebris. Stantes vero in tenebris. cernimus quid in lumine  
accidat aut contingat. Sic et nos stantes in lumine mundane  
affluentiae. non agnoscimus quid nam penultimatis sit in tenebris  
caligine sempiternae. Cum autem ad tenebras mortis devenimus  
mor quid pueri in lumine mundane affluentiae laetuerit aspiciamus  
videmus. **Unde. origenes. in libro. De ritu. sanctarum.** Qui  
nunc bonis omnibus affluit in hoc seculo. nescit quid nam mali la  
teat in futuro. **Constantinus. in tractatu. De statibus. liquidorum**  
**venenum quidem primum gustum dulcescit. et subito post hoc lignum**  
**sendit. atque vehementissime amarescit.** Sic et venenosa afflu  
entia huius seculi. nimirum nunc in primum dulcescit seculo. subito ac  
amarescit eternitatem in futuro. **Unde. gregorius. episcopus. in omni.**  
**Quanto nunc mundi huius affluentia dulcior fuerit. tanto tunc**  
**amarior apparebit.** **gregorius. iohannes. in 1. paritica. Cunctas circa**  
**aquas sitae. multos morbos corporibus inferunt et legres.** Cum  
ratio est. Nam cunctas huiusmodi per aquarum exaltationem valida

T

U

X



seu uaporem. morbum sibi trahunt aliqualem. ut ostendit phi-  
 lareus in tractatu. de naturis morborum. Sic et mentes hu-  
 mane. circa aquas mundane affluentiae. morbum sibi trahunt  
 defectuositatis eterne. **U**nde Richardus. de sc. v. Ex affue-  
 cia quippe. quam nunc humana fragilitas expectat. morbum sibi  
 nunc aet. tandemque mortem accipiet penititias eterne.

**P.** Consequentur igitur postquam in generali descriptimus mundi huius affluentiam. Nunc autem ipsam. candori seu luminis duximus comparandam. ut patet Aristoteles in lib. problemati. In lumine distribuntur sensus. tactus uidelicet et auditus. Cuius signum est. Nam cæci. certi tangunt et audiunt quæ uidentes. ut ostendit Theophrastus in de palice sensitiua. Sic et mentes humane. in lumine quiddam mundane affluentie. ad uarietates distribuntur et numeratas habent. Unde. fil.

gentia? In. 2.<sup>o</sup> synthologiaru. lib.<sup>o</sup> Gens illa se ipm perdit. que  
affluenciam nudanoru expectat & inquit. Ecce de venisti  
& de futuro. **polimus.** In. Speculo. nedarah. Lum candele extin-  
tum. fetorem effiat uehemetem. Qui etia feror feci i ma-  
terno utero permixto & occidit. ut refert Gohinus. Sic et  
postqm extincta fuerit affluencia huius uice. fetorem suscitabit  
proximus miserie sempiternae. **Unde.** Haimo. sup apocalypsim.  
Postqm igit extincta i nobis per morte fuerit affluencia  
nudanor. feror mox & pena affluent in fnoze. **Themiſti<sup>9</sup>** In

Summa. natūm enatū. Lūmen quidem omne. alio supueniente  
lūme aliquatū obumbrat. Quēsdā<sup>m</sup> refert fontem. qd  
lūm lunaris corpis. lūme obumbrat solis. Sic lūm et  
lectis amoris et gracie. lūme obumbrat falsitatis affluen-  
cieqz mudane. **V**nde Dionisi<sup>9</sup>. In. li. de. di. nobis. lūm  
quidē celestū gaudiū. sala exiguū affluenae mudanoz  
**Aristo.** In. lib. de Dimensioibus. terre. Lūm exsiccāt natū  
ratū corpa omnia. Sic lūm mudane affluenae. omne  
humorē extinguit celestis grē. Dulcedisqz diuine. **V**nde



Remigius sup. Iohānem. Omne in nobis humore celestis gracie  
ipsa delictat affluencia hui<sup>9</sup> vite. **Galen<sup>9</sup>** in Anthodictario. ve  
teri. Infirmis quidem lagidos q<sup>3</sup> corporibus. nil periculosius ē q<sup>3</sup>  
lumen. Cui<sup>9</sup> signū ē. Nam ypocritas in Epithymia. fenestras  
dandi precipit sup lagidos et infirmos. Cui<sup>9</sup> eadē causa cāge  
tur infra. Caplo De lumine. Sic nil periculosius lagivena. Atē  
q<sup>3</sup> ipsa sit affluencia h<sup>9</sup> vite. **Conde.** Orosius sup. Cane  
lencas quidem et corporis patit nāstragū. ipsa affluencia  
mūdānorū. **Themisti<sup>9</sup>** in. Summa. naturāliū. Enon. Lum. ex  
sui natura. sursum leuat pulveres. Athomas q<sup>3</sup> solares. Cuius  
signū ē. Nam athom solares nō ascendunt in tenebrā s<sup>3</sup> i luce.  
ut ostendit altitatu<sup>9</sup>. Cui<sup>9</sup> rācō ē. Nam tenebra quidē ē hu  
mida. lum vō siccū. ut probat auctoris. sup. 6<sup>m</sup>. de natū. pul  
vis aut nō ascendit in humido s<sup>3</sup> in siccō. ut ait Euen<sup>9</sup>. Sic et  
mūdāna affluencia. corda in supbia collit erigitq<sup>3</sup> huma  
na. **Conde** Galenus. in. Tugurino. dampnabilis ille atq<sup>3</sup>  
execrabilis affluencia hui<sup>9</sup> vite. oī plena mī ē superbia  
et timore. eandē quoq<sup>3</sup> etno supplicio et horrore. huc usq<sup>3</sup> lū  
postq<sup>3</sup> **igitur.** affluencia huius vite parauimus  
lumin. mī sequenter ipm atque. ob multas rā  
tiones et effectus decreuimus comparare. **Aristoteles.** in. lib<sup>9</sup>. problemati. Aqua stans longo tpe i q<sup>3</sup>ete  
mor corrūpit et putrescit. Cui<sup>9</sup> rācō ē. Nam aqua stans mī  
se exaltaciones retinet varias et diuersas. que sūt putrescē  
tione pūcipm effectū. ut assent constātm. **Sic** affluencia  
tūpū. moram longā faciens que stans i mente hominis.  
putrescētionē eandē faciet simplicij in frātio. **Conde** Hugo  
de. scō. victore. Velud innēcti in stercore. human<sup>9</sup> putres  
cit anim<sup>9</sup>. mūdū hui<sup>9</sup> affluencia fortunatus. Recitatur ad  
Capitū. De opulētia. **Iohānicus.** in. Summa. De Regimie  
Santacis. Qui in hore dūi circa aquas ambulat. morbi  
paratit capitis. ex humoribus uaporibusq<sup>3</sup> aquarū. Sic

B.

C.

D.



qui circa affluencia graditur huius seculi. morbum sibi inde con-  
trahit simpliciter sempiternum. **Vnde Aug. in. li. octoginta arum**  
questionum. Egrotare necesse hominem tam mente quam corpore.  
qui felicitati inuitat atque affluentiae huius vite. **Comēta. in. lib.**

**E.** De. Inpitionib. aeris. Nichil est quod adeo inflamet fulmen in  
nubibus. sicut aqua. Cum etiam signum est. Nam corpora igne  
accensa fulmina. ab aqua extinguere non possunt. Et uehementi  
mandesant. Extingunt aut ipsa solummodo non ignis. Et huius  
ratio tangetur infra. capitulo De vnditate. Sic nihil tantum  
inflamat ignem vnditate naturaeque diuine. quam felicitas  
et affluentia huius vite. **Vnde. Haymo. sup. apocalyp. Affluencia**  
quidem huius vite. totum obumbrat hominem. totam obumbrat ratio-  
nem. Et offendit omnium creatorem. **Amēna. in. li. super. vi.**  
neratū. Numquam in tantum aqua desicari poterit. quam semper ferre  
maneat sine litu. Reliquie enim aquarum. litu faciunt. ut ostē-  
dit Theophrastus. Sic nequaquam desicet affluentia huius seculi.

**F.** Absque feculentia simpliciter sempiternum. **Vnde. Tundatus. in. lib.**  
penelacōm. Vanam quia arreptam iam mundi huius affluen-  
ciam postea abicit. Absque mortis eterne miseria et dolore  
**Caladmo. Sup. thymen. plato. Principium atque causa mortis**  
in cunctis animalibus. creditur esse aqua. Invenit id quod sit alienus  
Fris elementa hec. terra indelz. ignis et aer vitam regunt  
aqua aut preponderans corruptionem facit in corporibus vniu-  
lis. Sic et tota causa mortis putat. ipsa creditur affluentia  
huius vite. **Vnde. Eusebius. in. sermone. Affluencia denique huius**

**G.** vite. carnem velocius accidit humanam. mentemque precipitat  
in seculum. et in seculum. **Centobius. in. li. De giro orbis. In**  
temperies liquidem vniuersas. tam in mari quam in aere seu in  
terra. effiat ipsa aqua. Sic cuncta iam mala totius orbis. ipsa  
effiat affluentia atque felicitas ipsa. **Vnde. hugo de scō**  
victore. Nil iam mali cogitari poterit in toto orbe terrarum  
quod ex verum pronematur affluentia mundana. **phimio.**



Postquam igitur mundanam affluentiam speravimus  
ipsi aque. nunc consequenter ignem eam decessum? co  
parare. ob uaria ipsius ignis accidentia seu natura  
plinius In. Speculo. naturali. Ignis copiosius lucet. noctis tpe  
qm̄ in die. Cuius ratio ē. Nam lux diurna. ignem dissipat  
et dissipat. tenebrae uero lucem adiungit fortis et strigit  
ut recitat amena. Sic ignis mundane paupie. magis lucet.  
Sic ignis mundane affluentiae. magis lucet in nocte igno  
rantiae. qm̄ in die ueritatis et scie. **¶** Unde Ihsidorus. In. de  
Gn. bono. Quanto densior mentis tenebrae. tanto lucidior  
credit felicitas affluentia qz mundana. **Archita. Tharētū?**  
In. li. de Euentib? In. Natura. Ignis per aquam nequaquam  
extinguitur. Absqz strepitui et fridore. Sic et nequaquam fini  
tur mundi huius affluentia. Absqz strepitui et ciuitate eterna.  
**¶** Unde. Sidonius. In. Epistolari. Nullus existat finis aliis  
mundane felicitatis et affluentiae. qm̄ gemitus et singultus  
miseric sempiternae. **Theophilus** In. Areologo. Diuisari. arcu  
Grandes suscitant morbos capitis. qui statu oris sui sedule  
accendit et exagitat ipm̄ igne. Sic et ille morbu sibi susci  
tat mortis perpetue. qui statu oris sedule. affluentiam  
a deo dari audiuo impetrare. **¶** Unde Iero? In. Ep. ad pau  
sam. et Iustochm. **¶** Qu. **¶** Quoniam ille sicut et efficit apem.  
qui a deo implorat felicitate affluentiaqz mundana. **Altera.**  
**Comētor.** sup. 2. posterior. Vbi ignis fuerit copiosus. ibi  
naturaliter ē et finis. **¶** Finis etenim igne demonstram  
quodammodo causam et effectum. Sic ubiqz ignis arserit  
affluentiae quēlis. ibi et necessario finis uarie sollicitudis  
et laboris. **¶** Unde tullius In. Tusculanis q. 1. lib. 2.  
Affluencia siquidē ipso hōies. ad uarias ualde incitat solli  
citudines et labores. **Comētor.** In. lib. de Inp. 1. lib. 2. seris.  
Ignis immittitur res maxime. a natura. Cuius ratio tacta



est. sup. Sic sume aduſatur ac tinnitatur mundane felicitati et  
affluencie. ipse ros amoris et caritatis diuine ¶ Unde. Je  
romim<sup>9</sup>. In. Epist<sup>o</sup>. ad paulam. et Eustochim<sup>9</sup>. Nil tantu abhor  
ret diuina caritas. qm mundane affluencie diuicias om  
uerſas. **Alter ad.** Sup. 3<sup>m</sup>. orationu. Ignis fulm<sup>9</sup> seu tom  
en. solo igne exaguntur corpora. Cui<sup>9</sup> signu e Nam corpa  
igne accensu fulminis. Ab aqua exagm no possunt. s. nati  
dus in ardeſant. ut refert Theonist<sup>9</sup>. In. Summa nat<sup>9</sup>aliu  
Enau. Exagunt aut igne h<sup>o</sup>modi. ignis nr materialis. et  
superſusio regnis. ut refert Euen<sup>9</sup>. Cui<sup>9</sup> ead ro caſa est  
supra. Sic ignis celestis amoris et gracie. igne exaguntur  
affluencie h<sup>o</sup> vite ¶ Unde. Iſidorus. In De Su. Bono. Igne  
accensu affluencie. timentib<sup>9</sup> humanis. mox ignis diuine exi  
guant caritatis. Hucusq<sup>9</sup> igni mundana affluen<sup>9</sup> p<sup>9</sup>ſent.

**¶** Postq<sup>9</sup> igne mundi huius affluencia comparauim<sup>9</sup>  
ip<sup>9</sup> igni. sunt consequent<sup>9</sup> et ip<sup>9</sup> speculo eam de  
circum<sup>9</sup> comparari. ab uariis speculi qualitates  
philatret<sup>9</sup>. In. Tractatu. De Iudicia Febriu. Summe notum lag  
vena corpori. speculu aliquid intueri. Cui<sup>9</sup> ratio e. Nam corpa  
lucida et transparen<sup>9</sup>. mirante enocat sensum. que tunc de  
bellare debet ipm morbu. Sic sume nocet lagna aie.  
candor. felicitatis affluencieq<sup>9</sup> mundane ¶ Unde Damascen<sup>9</sup>  
In. libro. cont<sup>9</sup> Errores Grecoz. Candor quide affluencie  
temporalis. mortis est et pene presagium infernalis.

**¶** **Algarzel.** In. Tractatu. De forma. Speculi. Duo reluce ſci  
unt ipſum speculu. p<sup>9</sup>ix uidelicet atq<sup>9</sup> plumbum. Quib<sup>9</sup> abo  
litio et deterſio. Speculu no relucet. Sic duo ſut que nobis  
mundi hui<sup>9</sup> affluencia lucere faciunt et plate. uidelicet.  
p<sup>9</sup>ix uidelicet caritas. et plumbum ualde g<sup>9</sup>uitas ¶ Unde  
Cassianus. In. lib<sup>9</sup>. collationu. Scoru. pr<sup>9</sup>m. Caritas quippe aie.  
atq<sup>9</sup> g<sup>9</sup>uitas carnis nr. lucidam nobis fingunt et tinnu  
ſant affluencia hui<sup>9</sup> vite **Theophilus.** In. Breuiloquio. Dul



scilicet artem. **S**peculū soli oppositū in fernore. ignem ex se dicit  
 et emittit. Cuius signū ē. Nam dum aliquot abutibile opponit  
 protinus in flammatur. Sic speculū mundane felicitatis et af-  
 fluencie. ignem accendit effugitque rebene. **U**nde Tunda-  
 lus. In. li. 9. Revelatōm. Affluencia quippe h<sup>9</sup> seculi. mentes  
 mō extinguit in p<sup>r</sup>esenti. Et ignem accendit et in supplicij  
 et tormenti. **Salmus.** In. lib. 9. rr. Dues in alto volantes aere.  
 minime mouent alas. Sic et mentes humane. in altū sa-  
 te mundane affluencie et honoris. iam nō mouent alas  
 boni op<sup>is</sup> et virtutis. **U**nde Remigius. sup. iohānem.  
 Qui ad honorem mundane felicitatis et affluencie p<sup>r</sup>uect<sup>9</sup>  
 fuerit. iam ab oī plane bono op<sup>e</sup> quiescit. **philoso.** In  
 problematib<sup>9</sup>. Nix ab alto nemens. effugiem habet atq<sup>3</sup> a  
 liquidem disposicōnem stelle. Cui<sup>9</sup> rāto tanget infra. ca.  
 De. Vite. Sic candida affluencia h<sup>9</sup> m<sup>9</sup> mte. extecate q<sup>u</sup>e  
 aie. stellam illudendo fictam p<sup>r</sup>monstrat bātudis sempit<sup>r</sup>e  
**Theophilus.** In. Breuiloquio diuisarū arāū. Speculū oppositū  
 basilico. ipm mox perurit et occidit. Cui<sup>9</sup> causa tanget infra  
 caplo. De Demone. Sic mundana quidem affluencia. oculo me-  
 tis opposita. ipm morte perurit sempit<sup>r</sup>na. **U**nde. Haymo  
 sup. apocalyp. Sepe etenim ex desiderio et aspectu mundane affluen-  
 cie. mors ipā p<sup>r</sup>seq<sup>3</sup> penitentie ethe. **Algarzel.** In. tractatu. De  
 forma. Speculi. Speculo fons imerso ad solis radū seu cardo-  
 rem. estimatur mox quedam stella sup<sup>r</sup>gredi ipm solē. Cui<sup>9</sup>  
 Cui<sup>9</sup> etiā declaracō plenius habebit infra. caplo. De visione  
 Sic mundana affluencia imersa aie. potiore representat stellā  
 felicitatis temporanee. qm ipm solem bātudis sempit<sup>r</sup>ne  
**U**nde Rabanus. In. omē. mundana quide affluencia. dila-  
 orem estimat iocunditacōe p<sup>r</sup>aneant. qm uoluptatem atq<sup>3</sup>  
 bātudinem sempit<sup>r</sup>nam. **ysidorus.** In. historiis. natalib<sup>9</sup>. Verimus  
 quidem oīs. cum sup<sup>r</sup> speculū posita fuerit. naturalit<sup>r</sup> quies-  
 cit. Cui<sup>9</sup> rāto tangetur infra caplo De. vilitate Sic homo

.D.

.P.

.Q.



*. Affluencia vite temporalis.*

mūdana tūmū affluencie. Ab omni mor. bono. Quiescat opere.  
et uirtute. **¶** Unde. filgencius. In. quarto. or. thologiaz. libro

quondam quippe affluencia erga hoīem. ipm ad unamquāqz  
reclardat bon. opis atqonem. **¶** **Fontem?** In. Desampetibz. vni  
li. Petro speculum latet ipa pux z plubum. que z ipsum

faciunt speculū relictare. **¶** Sic sub candore mūdane felicitatis  
z affluencie. latet quidem pux penditans eterne. **¶** Unde. le  
romm. In. lib. 1. spūtorū. Quenadmodū em agavis sub herba.

sic sub mūdane affluencia. mēdia. latet sempiterna **¶** **plm?**  
In. Speculo. natural. Venatores astuti. aialibus que p mma  
sui uelocitate capere nō possunt. specula in deserto obici

unt. ut frequē. **¶** Sic uenatores aīarū pīpīes mēdiales.  
speculū nobis mūdane affluencie exponentes. capiunt  
z ureciunt nras mētes. **¶** Unde. Gregori. In. pastoribz.

**¶** Summe quide demoni infidie. ex affluencia pronemunt  
hūite. **¶** **Solimus.** In. li. 1. r. cumqz peluis igitur. z aspectui  
aīalis oppōit. ipm aīal protinus excecatur. Cui rāto

e. Nam tūc exatāones corrupte ex lapide calaminari p  
siliunt. que nīsum nīm oburunt z obaudut. **¶** Sic z dū  
humāis mētibz mūdā hūi affluencie oppōit radus. mor

totus nīr manet annū. **¶** horreda quiddā caligie excecatur  
**¶** **Ratoles.** In. lib. De. Regimine pīpīū ad alex. **¶** **Cap. 7. De**  
**Andrū.** Nulla tuor habitacō. humane magis **¶** **Apostolis.**

ueniens sātati. qm sub montibz amorari. Cui rāto tātā  
ē supra. **¶** Sic nulla tuor uita aditōm humane. qm sub  
aplorū amorari auxilio z amore. **¶** Unde. **¶** **Uido.** In. Gmo.

**¶** Nil ualms homin ualeo estimare. qm m scō dei apostolis  
tota uirtute confide z sperare. **¶** Retrātur ad capm de qā  
**¶** **plm.** In. Speculo. natural. Qu mīgules mīgās qz mīf



Eusebius. In Hermone. Qui sanctos dei apostolos. deuotionem in  
 tinxerit mentis sue. ei<sup>9</sup> p<sup>er</sup>nuant<sup>ur</sup> mor<sup>is</sup> i<sup>n</sup> melius molestie  
 unius. **Alzabia**<sup>9</sup> In. Perspectua. Saa. Solari seu lundri illucen  
 te corpore. stelle a nostris aspectibus se abscondunt. **Q**uo  
 mundana nobis illucente consolacōe et gratia. aplōrū no  
 bis subtrahitur. consolatio amittit. **U**nde Fortunatus. In  
 omē. Qui consolacōnem humanā accipit. consolacōe aplōrū  
 tabilem se ostendit. **Th. copul**<sup>9</sup> In Breuiloquio. Diuinitas a<sup>u</sup>tem  
 Ex caussione ferri aut lapidis ad lapidem. elicitur quidā  
 ignis. Sic ex cōcaussione mentis nr̄e ad aplōs. utn orōnis  
 sedule. elicitur protinus ip̄e ignis pietatis clemētięq<sup>ue</sup> diu  
 ne. **U**nde Isidorus. In appatu. iuris. Ex eo enī q<sup>uo</sup>d mēs  
 nostra ad sanctos pulsatur apostolos. euentus multos ac  
 cipit propositos. successus quoq<sup>ue</sup> fortunatos. **Aristoteles**. In lib.  
 problematu. Aperto ostio loci aliau<sup>9</sup> calefacti. aer mor<sup>is</sup> in  
 greditur p<sup>er</sup> fenestras. Sic ostio aperto mentis nr̄e. aer  
 subintrat protinus. apostolice consolacōis gratiaq<sup>ue</sup> i<sup>n</sup> mē  
 se. **U**nde Iero<sup>9</sup>. In. Epistola. Ad paulā et Eustochiū. Aperi  
 tur p<sup>ri</sup>mu ora nr̄a in laude. et tūc scōs decet apostolos  
 in nocte **pytholome**<sup>9</sup>. Almariti. pmo. **H**idēra quidē amittit  
 in suo ortu sup<sup>er</sup> terram. maiorem facit influētiā et vir  
 tutem. Sic sancti apostoli. in ortu quidē sic sollempnitatis.  
 sue semp<sup>er</sup> maiore facit influētiā pietatis. **U**nde Cassi  
 odorius. In. historis. triperita. Quis enī semp<sup>er</sup> parati  
 sint ad adiudicium apostoli. maxie tamē nos i<sup>n</sup> eorū sol  
 lempnitatib<sup>us</sup> accidit adiudici. **Comētiator**. In. lib. De. iupistio  
 nubus. aeris. Nubes sup<sup>er</sup> regionem sicam et calidā. protin<sup>9</sup>  
 amittit. Cui<sup>9</sup> ratio ē sicut in sicco aere. ueloci<sup>9</sup> desinat<sup>ur</sup>  
 nubes. ut ostendit phō. in. 2. gēth<sup>9</sup>. Sic ut nubes uo  
 lantes sancti apostoli. sup<sup>er</sup> siccos et i<sup>n</sup>gratos volūt hōies  
 pietatis desicari. **U**nde. Haymo. sup<sup>er</sup>. act<sup>9</sup> aplōrū. **Q**uā quidē  
 apli. omne amittūt uirtutē et grā. sup<sup>er</sup> inētem cupidā et auidā



**Aristes.** In lib. De Dimensionibus terre. Vena medullarum etiam  
in bibitur virtus celi. Cuius signum est. Nam per medullas venas  
quoque terram. quedam pertransit ingloriositas seu medulla. me-  
dicante qua. quidque in Aeneas deorsum venerit. totum patet  
ut ostendit. Ptolomeus. Almagest. 1. Sic medicamentis sanctis dei  
**N.** apostolis. tota nobis tribuuntur gratia consolatioque celestis  
hymno. sup. Apocalyp. Quidque nobis dominum munera parit.  
hoc totum per manus apostolorum perficitur et patet. **Cometa** In lib. 20  
De Insuperioribus. aeris. In vehementi frigore. nubes immixtas  
exstant terre. Cuius ratio tangitur infra. cap. 10. De visione  
Sic intenso frigore mundane tribulationis et angustie. vi-  
cinos nobis sancti sunt apostoli. sua gratia et virtute  
fulgentes. In 2. Ethnologiarum. lib. Quanto maior nunc nobis  
tribulatio ingruerit. tantum sudorem mori apostolorum consolatio  
in minuetur. **philosophus.** In problematibus. Accedentes. ad parie-  
tes. quantumque densa sit tenebra. nos quoque minime videamus.  
ipsos tamen aliquantulum percipimus. Cuius ratio est. Nam per arcem  
parietes est tranquillitas. ut asserit theophrastus. Sic et nos ac-  
cedentes ad sanctos apostolos. etiam licet minime adueremus.  
ipsorum tamen auxilium percipimus et sentimus. **Vnde.** fortunatus  
In omni. Omnis enim lateat in medium hominem. nunquam tamen  
erga nos sancti apostoli. suum deserunt gratiam et virtutem.  
**theophilus** In Breuiologio. De insarum. arborum. Tunc quidem pluvie  
non statim guttas suas arbores a se tollant. sed primum quod  
humore sibi imbibunt. et tunc stillas utilitas ex se fundunt  
**B.** Sic sancti quidem apostoli. que nostre tribulationis et angustie. non  
statim fundunt stillas sue pietatis et clementie. sed primum quod  
virtute multa sumunt a deo. quod et ministrant postmodum  
toto mundo. **Vnde.** hugo. de reo. v. Non statim nobis sancti  
apostoli obtemperant. sed ideo in medium differunt et expec-  
tant. ut uberiora munera ex se fundant. **Auicenna.** In lib.  
De quatuor. Diluvio. Vnde siquidem solitudines atque utilitas  
sibi plerumque attrahunt et plueret faciant ipsas nubes.



Cuius signū est. Nam ut ait Fontinus. Diluvium ut frequent  
 accidit aut in vallibus. aut in solitudinibus nemorosis.  
 Sic humiles aīe et afflute. sanctos faciunt apostolos pluer  
 rorem distillationis atqz consolationis interne. **¶** Unde. Eusebius  
 in. Hermone. Celi quidē ipsi sancti uocantur apostoli. eo qd rore  
 celestis refrigerij. culibz tribuant in digenti. **¶** Recuratur. ad ca  
 De. Sanctis. **pluvius.** In. Speculo. natur. al. Anteqm pestilētia  
 athan? adueniat regionis. multus illuc fit annū atqz volum  
 consolatus. Cui? rō ē. Nam i regione pestilente. multa p  
 gunt cadavera. Que mirū multures sentit a lōgiquis  
 qm obrem celi adueniunt regionē. Sic et in ciuitatibz nris neces  
 sitatibus. scōrū aplōrū mor erga nos fit sedulius querat?  
**¶** Unde. Rabanus. In. Omē. In omni quippe molestia et do  
 lore. sancti quidē apostoli nequaquam possunt desiste. qn uigi  
 lent sup gregem ecclē sue sancte. **Solimus.** In. lib. Peru.  
 Ad sibilum serpentis igne lesi. serpentes quēunt unū  
 Cui? signū ē. Nam prudentes in cantatores. serpentē unū  
 collam posuim. applicant ipsi igni. Cui? sibilū a lōge mel  
 ligentes serpentes alij. illuc audent prouchi et moueri.  
 Sic qd sibilantem orationē afflictōrū hominū. mor cūcti  
 adueniunt sancti apostoli in occursum. **¶** Unde. Aluio. In  
 Hermone. Quanto maior tribulacō fuerit hominū. tanto  
 maioris erga eum sancti sunt apostoli pietatis. **Auicēna.**  
 In. li. De. Quatuor. Diluvij. Montes. quidē de interioribus  
 terre meatibus fugiunt attrahūtqz humore. quē in specie  
 nebulę sursum mittūt ad nubibz regionē. Sic et a nobis  
 deuotionē nostrā fugiunt sancti apostoli. quā et pro nob  
 diuine offerūt pietati. **¶** Unde. Haymo. sup. actus aposto.  
 Sancti quidē apostoli deuotionē a nobis erigunt et amo  
 rem. nō sibi sed deo dantes gloriā et honore. **Comētā.** In  
 lib. De. Inp. thombus. Aeris. Cumqz montes fumigationē  
 seu nebulam sursum mittunt. in p. tinenti pluuia sequuntur.  
 Sic et dū sancti apli orationē suā pro nobis deo offe

C.

D.

E.



runt. inde mox nobis ymbrem consolacōis deferunt & deducūt

**E**xinde. Origenes. in. lib. De. Situ. Ecclē. Intercedētib⁹ pro nobis ad deum sanctis apostolis. mox nobis patebit abiss⁹

diuine gracie & amoris. **fontem.** in. Descriptōibus. vniuersi

flacores nubes. inferioribus nubibus humiditate sterūt plu

uie. atq; rorio. **F**ic sancti apostoli nobis quidem offerunt

humilibus & depressis. ymbm̄ consolacōis refrigerij qz ce

lestis **E**xinde Ambro. in. lib. prefatōm. Genip siquidē sācti

parati sunt apostoli. grāam sui sup̄ excellētiis merita. hu

milb⁹ & afflictis quib⁹libz inperari. **oracōe.** iohānes. in. 1.ª

practica. Filices igitur. & in lacte caprimo mox extincti.

passicam auferunt atq; ethicam passionē. In quādam uidelz

lat huiemodi lubic aut potatur. **F**ic sancti apostoli. igne nr̄

amoris desiderij qz suauis. ac in lacte nr̄ deuocōis tincti

morbī auferūt molestiā vniū. **E**xinde. Fortunat⁹. in. ome.ª

Sancti itaq; apostoli. fontē nimerfi deuocōis dñe. omnem

plane auferunt molestiam hui⁹ mte. **P**ut apantur omb⁹

**P**ostq̄m igitur in generali. sanctos descriptim⁹ aposto

los. nūc consequē ipsos ombre dñm⁹ apparā

dos. ob ipsius ombre qualitates plurimas & effus

**Aristoteles.** In libro. problemati. Stantibus nobis in umbra.

Impudior efficitur visus nr̄. Cui⁹ signū ē. Nam ut limpidi⁹

videam⁹. manū aculo obducim⁹. seu manū oculos aliquatid

obumbram⁹. ut refert theophrastus. in. De parte sensitiua.

**F**ic & stantibus affidentib⁹ qz nobis firmit⁹ in sanctis apes

tolis. i nobis mox visus limpidior celestis luminis seu

candoris **E**xinde Damascen⁹. in. lib. cont⁹ errores Grecoz

In doctrina p̄mū scōrum aplōrum mentis figatur oculus

ut clarus eluceat ip̄e candor radus qz diuin⁹ **plinius** in

Speculo. naturali. Serpentes quidē omnes naturālit⁹ hor

rent ymbm̄. ita tunc Solmo in. lib. 1.ª. qui ait Serpētes

ad feruorē solis. circuitu describūt. Ad ymbm̄ aut se abscō



Dime. Sic illos celi principes. cuncti serpentes horrent et  
 fugiunt infernales. **¶** Unde. Haymo. sup. actus. Apostolorum.  
 Celestes inquit principes. cuncti fugiunt principes infer-  
 nales. **Cometator.** in. lib. De impressionibus aeris. In incēperie  
 aurarū. uelociter nubū trunt ombre. Cuius ratio ē Nam ī  
 in temperie aure. uentus impellens ipsas nubes. uelociter  
 uehitur et mouetur. ut recitat Alexander. Sic in ī temperie  
 et inolestia mundanorū. sancti mox uelociter currūt apli ī  
 oceanum. **¶** Unde Rabanus. in. amē. Sancti siquidē apostoli  
 in tribulatione hominis. uelocissime sūt auxilij et uentis. **phs.**  
 in. problema. Umbra in frigidat quidē hoīem extrinsecus  
 s; ipm intrinsecus uehementi ualidiusq; inflāmat. Cuius  
 ratio ē. Nam calor qui ē extrinsecus. adueniente umbrā  
 frigore. ad interiora pellitur et fugatur. ut ostendit philo-  
 retus. in. tractatu. De natura. yorboz. Sic sancti aposto-  
 li. refrigerant hoīem extrinsecus cont estum mundane tribu-  
 lationis et angustie. inflāmant uero intrinsecus ignea dei  
 atq; melliflua karitate. **¶** Unde Eusebius. in. Sermonē. **¶** Et  
 minū apostoli sua uirtute refrigerant estuantē in hoc mū-  
 do hoīem. diuinū quoq; in nobis causant desiderū et amo-  
 rem. **phimus.** in. Speculo. naturali. Umbra rorem seruat  
 sup graminā et pruinā. Sic sancti etenim apli sua īqm  
 īmensa gratia et uirtute. rorem nobis pseruiant celestis  
 amoris et gratie. ac pruinā refrigeratōis etne. **¶** Unde. h.  
 Iarius. sup. mathē. Sanctoz apolorum hoc apm creditur.  
 rorem nobis impetrare celestis gratie. collatumq; ī nob  
 irrefragabiliter et uigiter pseruare. **Theophilus.** in. Breuilo-  
 quo. Diuitari. arā. Umbra destruit unū in uicis un-  
 uersis. Sic sancti apostoli omne unū uoluptatis et luxurie.  
 sua ī nobis desiccant efficacis et uirtute. **¶** Unde. Ambrosius.  
 in. lib. De uirginitate. Confupedū mēdū estuātib; ad sacros  
 aplos arbitror. q; armis nrē extingunt totus ardor. **Auerrois.**



**Comēti.** Sup. 3. De. celo. & mundo. Umbra quedam eternaliter  
 nat in luna. apparens seculis. zomoqz & dymach<sup>9</sup> amūis iux  
 ta id q ptholome<sup>9</sup>. almagest. 7. Luna in se effigiem respētat  
 faciemqz humanā. Unde aut cōsecratur calis macula i cor  
 pore lunari. tangetur infra. Caplo De. visione. Sic facti  
 apostoli. assistūt aspectū saluatoris. Auxiliū implorantes ho  
 minibus uniuersis. **¶** Unde Belet. 10. In. Sermonē. Hāt ac  
 sancti apostoli in aspectū domini. oculibz in pēitēs ueniām  
 pētor. **Constantin.** In. tractatu. De. ypocondriaca. passione. Per  
 umbram quippe montis sanantur pituita. per umbrū uero.  
 alii muri. sanantur uterici uniuersi. Quorū ratio tangetur  
 infra. caplo. De. uerbo. Sic & persanctos dei apostolos. qui  
 mōtes dicuntur & muri. morbi i nobis sanantur tam mētis  
 qm corporis uniuersi. **¶** Unde. Eusebi<sup>9</sup>. In. Sermonē. Null<sup>9</sup>  
 umqz defectus tēn mentis qm corporis poterit inueniri.  
 qui nō uirtute possit sanctorū apōlorū pēitū reforma  
 ri. **Aristoteles.** In. libro. problematu. Maior ē umb<sup>a</sup> i nocte  
 a luna. qm i die a sole. Sic maior a sanctis apōlis desinit  
 uirtus salutis & gracie. i nocte tribulaciōis & pēitēcie. qz  
 i die felicitatis affluēcieqz mūdane. **¶** Unde. Haymo. sup  
 actus. apōlz. Apostolici siquidē pōlato. magis debetur hōi  
 tribulato. qm cunctisqz i mūdū h<sup>9</sup> felicitatibus prosperato  
 Postqz igitur sanctos apostolos. **¶** parauim<sup>9</sup> umb<sup>9</sup>  
 uisō psequēd<sup>9</sup> ipōs comparabim<sup>9</sup> nubibus. eo  
 quod ipsos homines obumbrēt & ptegāt uelut nubes  
**Comēti.** In. libro. De. in pssionibus. aeris. Vehement<sup>9</sup> i al  
 tum elenatis & longatis nubibus. pluuia nō n descendit  
 Am<sup>9</sup> signū ē. Nam ut ait pluuio. nubes alte minū. nūqz  
 pluit. Et hū<sup>9</sup> effectus. multiplex a philosophis racō assign  
 natur. Aut enī amphites in edictis. qz nubes humiditate  
 suā recipiant a terra. Alte qz nubes ob nimiam sui lon  
 gationē. a terra humectari nō possunt. **Auēpice.** uero ait. qz



nubes aere. ob frigiditatem illius regionis. nequaquam possunt di-  
geri in humorem. **Allexad.** autē sup. 3<sup>o</sup> gecharoz. dicit ymbem  
descende. nō solum q̄ aqua pluvialis gravis sit. sed quia et  
ymbem sibi naturahc attrahit & mibit. ob elongationem &  
miniam. trahē nō potest ipsa terra. Constat itaqz q̄ elon-  
gatis uehement nubilus est. Sic elongatis a nob̄ scis  
uiris dei apostolis. iam non pluit ymber celestis gracie  
& amoris. **Vnde.** Augustin<sup>9</sup>. In lib<sup>o</sup> Retractatōnū. Sanctis  
quidem alienatio apostolis a memoria mentis nr̄e. id nul-  
la nobis uirtus consolatiois interue. **Themistius.** In. Summa.  
naturahc enon. In uespere & i mane. maxie rubent nubes.  
Cui<sup>9</sup> ratio tangetur infra caplo. De uisione. Sic sancti apti  
in uespere quide mortis humane. ac i mane natiuitatis nr̄e  
magis rubent & lucent sua gratia & uirtute. **Vnde** ori-  
genes. In. li<sup>o</sup> De Ritu. Eccliarū. Sancti itaqz apostoli i mor-  
te nos suscipiunt. & in natiuitate ad lucem i columnes  
suis meritis nos produunt. **Comētor.** In. lib<sup>o</sup> De. sup̄mōibus  
aeris. Nubes soli opposite. mox ingrescunt. Cui<sup>9</sup> ratio ē. Nam  
nubes soli opposite. magis sunt digeste parit & exuste. &  
ideo per cōsequens magis ingre. ut probat p̄b̄s. In 2<sup>o</sup> ge-  
charozū. Sic & sancti apti. deo se pro nobis exponit. & sic  
ei<sup>9</sup> aspectibus. pro nr̄a efficienda salute humilē abingrat  
**Vnde.** baymo sup̄ actus. aplōrū. Sancti itaqz apti. diuina  
pro nobis aspectibus p̄ntantur. ubi & nostram salutem  
incessant<sup>9</sup> oī que quantur. **Alfarabi<sup>9</sup>.** In. lib<sup>o</sup> De. diffēcia. Re-  
gionū. Quātuūqz sint alte quē nubes. etiam tam ipm  
apparent<sup>9</sup> attingunt in circulo orizontis. Cui<sup>9</sup> etiā ratio  
tanget infra caplo De uisione. Sic uniuersū sancti apostoli  
quātuūqz sunt exaltati ad tronū celestis glorie. terrā tñ  
semp attingunt suo auxilio & uirtute. **Vnde.** Beda  
In. Omē. Cōmū em̄ nūc sancti apti etno perfructur. gau-  
dio. tamen semp presentes existunt suo nummīe toti

P.

R.

R.



mundo **Archidiaconus** Tharenimus. In lib. De Eventib. In. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851. 852. 853. 854. 855. 856. 857. 858. 859. 860. 861. 862. 863. 864. 865. 866. 867. 868. 869. 870. 871. 872. 873. 874. 875. 876. 877. 878. 879. 880. 881. 882. 883. 884. 885. 886. 887. 888. 889. 890. 891. 892. 893. 894. 895. 896. 897. 898. 899. 900. 901. 902. 903. 904. 905. 906. 907. 908. 909. 910. 911. 912. 913. 914. 915. 916. 917. 918. 919. 920. 921. 922. 923. 924. 925. 926. 927. 928. 929. 930. 931. 932. 933. 934. 935. 936. 937. 938. 939. 940. 941. 942. 943. 944. 945. 946. 947. 948. 949. 950. 951. 952. 953. 954. 955. 956. 957. 958. 959. 960. 961. 962. 963. 964. 965. 966. 967. 968. 969. 970. 971. 972. 973. 974. 975. 976. 977. 978. 979. 980. 981. 982. 983. 984. 985. 986. 987. 988. 989. 990. 991. 992. 993. 994. 995. 996. 997. 998. 999. 1000.



Nubes quidem. nō solum aquas & vapores. sed & ranas at  
 finit atq; imperas & serpentes. Cui<sup>9</sup> signū est. Nam tes  
 tu uisito seu feruore. rane. pisces. de nubibus retidunt  
 & serpentes. Qui nequaquā deorsum pluerent. nisi eos.  
 nubes aliqua attraxisset. Sic sancti uiri dei apli. nō solum  
 iustos hoīes. s; & cūctos recipiunt & attrahunt peccatores  
**¶** Unde. Celestin<sup>9</sup>. p. in. Sermonē. Sancti quidem apostoli.  
 tam malis quā bonis. nequaquā dulce<sup>3</sup> sue denegat pietatis  
 Huc usq; sancti apostoli umbre nō imerito & nubib<sup>9</sup> operantur  
 Postqū igitur sanctos dei Apostolos. nubibus opa  
 ramus nūc consequens. ipsos monachis operam<sup>9</sup>  
 ob multas atq; varias montium qualitates  
**¶** Iohānicus. In. lib<sup>o</sup>. De Regimine Sanctitatis. Qui altos uolunt  
 montes ascende. finit debent fetentem narib<sup>9</sup> applicare.  
 Et hui<sup>9</sup> ratio ē. Nam subtilitas sepe montem aeris. uolūt  
 perimūt ascendentes. finis aut cum sit fetidus. subtilitate  
 aeris temperat iam pūctam. ut assit cōstantem. Sic qui  
 sanctos aplos tuocant & in plorant. finit necesse ē humi  
 liatis sue mentis oculo antepōnere **¶** Unde. Hilarius  
 In. Sermonē. Vis igitur sanctorū aploīum tuenire grām.  
 mentem assime turbidam. atq; humilem et aruam.  
**¶** Alabat<sup>9</sup> In. theoricā. planecarū. Qui diuinari uolunt  
 in astris. sup aliquibus effectibus euenabus q; futuris.  
 altos necesse ē montes adeant & ascendant. Cui<sup>9</sup> ratio  
 ē. Nam ut ait ptolomeus. Almagesti. 3<sup>o</sup>. Subtilitas motem  
 aeris. subtilitatem atq; hūmiditatem efficit rōis. Sic q  
 diuinari ac pzonide uolunt sue pietateq; saluti. necesse  
 hos ē ascensu mentis. sanctis aplois applicari **¶** Unde. hugo  
 de. s. uict<sup>o</sup>. Qui exemplari uolunt celestis. scōs ascen  
 dant aplos mente feruida & deuota. Regre. De G. cō.  
**¶** Autēna. In. libzo. suoru. gmeratū. Anru in ualle gra  
 uis. in mōtibz uero leuiss signanter & notabiliter

.X.

.P.

.Z.



no.

**A.**

**B.**

**C.**

inueniuntur. Cuius ratio tangetur infra. caplo De Virtute. Cuius  
 etiam signum est. Nam ut refert. fontinus. In Descriptioib⁹  
 Amnisi. Conquesti quiddam sunt mercatorum. aurum q̄ deferre  
 bene. i. una regionum leuius. i. alia aut graui⁹ appere  
 Sed ⁊ testante. Nestorio. In lib⁹ De Oceanum Circulo. In qui  
 busdam insulis. mercatoribus aurum ē suu. i. aqua p̄it⁹  
 tūsmutatur. ⁊ ⁊ ostendit Galien⁹ De Camphora. que i  
 nichilū redigit ad fetoris p̄sentiam African⁹. Unde. Alfarā  
 bins. In lib⁹ De Diffēcia Regionū narrat lapides i una  
 regione leuiores. i. alia ēē aliquatū grauiōres. Et idō  
 nō mirū. si aurū i ualle grāuis. i. mōre nero leuius vi  
 deatur. cum tamen h⁹ effectus nō pateat. expigenas q̄q̄  
 doceat eundem. Sic cor humanū. q̄ i ualle p̄ncis miserie  
 ad cuncta bona graue cernitur. scis mox oblātū aphē. mira  
 biliter leuiatur. Unde. Haymo. sup. actus. ap̄lorū. Cor q̄c  
 mū. q̄ carnis mūt mole opp̄itum fuerit. scōrū ap̄lorū  
 exemplo ⁊ doctrīa. agere app̄ebit. **Ar. dicitur** Tharētius. In li⁹  
 De. Euenab⁹. In. Natura. Qui i mōre moritur. rubet uolū.  
 in uallibus aut mortuus. ualle patet. Cui⁹ rō tangetur  
 infra. caplo. De. uolūate. Sic qm i timore scōrū ap̄lorū  
 mortuus fuerit. rubore eē gaudiū effulgebit. In ualle  
 aut mundane fidencie mortuus. etia ē caligie ingre  
 p̄thendū. Unde. Ciro⁹. In li⁹ De. Progenis scī pauli.  
 o qm lecta mors hoīs app̄ebit. qui mūt sub scōrū ap̄lorū  
 umbratō hūc discedit. **plinius.** In. Speculo. naturā. In alio  
 monte odores aq̄ a longinqua percipimus regione. Cui⁹  
 signū ē. Nam ut refert. Schinus. In lib⁹. Peruū. uolū. Al  
 cos montes transuolat. ubiq̄ caduēra iūit ⁊ explorat  
 Cui⁹ etiā rāco tanget infra caplo De. uolūate. Sic sancto  
 stances i nri apostolis. odorem m̄tus mox percipimus  
 illius bassime regionis. **V. Cassiodor⁹** In. histo. triptica.



Sancti immo apostoli. doctrinis suis uariis. odorem nobis pa-  
 runt felicitatis beatitudinis qz celestis. **Centob?** In lib. De. Coten-  
 abus. orbis. Qui defert intru aque. de uallibus uerhis mo-  
 tes. Antequam sup monte nemet. tota aqua sumitur et  
 exalat. Cuius ratio e. Nam subtilitas seu siccitas montis  
 in aeris. clambit aquam hanc. Sic qui uocati sua sanctis  
 apostolis deuote obtulerit. mox totu eius desideriu diu-  
 nis aspectibus exalabit. **Conde Gregori.** In pastoralibus.  
 Qui mentem sanctis aplis offert spontaneam et deuotam.  
 mox totus absorbetur in tra aplicam custodiam sui tutela  
 postq igitur sanctos apostolos parauimus monti-  
 bus. nunc assequunt ipsi lunc. ipos duximus cop-  
 rare. ob lunares qualitates atqz acta et effectus.  
**Cometa?** In lib. De. Impitiomb? aeris. pallidus circulus lu-  
 nam ambiens. ymbrem mox efficit et inducit. Cuius ratio  
 est. Nam pallos lunaris regionis. aerem ualde inducit hu-  
 medatui. ut refert. Anierrois. Humectato aut aere. pluuia ac-  
 cidit et attingit. ut ait phs. in. 3. o. ceth. In. id qz ait the-  
 mistus. In Summa. natalu eueni. pallidus lunc circulus.  
 i estate pluuiam. i hieme uero nunc affert. Sic diu-  
 mense tristis scos aplos ambiendo amplectit. ymber mox  
 celestis gre comitat. **Conde Iero.** In. Episto. ad paula et eu-  
 stochiu. Omni quide tota mentis deuocione amplectendi  
 sunt apostoli. quibus mediantibus. ymber nobis puenit  
 refrigerii sempiterni. **Aristoteles.** In. lib. problematu. Lu-  
 na quidem suo splendore. frigus semp efficit et inducit.  
 Cuius signu e. Nam mrx no liquefit a lumine lune. si-  
 cut a lumine ipsius solis. Sic sancti apli sic mirantur et  
 dio. refrigeriu semp conferunt toti mundo. **Conde Beda.**  
 In. Ome. Omne quide estum mundane tribulacis et an-  
 gustie. sci Apli suo temperant refrigerio et uirtute **thos.**

D.

L.

F.



**Thom.** In Summa. Contra. Genales. Luna cogit demones. Nec  
mirū quidem. Refert em̄ phā. In. vi. adalū libo. q. canis  
galli fugat fācāsmata unūsa. Et hoc ipm̄ cēstatur beatus  
Gregorius. In. 902. sup. Job. sup. Illud Gallus succitatus lūis  
et aries stans. quis resistet eis. In. id q. ait Damascenus.  
**G.** In. lib. cont. Errores Grecoz. habz aut dominū sup demo  
nes ipā luna m̄gis qm̄ p̄cis exenteratus. ut legitur In  
thobias. Cū? ead signū ē. Nam cū fuit ī maiori suo vigore  
ipā luna. demones mox ī obsessis corpibus aliquatū co  
quiescunt. ut ostendit Boetius. In. tit. suo De trinitate.  
In. qui īgrōmātie ī sūt p̄stignis. obseruare eos ap  
portet necessario ipm̄ lunā. ut ostendit Behmus. In. libo  
De. Inuentōne. Et p̄missio q̄ sufficiens quidem patz. quā  
luna sua uirtute dominū habz sup demones. Sic sancti  
Apostoli potestates sup cūctos p̄ncipes infernales. **Vnde**  
hilarius. sup. orationē. Apostolorū inquit hoc apm̄ ē sac  
torū. ligare quidem et cogere cūctos p̄ncipes inferoz  
**Quibz** ~ sup. 3. De. celo. et gūto. Luna semp quādam  
ex se hinc mūdo faciem reprēsentat effigiemqz humanā  
ut ne et macula ipsius lune dicitur. Quid aut sit h̄modi  
facies. aut unde cāstetur. tangetur ī frā. caplo. De  
uisione. Sic et ī ip̄is sanctis aplis. semp nobis p̄sentat  
facies pietatis. **Vnde**. Origenes. In. lib. De. Rit. Ecce  
siam. Inprimēdi sūt cū sancti Apostoli qm̄ acutus cor  
dibus mentibusqz humanis. eo q. semp uisū nobis sue  
exhibeant pietatis. **plinius**. In. Speculo. naturā. In. ple  
nilūno. demones ab obsessis corpibus quiescunt. Cū? rō  
tacta ē supza. Sic ī apostolice uirtutis p̄titudine. demo  
nes prohibētur a sua quālibz actione. **Vnde**. Iudithus.  
In. lib. Reuelacōm. Vidi sumos celi p̄ncipes. demonū  
prohibere quālibz actione. **Allazabur**. In. theorica. plane



tarū. Et āno. quo eclipsata fuerit ipsa luna. et hienerūt eade  
 muri. edificia. atqz tures. Cui<sup>9</sup> ratio ē. Nam tunc ānus hu  
 midus comitatur. ut ostendit cōmentator. In. 2.<sup>o</sup> gētharoz  
 post āmū aut humidū ruit muri. ut ostendit theophilus  
 In. Brenilognio dūisatū. Arcū. Sic dum sancti apostoli  
 a mentis nostre memoria eclipsantur. ruine mor<sup>9</sup> et cas<sup>9</sup>  
 mortis p̄tue comitatur. **Conde.** Bocano. In. Epistola.  
 ad. Regnam virgēm. Cumqz sancti apostoli a mentis  
 nostre subtrahūtur memoria. subtrahit<sup>9</sup> et mor nobis  
 q̄r<sup>9</sup> unūsa. **Cōstān.** In. lib.<sup>o</sup> de. Melancolia. Qm̄ dū aliq  
 mēti i humano latet corpe. nequaquā desistit p̄tingere  
 ip̄a luna. donec totū egerat et expellat. Sic qm̄ dū la  
 tuerit culpa in hōie. nequaquā cessant sancti nos apostoli  
 amonere et p̄tinge. don<sup>9</sup> totū studuerim<sup>9</sup> abolere. **Conde**  
 Remigius. In. Sermonē. Qm̄ dū aliq p̄culū immet  
 hinc uite. neq̄m desistit sc̄apostoli. etiam in sompnis  
 dūm dormiunt amonē. **Alexand<sup>r</sup>** Sup. 3.<sup>o</sup> gētharoz. Cūqz  
 mare reperit iundare. luna mor ip̄m absorbet et ieta  
 bit ad abissum. Testante. p̄lmo In. Speculo naturali  
 dūm ait. Luna terminū p̄mōt mari. Causat enī ut  
 ait philosoph<sup>9</sup> thyrum et refluxū maris equoris uni  
 versum. Sic et dūm iundauerit tribulacō mūdanoz.  
 mor ip̄m totam sancti apostoli pellunt et proiciunt  
 in abissum. **Conde.** Haymo. Sup. Actus. Ap̄lorū. Cumqz  
 m iundauerit tribulacō molestia qz mūdana. mor sancti  
 ap̄ti mala nr̄a i nichilum redigūt unūsa. **fontan<sup>9</sup>**. In  
 Descripcōibz. vniūsi. Luna. habz dominū sup. ar̄s. Sic  
 sancti apostoli potestatem habent sup in sulcus et mo  
 lestias. que in hoc mūdo accidunt vniūsas. **Conde.** Ra  
 bannus. In. Omē. Conuulit aut deus ip̄is sanctis ap̄s  
 talis. potestatem super cūctas molestias hui<sup>9</sup> orbis.

.k.

.j.

.m.



postquam igitur sanctos apostolos **apulum** lune. lunariq;  
corpore. nunc sequens eos fulminem aut soli. debe  
divinus comparari. ob solis accidentia seu naturas

**cometator.** In libro. De. ipsiombus aeris. fulmen factum luete  
sole. minus ferit. Cum ratio est. Nam lumen solis virtutem  
ignis distrahit circumquaq; sic lucente nobis apostolorum  
gratia. minus ferit undata sententiaq; divina **unde.**

**Grado.** In. Sermones. Cumq; apulorum vor interuenio. diuina  
inex iracundia minus ferit **plinius.** In. Speculo naturali.

**Sol** ludit naturalis super aquas. Sic sancti apti. suis  
querunt delectatio. dum mundi delectant h<sup>o</sup> molestias un  
uersas **unde.** Origenes. In. libro. De. Ritu. Eccliarum.

**Speciale** gaudium nascit sanctis aptis. ex eo qd cura ge  
runt debita in gregis. **fontem?** In. Descriptioib; mundi.

**Sol** in suo ortu. uentum frigus qd p<sup>o</sup>mittit. In. xta id qd ap  
pho. In. problematib; dum p<sup>o</sup>to fuerit solis ortus. intensi  
us surgit frigus. Cum ead<sup>o</sup> re tanget infra. caplo De

Veritate. Sic et in ortu apostolice gratie. uentus p<sup>o</sup>mit  
tatur **solatome** interue **unde.** Haymo. sup. act<sup>o</sup> aploz

In ortu quide et sollempnitate sua sancti apti. specialem  
faciunt gratiam consolatiois munus qd diuini. **Alzabici?**

In. theorica. planetarum. **Sol** in die lucet terre in nocte  
uero ipsi celo. Quod patet. Nam cuncta sidera noctis que

solari lumine plustrantur. Sic sancti apti. in die quide p<sup>o</sup>  
sentis uite. mundo lucent sua i mensa gratia et uirtute.

In nocte aut mortis. celu pro nobis plustrant Alesti  
me trinitatis **unde.** crisost<sup>o</sup>. In. li. De. progarum. seu

patuli. **Quid** diu uiuim; sancti in cessant apuli nos defen  
dunt. du morimur lucidissimos se nobis offunt et osto  
dunt. **plinius.** In. Speculo. naturali. Cumq; sol orit. gra

dis mox in orientatibus parabus fragor et strepitus



generatur. Intra id q̄ ait. ducebron. in libro. fontis vite. Clari  
 dunt hy qui in orientabilibus sunt partibus. et subit trā  
 fugiunt. ob strepitus illos grandes qui ibidem accidunt  
 et cōtingunt. Cui⁹ etiam ratio tangetur in f. a. caplo  
 De verbo. Sic et dnm festinatio aliqua sanctorū aplōrū  
 oritur. mer mē nos laudis atqz iubilatiōis strepitus  
 audiat. **Vnde origenes. in libro. De Ritū. Scīarū.**  
**sollemnitatē quippe sanctorū aplōrū ecclē orientem.**  
**per laudis insupiamis strepitū et fragorem. hucusqz et**  
**Postq̄m igitur sanctos apostolos sparauim⁹ sol.**  
**mit consequent⁹ et ip̄s debent ambus comparari.**  
**ob qualitates varias ipsarū am̄ seu naturas.**

**Solm⁹. in libro. Perū. Cūqz anes a terra se elongant et**  
**in altū nolitant. aut in summitibus arborū indignant.**  
**pestilencia illo āno grandis tam pecorū qm̄ hominū. ne**  
**ces qz et strages nūde comitant. Cui⁹ ratio ē. Nam**  
**anes naturā quodam instinctu vīnere pestilenciā**  
**pre cognoscūt. et ideo ac si fugiant. in altū se extolte**  
**Sic dnm sancti apli. ob mentis nr̄e in gratitudinē a**  
**nobis elongant. pestilencie mer et strages ac com**  
**tantur. Vnde. haimo. sup. apocalyp. Dum fugati. a no**  
**bis fuerit sancti dei apostoli. mer timor in grūt pe**  
**riuli atqz naufragij sempiterni. phm⁹. in Speculo. nātali**  
**Totus potus. quem anes sumūt. in plūmas pētus cū**  
**mutatur. Cui⁹ signū ē. Nam scdm phm. in. vi. aialm**  
**In cetera aialia potum sumētis. anes neqz vesica atqz**  
**pūnt neqz vngunt. Sic totus potus nr̄e deuociōis**  
**quem sancti a nobis sumūt apostoli. mutat in alas. q̄**  
**pro nobis ad aures transeūt per uolantqz diuinas. Vnde**  
**Didonius. Orōnes quidem ip̄e. Ale dici possunt.**  
**ambus nostrā uocē diuina amib⁹ innotescūt. ysidor⁹.**

M.

p.

R.

S.



**ysidorus.** In historiis naturalibus. Tuncque anes claudunt oculos.  
inferiorem mox palpebram sursum collunt. cetera autem animalia  
superiorem palpebram deorsum quidem mittunt. Cuius etiam ro-  
tangetur infra. capitulo De visione. Sic et sancti apostoli. Omnes  
oculos quidem suos clauserunt per martiria. nos qui sumus  
ut eorum palpebra. sursum leuauerunt ad gaudia sempiterna  
**Conde.** hymno. super actus apostolorum. per mortem namque  
suam sancti apostoli. nos dignos aptosque fecerunt felici-  
tati beatitudinisque celestis. **Solimus** In libro. Peru. Anes quidem  
regales seu grandes. antequam in altum uolent. primum et  
sistant. Currunt enim ante uolatum anes ille. Sic sancti apostoli  
antequam uolarent ad superna gaudia. currebant per mun-  
di huius discrimina uersa. **Conde.** crisostomus In libro. De pro-  
gressu sancti pauli. Opportuit demum sanctos apostolos. pro  
maiori accipienda gloria. antequam uolarent in celum.  
primum per uolare et percurrere totum mundum. **philosophus.** In  
vi. animalium. libro. Delectabile quidem est amictis ambus. uolare  
contra uentum. Cuius etiam signum est. Nam ipsum hoc est  
cursum amictis. ut de terra sursum auolantes. ueruant  
se contra uentum. quemadmodum refert plato. Sic et de-  
lectabile est sanctis apostolis. pugnare seu uolare contra uen-  
tum nostre molestie et doloris. **palemon.** In libro. De signis  
flammarum. Tunc ymbros et pluuie. magis accenduntur in  
transsecus ipse anes. cetera autem animalia in frigidum po-  
tangetur infra. capitulo De ueritate. Sic sancti apostoli.  
in hora nostre tribulationis et angustie. zelo erga nos  
accenduntur ualidius et amore. **ysidorus.** In historiis  
animalium. Anes in suo uolatu strahunt ad se pedes. Omnes  
autem ad terram nemine mox extendunt. Sic sancti apostoli  
dum ad celestes sursum peruolant regiones. strahunt  
ad se pedes. id est sibi subditos et sequaces. Huc usque  
sancti apostoli ambus preparantur quamadmodum supra



**A**ristoteles. In lib. problematu. Quid sub aqua ap- **cap. de**  
tis steterit oculis. vnoquem quendam insum **Btudo**  
mirabilemque videbit. Cuius signum e. Nam ut ait theophrastus  
In De parte sensuina. Apud sub aqua stulis. amicta q sunt.  
miridia estmant. Cuius causa e densitas medij. ut asserit  
Comentator. Sic ei qui aquis tribulatiois uarie imersus  
steterit. vno eandem eterne btudinis apparebit. **¶** Vnde  
Augustinus. In Episto. ad volutiam. Quid mte imersus  
fuerit tribulatioibus huius mte. imergeatur et ipse alien  
tis btudinis sempiternae. **fontinus.** In Descriptioibus vniuersi.  
Et quidem intra solem impidiuis videamus. nimbibus vi  
sum nostrum aliquatit obumbram. **¶** Sic ut et nos btudi  
nem videamus impidiuis celestium premiorum. maui nos  
obumbrari necesse e bonorum operum et virtutu. **¶**  
Vnde. Dionysius. In De celesti. Ierarchia. Nequaquam prima  
sumetur eterne btudinis. nisi vni faciat manus boni  
opis et virtutis. **Alexand.** Sup. 2. metharoru. Aque calide  
non flunt nisi sup terram sulphuream. calidam et ama  
ram. Circa q aduertendum. q ut refert plinius. In Spe  
culo naturali. Reperite sunt quedam aque. calide ue  
hement. Cuius caloris causa est. terra sulphurea. qua  
preterflunt aque ille. hec aut aque. balnea sacra sunt  
a philosophis nuntupata. **¶** Sic et nequaquam fluent fontes  
eterne btudinis. nisi sup amaritudinem penitentie et  
doloris. **¶** Vnde. Remigius. sup. g. r. ar. Inundant aut  
marie ipsa flumina fontis uite. i mentis nre amaritu  
dine et dolore. Requie de felicitate. **archus.** Tharen  
tinus. In lib. De Euentibus. In Natura. Aspicientes intra  
solem. mox sternutatio patur. oculus lacrimatur. et visus  
nr aliquatit obceatur. Nam ut ait phs. In 2. de. aia.  
Excellens sensibile. alidit aliquatit ip sensu. et obstupece fa

2.

3.

4.



at quodāmodo ipm̄ sensum. Sic ī uicendo lumen beatitudinis  
eterne. stermitatōnem oportet facē penitencie. lacrimam  
p̄nitēcie amare. excedat quoz quāntū ad radm̄ felici  
tatis affluentie qz mundane. **¶** Vnde. Augustin⁹. In Enche  
iridion. Tria necessario ad accipiendā etnā requiruntur gaudi  
dia. lacrima quidem penitencie. austeritas hui⁹ uite. z uelud  
qmo cecus foret. bona h⁹ mudi oīa abnegare. Huc usqz.  
**¶** Postq̄m igitur celestem beatitudinem p̄parauim⁹ hūm  
ilic consequentē etiam fulminis dnȳm̄is debē con  
parari. ob uarios fulminis effus. accēdētia z nātās

**Comēta** <sup>o2</sup> In lib. De Inp̄sitiōib⁹ aeris. fulmen accendit re  
cia sub aqua. extra aquas uero minime. Cui⁹ signū ē.  
Nam ut refert fontm⁹. piscatores tpe totūm reatā ex  
trahunt aquas. Conburent nāqz ut aiunt. Cui⁹ etiā  
nō tangeatur infra. Caplō De v̄ndicta. Sic beatitudo celestis  
patrie. mentes accendit ī aquis tribulatiōis z molestie.  
nequaqm̄ autē in arido felicitatis affluentieqz mun  
dane. **¶** Vnde. Cassian⁹ In lib. collatōm̄. scōrū p̄m̄. Be  
atitudo inq̄m̄ felicitas qz celestis. in p̄ho radicat⁹ aquis  
penitencie z doloris. **Alexand⁹** Sup. 3.⁹. Metharorū. Ful  
men quidem semp fertur deorsum. minime uero sur  
sum. Cui⁹ causā tangeatur infra. Caplō De visione.

Sic beatitudo celestis. semp fertur in deorsum humili  
tatis. nō autē in sursum superbie z tumoris. **¶** Vnde. Ful  
genci⁹. In q̄rto. Gn̄thologiarū. lib. Beatitudo quidē etnā.  
humilitatem respicit. celsitudinem nō omnē abicit z  
tempit **archus** Tharentm⁹. In lib. De Euētiab⁹. In Nātā  
Lignem quippe fulminis. solus extinguit z suffocat m̄  
ignis. Cui⁹ ratio habita ē sup̄. Sic z ipm̄ extinguit  
beatitudinem celestis glorie. ignis n̄c p̄nitatis stupicqz



mundane. **¶** Unde hugo. De scō. victore. Nil tantū in nob  
extinguit sententiam eterne beatitudinis. sicut ignis pzan  
alliatqz amoris *Theophilus*. In. Breuiloquio. Dm̄staz. Ar  
cūm. Extincto fulmine. totūm protinus comitat.  
Tūc qz aduertendū. quia unus ē idem ē actus. totūm  
ūm atqz fulmen. illud tamen uidetur pns. istud audit  
posterius. eo qz istud sit obiectum visus. Illud aut obiec  
tum sit auditus. Et visus utiqz nobilior ē auditus. ut  
ostendit p̄s. In. 1. 9. 2. 9. *¶* Sic extincta ī nobis etna bē  
tudine. totūm mox sequitur formidō sempiternae.  
**¶** Unde. cassiodorus. sup. p̄s. Extincto quippe ī nobis  
etne beatitudinis atqz felicitatis gaudio. horrenda mox  
insurgit mortis etne teneb<sup>a</sup> z caligo. *philosophus*. In. 2.  
9. 2. 9. *¶* Fulmen accendit embrionem seu fetum in  
materno utero. matrem fornicatus nullatenus attinge  
do. Sic beatitudo celestis. fetum accendit ipsius mentis. nō  
autē attingit uirantē extrinsecus mē carnis. **¶** Unde. Je  
romm. In. Episto. ad Nepocianū. Dat aut. se sentiri eter  
na felicitas mentis intus. minime aut cōis gustu.  
**¶** Fontinus. In. Descriptōibus. vniū. Fulm̄ liquefacit nim  
mos in bursa. extra uero minime. Cui rō tanget mē  
caplo. De voto. Sic beatitudo p̄etue uoluptatis. in bursa  
nos accendit solummodo sanctitatis. nō aut foras ī libi  
tu uisitatis. **¶** Unde. Haymo. sup. actus. apz. Nostre autem  
sole dulcescit beatitudo p̄etua sanctitatis. mundane aut ē  
horrida atqz amarissima uenietati. Huc usqz eterna bē  
tudo z felicitas igni fulminis z uementissime p̄atur.  
**¶** Ceterus. In. lib. De cōcentibus orbis. Intra domū. in qua  
lumen aliq fuerit. nequaquā in gredit ipm̄ fulm̄. Sic  
beatitudo celestis. nō in gredit mētem hōis. ī qua lux  
felicitatis mundane fuerit seu candoris *Theremianus*.

. E.

. F.

. G.



Postquam igitur eternam beatitudinem preparauimus fili-  
mm. nunc consequens lumen comparatur. ob uari-  
etatem effectum qui in ipso fore lumine demonstrat

**H.** **Themistius** In. Summa. naturalium. Enchir. Lumen quidem omne.  
altero superuiente lumine aliquantulum obumbratur. Cuius ratio  
est. Nam sicut ignis ignem dispergit. sic lux lucem disgre-  
gat. Dirimit et distendit. ut ostendit. Amicebron. In libro  
fontis uite. Cuius etiam signum est. Nam stelle lucente lu-  
nari lumine noctis tempore minus lucent. ut refert  
Euennus. Item luna in diurno lumine peius nihil luceo  
ut recitat Theophrastus. Item ignis in lumine solis minus  
luet et est albus. in tenebra uero rubens demonstratur  
ut ait. Fontinus. Sic lumen beatitudinis pietate. superuiente  
quidem lumine mundicie affluentie. in sua mox obumbratur  
resplendentia et candore. **Vnde** Dionysius. In. De Di-  
uino Nominibus. Obtenebratur inquit lumen celestis amem-  
tatis et glorie. Vnde hoc lumine et splendore **plinius** In spe-  
culo. naturalium. Lumen candele extinctum. fetorem efficit  
uehementem. Quia etiam fetor fecum in materno utero  
perurit et occidit. Sic lumen etne beatitudinis in nostris  
ob culpam extinctum mentibus. fetorem mox et corrup-  
tionem efficit prout cruciatus **Vnde**. Damascenus. In  
libro. contra. Errores. Grecorum. Exincto in nobis beatitu-  
dinis eterne lumine. Accendatur protinus fetor corrup-  
tionis et hinc. **Aristoteles**. In. libro. De. Dimensionibus terre.  
Lumen naturaliter desiccatur humore et aquositate omne  
in corporibus inuisis. testante. Amicebron. In. lib. fontis uite  
Qui ait tria omne exsiccant exterminantque humore  
Lux calor atque uentus. Sic beatitudo celestis glorie.  
omne in nobis desiccatur humore tribulationis molestieque in



Dane **C**onde ysidorus. In De Summo. Bono. Beatitude inquam  
 felicitasq; celestis. omnem in nobis desiccatur lacrimam  
 cuiusq; molestie aut doloris. **Aristoteles** In lib. problemu  
 In lumine extrahuntur foras de interioribus suis pccatis  
 tibus & cancrumis cuncti sensus. Tunc etiam signum e' sta  
 ut ait Euclides. lumine oblitione. tenebra vero memoriam  
 confert. Oblivio namq; distractio foras sensibus accidit  
 Intractis vero sensibus. memoria multa redit. ut ait  
 Theophrastus. In De parte Sensitiva. Sic in lumine felia  
 tatis eterne. aut virtutes extrahuntur utq; omnes. ad  
 contemplandam glaudiam maiestatis eterne. **C**onde Pe  
 ruginus. sup. Iohannem. In beatitudine quippe eterna. corda  
 extra se foras currunt humana. ad contemplandu' grandia  
 sempiterna. **Galienus**. In Anthoditario. necesse. lumine satis  
 sanitatem supaddit aliqualem. in firmis aut maiore  
 dolorem pariter & lagrem. Testante. Avicenna. In libro  
 Fontis vite. In lumine quidem sani efficiuntur saniores.  
 & in firmi in firmiores. Tunc etiam ro' habita e' supra  
 Sic beatitudo pccata in istis potiora reddit pccata. malis  
 aut potiora suppluit & corripit. In quatuor indez malis.  
 se cuncta memorantur amissis gaudia. **C**onde. Cassianus  
 In lib. collationu. scdm p'm. Sicut beatitudo in istis gaudi  
 dium. sic dampnatio pccatorum supphat & corripit.  
**Theophrastus**. In tractatu. De parte Sensitiva. Natura quippe  
 hec est luminis. oblitionem inferre ingenijs sensib'q;  
 humanis. Tunc signum est. Nam ut & nos medicem' **N.**  
 profundius. oculos quodammodo claudimus. ut refert  
 Simplicius. In commento. Sic natura hec e' eterne bea  
 tudinis. inferre inquam oblitione ois molestie & doloris  
**C**onde. Azianus. In ep. fidelibus. In Egypto. Beatitude sola qd  
 memorari facit q' sit domini. maloru' aut o' pccat' obliscit

1. 10.

no

g.

11.

12.



**Aristoteles.** In lib. problematum. Lumen sursum de terra ad aërem molenter tollit pulveres. Athomosq; solares. Cuius signum est. Nam pulvis solaris. in lumine discurrunt & athom. in tenebra vero minime. ut refert. fontinus. ubi sup. Sic beatitudo illa celestis glorie. molenter quidem sursum ad se desiderium pertrahit mentis me. **¶** Unde. plato. In phedrone. lib. 1. §. 1. beatitudinis forma oculis corporatib; inveni possit. amicos ad amorem sui molenter pertraheret.

**Archita.** Tharentinus. In lib. De. Evacuibus. In nata. lumen accensum in domo. ignem fulvis reprimat & restringit. Iuxta id q. ait. fontinus. In Descriptioibus. Vmili. contomitur natus clamor. seu murmur resonant camparum. cont. fulmen aut accensio candelarum. Cuius etiam causa tangatur in Caplo De verbo. Sic beatitudo. per desiderium quide i domo accensa dicit. ignem omne pellit in cendimusq; rehene. **¶** Unde hugo. De. scō. v. Desiderium accensum in nobis eterne beatitudis. omne aufert a nobis timorem in cendij infernalis. huc usq; lumen apparat postquam igitur apparuim; lumen. beatitudinem illam perpetuam. sunt consequent ipm gaudio duxim; comparandam. ob ipsi gaudij varias qualitates.

**Aristoteles.** In libro. problematum. Vehemens quippe gaudium. fletum efficit & inducit. testante. fontino. qui ait. q. vehementer gaudent. plorant. Cuius etiam causa tanget in Caplo De subilo registrato. Sic beatitudo ppetua. p. i. testima bili in qm solacio q. in istis mte tribuit. ipos sepe ad fletu ad lacrimasq; inducit. **¶** Unde. Orosius. sup. Gen. tanta tanta ē dulcedo felicitatis ppetue. q. mens p. immo de siderio & amore. a fletu nec desistere potest nec cessare. **¶** **Iohāmaus.** In. Tractatu. De. Regimine. Sacerdotis. Gaudium ex sui natura. sompnu dulcem efficit & suavem.



Unus ratio est. Nam gaudium expurgat et depurato  
sanguinem. ut refert Auerroes. In. vi.º. medicinalium. libro  
puritas aut sanguis. sompnum dulcem facit. ut asserit  
Galenus in Anthodiaris ueteri. Sed nunc abiecit fortassis  
aliquis dictum ypochratis In. libro Epithymorum. qui ait  
Sompnus profundus et ualidus. ex corruptione sanguinis  
uenit. Dicendum ergo. quod alius est sompnus profundus.  
et gratus. alius est sompnus delectabilis et suauis. Sic  
beatus celestis glorie. sompnum dulcem reddit beatitudinis  
sempiternae. *Vnde* Richardus. De scd. v.º. quod quoniam dulcis  
sompnus. quoniam quod delectabilis quoniam interna. que in bea-  
titudine tandem pronemet sempiterna. *palemon* In. libro. De  
Sigmis. Naturalium. Gaudium in gaudenabus seu ridenabus  
uocem magnam. Hecus aut et tristitia uocem faciunt ac-  
tam. Cuius etiam causa tanget in f. In. capto registro  
De laude. Sic beatus amenitatis ppetue. uocem magnam  
faciet laudis atque inuolacome eterne. *Vnde* Anthonius.  
In. libro Exhortationum. In illa quate eterna beatitudine. tota  
resonabit regio celestis aure. per laudis magnitudinem et uolore  
*Julius*. Celsus. In. lib.º. De. g. nabilibus. Nature. Gaudium infert  
agilitatem. et efficit leuitatem. Cuius ratio est. Nam gaudium  
subleuat spiritus. et alleuat ipsum pectus. ut asserit Con-  
stantinus. Subleuatis aut spiritibus. et alleuato pectore  
agilia mobilia quod et leuis efficiuntur. corpora immota. ut as-  
serit Galenus. ubi sup. Sic beatus in cetera homines. agiles  
in quoniam ipsos efficit atque leues. ad cuncta bona opera seu in-  
uices. *Vnde*. Boetius. In. Episto. Ad Regina. virginem.  
Mente renouet tua etiam illam celorum beatitudinem. et  
mox omne amictus corporis granitate. et mris recipies  
leuitatem. *philareus* In. tractatu. De. Tris. Gaudium cito  
factum. arisim infert lagdo et infirmo. Testante Gali-  
eno. qui ait. Gula danda est spes infirmo. gaudium quod

R

S.

T.

no



gignendum. que minime sepe cretare facunt sualesce qz in  
firmu. Sic batudo salutis pectus. sanietatem z artem effi  
cit ualitudis sempiterna. *Vnde. Ambro. In. Exameron. li. x.  
Batudo tunc eterna. omne nostru lagrem abiciet. z sa  
nietatem pectus introducet. Aristoteles. In. lib. proble*

*tum. Gaudu foras mittit de corde totum ragnem z cru  
orem. Sic batudo mira hominem. omne a corde ei pellit  
foras molestiam z dolorem. Vnde. Ignatius. In. Episto  
ad Remorem. Veniet hora. iqua omne dolorem a corde  
homs. batudo illa absterget abicietqz celestis. Constant. In  
lib. 20. de. Melancholia. Gaudu subtiliat z depurat. anorem  
corpis minisim. Sic batudo celestis. lumen depurat z  
subtiliat ratio. Vnde. Cassiodor. sup. p. 3. Meditacio et  
ne batudis. subtilitatem ire atqz impudicte efficit rois*

*Johannes. In. lib. de. Regimine. Saticatis. Quidq cor  
ruptionis circa pectus homis colligit. totu hoc ipsum  
gaudio exscreatur. Testante Galieno qui ait. Iustus z  
gaudiu. eiusdem sunt efficacie z miraculis. Medianeab  
em hys. pcoris tota corruptio exscreatur. Sic q quid  
molestie aut doloris. mit in corde colligitur homis.  
hoc totum abicitur i lumen batie infusio. Vnde hu  
go. de. sco. v. Nil doloris prorsus remanebit in corde  
homs. in aduentu felicitatis batudis qz celestis. qz*

*Arabicus. In. Theorica. planetaru. Begim cap. de  
benignu habent planetam seu stellam. de Bngitate  
innasce. sue nascentie. atqz morte. Testante ptolomeo  
qui ait. Constat inquit mites z benignos hoies. suble  
nigms fore natos fatis z stellacibus unisios. Sic  
benignu mit hoies erga hoiem. benignu z sibi habe  
bunt o aditorem. Vnde. Sidonius. In Epistolari. Qui  
bngmus fuerit homin. bngmus z sibi erit conditor  
vniusi. Recratur. Id Caplm. De Piccate registrato.*



**philosoph?** In problematib? In corpore quidem humano. Dext<sup>a</sup>  
semper maiora sunt qm sinistra. Maior em e dext<sup>a</sup> ma  
nus. qm sinistra. & oculus dexter maior est qm sinist<sup>r</sup>.  
Cui? etiam causa tangetur infra. Caplo De. Iusticia.

Registrato. Sic & in homine. semp maior sit dextra pie  
tatis. qm sinistra affectus. **Vnde. Basilins.** In. Smoe  
Semp maior sit pietas hominis. qm nimia severitas et  
pericula qz rigoris. Recurrit ad caplm De. Abbate. re

gistrato. **Theophilus.** In. Breniloquio. dicitur. Arcu. Lem  
liquide flatus mri uento. Dolorem tumoris aliquatiter  
mitigamus. Sic leuibz benignitatis sermōibz. prori

morū utiqz lenius. mitigamus corrigimus qz exces  
sus. **Vnde. Grego?** In. pastoratib? Benignitate qppe fino  
nim. excessus sedam? facilius subditorū. **Salinus** In. li?

Peru. Ex herbarū dulcedine sen raditū. serpentes sū  
ligunt hauriūqz uenenu. Sic & mentes humane.

sepe ex nimia benignitatis dulcedine. uenenu attrahunt  
amaritudis sempitene. **Vnde. Rich<sup>rdus</sup>.** De. scō. v. Sepe  
nimia benignitas sen libertas erga hōiem. amaritudiez

pro uice recipiet infernalem. **Iorus.** In. phisonomia.  
Walemois. lenes digni & oblongi. bona naturalia idicāt  
& demonstrant. Sic lenitatis atqz benignitatis oia. bon

tatem i ee idicant a natura. **Vnde Salustius.** In  
tugtino. Ut frequend comperit ē. q tirām. peiores  
benigni nō erant ceteris meliores. t usqz De Be

gnitate dicta sufficiant. Ceteri. In. Tabla & Registro.  
**Continuo.** In. Descripcōibz vniūsi. Elore caplm De

quidē naturalit attrahit ipm aurū. **Cassitate.**  
signū ē. Nam ut refert. Euen? pūdetes exquisitores  
auri. ipm i aqz scutellis eburneis capiunt & iqrunt.  
Sic & elore castitatis. aurū illud attrahit felicitate

. Z .

. A .

. B .



Deitas **F**unde. Ambro. In libro. De. virginitate. Totam sibi  
abstulit mirabitur deitas. ipsa castitas seu mundicia virgi  
natis. Recuratur ad caput De. virginitate. **archia** cha  
renemus. De. scientibus nature. Speculum visui oppositam  
Basilica. ipm perimit et occidit. Cui causa habita e sup

**C.** Sic speculum castitatis. totam occidit versuta diabolice  
primitas **F**unde. Egrissimus. Jeronim. li. 3. Per castita  
tem namqz corporum. infernalem t nobis occidimus  
t inimicam. Requie De. continetia. **Theophil.** In. Breuiloqz  
Distant. ar. au. Rosa vori in tincta. toto ano florida co  
servatur. Sed de hoc requiratur sup. Sic mens hois  
que vori castitatis intrigitur. in corrupta eternaliter  
statur **F**unde. Boet. In. Episto. ad Regina virginem.

Caste quide mentes hominu. corrupcionem nequidam  
accipient in eternu. **Cometa** Aurais. Sup. omicratia  
Aucene. Cristallus. lat sibi naturae in trahit et imbibit  
Cui eadem signu e q refert Gilbertus. In. lib. De. Ge  
creis gulern. Nutrices que de cristallo biberit. multo  
habundabunt lacte. Sic cristallina illa atqz limpida casti  
tas hois. lat sibi imbibit etne dulcedinis et amoris

**F**unde. In. lib. Galiloqz. ang. Dulcedo q ex deo tribuit  
no nisi castis meribus bibit et potat. **phimus.** In. Specto  
Naturali. Hos quide ois. no aque sz tmergitur vmo  
forti. Cui ro sup tacta e. Sic hos ille filius virginis

**F.** n aquis illicite. praintatis. voluptis sz vmo tmergitur  
delectabilis castitatis **F**unde. hugo. de. sco. v. flo. quod  
in quacunqz gema. reperta fuerit in sculpta effigies v  
ginis. talis t qm gema. gradum reddit hominu m qz  
ut refert Evox De. Sigillis lapidu. **Calienus.** In. atho  
ditario veteri. Omnia quidem vasa. solis sut virgi  
neis manibus alliganda. Cetera In. Caplo De. Virgite.









ceam. **C**irculo. Cumq; fontes qui in fundo maris sunt spumam  
 suam. eiciunt & erant. eo ano tunc erit ad regiones  
 quilibz nauigare. **S**ic & dum mentes humane. spumam  
 emittit confessionis intine. mox facile e. Deuenire ad  
 portum quietudinis sempiternae. **U**nde **Eusebius**? In **h**mo.  
**Q**uoniam inueniunt mare confessionis & penitentie. no suf-  
 ficient enarrare magnitudinem pietatis diuine. **Ysidorus**?  
 In **h**istorijs naturalibz. **F**ormica cum sit tenuis. amissa  
 uestigia sui itineris. requirit p<sup>ra</sup> ore. gustando indez  
 hinc & inde. **S**ic p<sup>ra</sup> amissa uestigia celestis patrie.  
 ore confessionis ea studeat inuenire. **U**nde **Iseda**. In  
 omelia. **V**iam que uadit ad celum. sola arcta inuenit  
 confessio p<sup>ra</sup>um. **Alexand**? **S**up. 3. **o**rechavon. **Q**uoniam  
 sub merse aut mortue. dum calidis cineribus in tincte  
 fuerint. protinus remittunt. **S**ic & cineres humane.  
 dum cineri i merguntur confessionis & penitentie. mox  
 vite restantur ut hactenus sempiternae. **U**nde **Or**  
**Isidorus**? **S**up. **g**abriel. **Q**uoniam cum ab culpam mortu<sup>us</sup> fu-  
 erit. cum confessionem fecit. primo tam i corpore  
 qm i mente felici remittit. **Aristoteles**. In lib. probe-  
 matu. **M**odici salis igni in iectum. inde mox repellit  
 militum aut de sale. i igne manet abq; strepitu et  
 fragore. **S**ic modica confessio acerbitas. aures ma-  
 gis uritat pronocitq; diuinos. ualida aut facta co-  
 fessio. grata manet i aspectu i mentuq; diuino.  
**U**nde **Fortunatus**. In omel. **D**eo omnipotenti ille illud  
 qui confessione fictam & diminuta facit. **Theophilus**? In  
 Breuiloquio. **D**iuisari. **A**rtu. **P**anis calidus gravior  
 e qm frigidus. sz cu foras exalauerit aquositates q  
 i pane fuerit. primo leuiscit. **S**ic & dum co-fessio-  
 nes de corde hois exalauerit. mox npe ad cuncta ho



facienda opera leuior apparebit. **¶** Unde. Io. Belet. In. 3<sup>o</sup>.  
 mox em facta confessione hominis. leuis signane deditur  
 in actib<sup>9</sup> uinis. **Archita.** Tharentinus. In. libro. De. Euenabus  
 In. Natur. Ad p<sup>re</sup>sentiam occisoris. sanguis emanat de vulne  
 ribus oculi hominis. Cuius quidem effectus ratio. multiplex  
 a philosophis assignatur. Dicit Durand<sup>9</sup>. In. 3<sup>o</sup>. q<sup>u</sup>lib<sup>9</sup> suo.  
 hoc e<sup>st</sup> effectum demoni. qui mentitur effice. ut fortassis  
 innocens. pro reo sanguis habeatur. Aut ut fortassis q<sup>ui</sup>  
 ipsum occiderat capiamur. & in peccatis suis sine p<sup>re</sup>sen  
 tia moriatur. **¶** Aliiter aut opinatus e<sup>st</sup>. **fontinus.** In. Descrip  
 tiombus. uinis. qui dicit ad p<sup>re</sup>sentiam occisoris emanare  
 sanguinem ideo. quia fortassis aliqui gutte sanguis oculi  
 remanserunt in uestibus aut in gladio occisoris. qui et  
 sanguinem sibi attrahunt de corpore vulneribusq<sup>ue</sup> oculi.  
**Thomas.** Aut De. Aquino. In. Summa cont<sup>ra</sup> Gentiles dicit  
 quosdam spiritus seu radios visuales occisoris relictos  
 in oculo. qui dum presense occisore moti fuerit. mo  
 uetur & continuo ipse sanguis & effluit de oculo. Ad p<sup>re</sup>sen  
 tiam igitur occisoris. Et cetera. **¶** Sic ad p<sup>re</sup>sentiam confessoris.  
 qui uidelicet hostem occidit in mente hois. mox tota p<sup>er</sup>  
 confessione culpa effluit de vulneribus peccatoris. **¶** Unde  
 Grego<sup>9</sup>. In. pastoralib<sup>9</sup>. Ad p<sup>re</sup>sentiam igitur confessoris cui  
 nil tam exile tam paruum. quod uelis aliquatim occultari.  
**Aristoteles.** In. lib<sup>9</sup>. De. Regimine. principu. Ad Alexan  
 drum. congruum quide<sup>m</sup> e<sup>st</sup> corporu<sup>m</sup> sanctitati. ut sumpto  
 cibo. homo diuisa uaria q<sup>ue</sup> loquatur. Cuius ratio e<sup>st</sup> p<sup>ro</sup>  
 conferendo sermones delectabiles. sompnio dulcis sequat<sup>ur</sup>.  
 & digestio purior committatur. **¶** Sic & agrum e<sup>st</sup> salutis aie.  
 ut quis cum suo in confessione. diuersa agat & conferat  
 confessori. **¶** Unde. Aug<sup>9</sup>. De. fide. ad petru<sup>m</sup>. multa nate  
 peccatorem in confessione inuestigare & querere. super  
 sua proximaq<sup>ue</sup> salute. **Cometator.** In. libro. De. Inp<sup>er</sup>morib<sup>9</sup>

No

9.

No

N.

No

No

O.



deris. **Passa.** rupes qz z diuisa nube. in temperies mor  
 cessant atqz totauna uniuersa. Cuius ratio e. Nam i pres  
 siones nubiu. exalare no pnt persistente in reg ipa  
 nube. **Rupis** igitur. nubibus foras prodit. sicqz to  
 tiora in temperiesqz quiescit. Sic rupes mente ho  
 minis. confessio in pulibus z doloris. mor cessat i  
 temperies atqz quassato quidem ois **Vnde.** hugo. De se  
 victore. Cumqz mens nra i confessione resoluta fuerit.  
 mor tota conquassato tam mentis qm corpus am  
 elat. **Theophilus.** in. Breniloquio diuisari. arant. Nam de  
 oris nostri. extinguim? lum z accendim? ipm ignem.  
 Sic ore confessio sedule. lum in nobis extingui  
 uatitatis resplendencieqz mundane. ignem aut accedim?  
 Amoris atqz karitatis interne **Vnde.** celestin? pp. in  
 sermone. confessio necesse e extinguat Amorem uicium.  
 accendat aut uehementi? Amore desideriuqz diuinu.  
**palemon.** in. lib? De Signis. Naturarum. Signum quippe est  
 puri z nobilis sanguis. atqz idcirco oimode sordiditatis.  
 rubere z uerecundari i uerbis quibuscumqz ipm uolum.  
 Sic z idcirco i sacris die. in confessione sua peccore  
 uerecundi? exrubere **Vnde.** leo. pp. in. sermone. Quia  
 to maior uerecundia in confessione fuerit. tato pres  
 tantius hoim erigit. tantoqz diuino dulcius aurib?  
 i noceat. **fontinus.** in. Descriptioibus. uicis. in. tranquillita  
 te deris. alacris z rectis surgit flamma. uentis naqz  
 z motio deris flammam ignis repunt uersus ordm  
 Sic in tranquillitate tam mentis qm corpus. recta in  
 deum surgit flamma confessio peccentis **Vnde.** Gvido  
 in. 3? sermone. opusculo. Si pacifica z tranquilla uita  
 fuerit. confessio diuina uelocius aspectib? in noceat  
**archita.** Tharetm? in. lib? De. Euencib? in. sacra. can  
 dela cmeri in tinda. facili? inflamit. Sic mes i tuta



cimeri confessionis et penitentie. igne inflammat protinus  
 amoris atque caritatis interne. Unde. hugo. in lib. pe  
 nitentia. Mor enim cum mens amaraudum confessionis  
 et mersa fuerit. diuino in amore sincerius exflamescit  
**ypocras.** in. Euthymius. Significat quidem omne tunc exime  
 tum morbum corpus. effluens in febre per nares sanguis  
 sen auriis. Sic et signum est pectus sanctitatis. confessio  
 et effluens hominis. cuiuslibet peccati. Unde fortunat?  
 In omne. In confessione quippe homo. redit mor. sanctitas  
 mentis et corpus unius. **Aristoteles.** in. vi. Ethic. li. Cumque  
 in sanabiles dentes nasci incipiunt. magis plorant. Sic dum  
 dentes orti fuerint confessionis exprimende. maiori mor  
 humescat peccator lacrima et dolore. Unde Cassianus. in. libo  
 Collationum. scorum. prim. In confessione siquidem allidatur  
 dens. ligava. atque tota uircus anime per amaraudum et dolore  
**Algarzel.** in. libro. De Dispositione. eximbrox. In uehe  
 menti quippe dolore. dentes ad unumquemque spiritum uehemen  
 ter. Sic et nos in omni dolore et molestia huius vite. den  
 tes spiritum confessionis ferunde et deuote. Unde. azi  
 annus. in. Episto. fidelibus. in. Egypto. Semelam in iun  
 cem dentes tam mentis quam corpus. ut uota nostra et  
 confessio innotescat auribus saluatoris. Revertit ad cap.  
 De penitencia. **Aristoteles.** in. libo. De Regimine. principum. ad  
 alexandrum. os tenere apertum in sompno. humane  
 est principum sanctitatis. Cum ratio est. Nam fumositates as  
 cendentes e stomacho. que clauso ore capiunt petunt.  
 oris aperto hiant. fatus exiunt et recedunt. Sic sum  
 me ualet in sompno presentis ignorantie. os confessi  
 onis apertum semper patulamque tenere. Unde Richar  
 dus. De sc. u. Semper quidem in hunc mundum os nostrum. co  
 fessionibus et laudibus iugiter stet apertum. Cetera  
 De confessione. requiratur in. Capitulis De peniten  
 tia. Item De amaraudum et dolore infra registratis.



**G**aliemus. in Anthoditario. veteri. Ad odorem rose cap<sup>m</sup> De  
caput leditur & corrumpitur vehementer. Cuius Delicias.  
ratio est. Nam odor florum qui in illuminato gradu sit fir-  
giditatis. catarrum. li. ancos. tiffini qz efficiunt & corrumpit  
quibus pectus corrumpit atqz caput. Sic a d rosen illu-  
odorem deliciarū huius scadi. totum cordis corrumpitur  
desiderii affectioqz humani. **¶** Unde Salustius. in. Inguir-  
tino. Quid em aliud ē odor deliciarū. qm cecitas & ob-  
umbratio aīarū. **prolomeus** affirmasti. Imo. celum quidem  
lucem sumit. a stellis & a mundo. Testante. Alzabicio. in  
theorica. planetarū. qui ait. celum illustratur a stellis p  
rectam luminis in fluxione. Illustrat & a mundo. p  
refractionē ac reflectionem. Sic celū beatissime cernitur.  
nō solum delicias sumit a beatis. s; & in filiis hominū.  
ab omni labe criminū depuratis. **¶** Unde. Iero<sup>s</sup>. sup. libz  
Sapientie Delicias suas querit. deus in filiis hominū &  
in legionibus angeloz. Recratur. ad caput Deo veniunt.  
**Aristoteles**. in libro. De Regimine. priapū. ad allegoriz  
in samū quidem ē ualde. in de pectis atqz ornatis pectis  
obdormire. Cuius ratio ē. Nam resplendentia pictura  
rum. fantasmata multis in sompnis suscit. que impedi-  
unt qm sompnū. Nec mirū quidē. refert em cōstā-  
tinus. q qm mixta ignem dormit. visiones igneas ac-  
cipiet & indelic. Sic sume nociuū laqueus ē. somnū  
quidem sumū facit. in resplendentia & delicias hō. vite.  
**¶** Unde Sidorius. in. Epistolari. Sepe mirū homo ex  
delicias huius scadi. morbu incurrit supplicij semper  
in. Requirit De. Nitore **philosoph**. in problematib. Ad so-  
lis intuitum & aspectum. cecitates efficiunt. & aliquantū  
lacrimant. Sic & post mundi huius Delicias. cecitatem  
in currit. & lacrimam pectus facimus. **¶** Unde  
Fulgencia in. 2. or. thelogiarū. lib<sup>o</sup>. Quidam namqz de  
hac. cecitate in funt ē. atqz lacrima emulatio etne. **¶**

X.

P.

Z.



**Centoimus.** In libro. De. Ciro. orbis. Virides montes seu ual-  
les. maiorem in nocte tenebram caligiemque inducunt. Nam  
ut refert Theophrastus. In. De parte. Sensitiva. Viridis co-  
lor. in tenebra uehementius tenebrescit. Sic et mentes quae  
humane. in partem uicem delitescunt. uirentes et fulgide. in nocte  
subsequentiis miserie. maiori umbrescent caligine et horrore.  
**Vnde.** Athanasius qui in. In sermone. Quanto magis  
uit homo delicias affuit. tanto horridiore tenebra cal-  
iginemque subibit. **Solumus.** In libro. Peru. Quanto fulgidi-  
or in capite. quod stultiones fuerit aut spentes. tanto utique  
ueneno sunt atque inuidia pleniores. Cum ratio est Nam uene-  
ni in spemque et laceratis euaporat in capite. ibi quod in uel  
agrum effiat et relinquit. Cum et signum est. Nam ut refert  
philosophus. In Speculo naturalis. Crucem ingratam in dorso.  
vniuersae habent asine. eo quod emulcoria melancholicis sit malis  
dorsalia sunt dorsis. et cetera. **Padinus** in. In. capitulo De. **gr.**  
Sic mirum per omne modum. quanto fulgidiores delicias  
fuerint in hoc mundo homines. tanto in posterum ueneno  
eterne amaritudinis pleniores. **Vnde.** Haymo. super  
Apocalyp. Quanto magis uita homines delicias affuit. tan-  
to futurum acerbioris amaritudinem sustinebit. **Galenus**  
In. vi. medicinae libri. Eo tempore quo herbe uirent  
et florent. nullius sunt in medicina efficacie et uirtutis  
omnis ratio est. Nam tunc tota uirtus herbarum. in flo-  
res frondesque erit et proficit. ut refert. platearius libro  
octauo. Omnis etiam signum est Nam ut ait Euemus  
Timee herbe. maioris sunt uirtutis et efficacie. in hi-  
eme quam estate. Cum eadem ratio est. Nam. in hieme. uirtus  
humorum herbarum. radicationis in eis manet. In estate  
aut exhalat. et in flores in frondesque excrestat. ut re-  
fert. Anadarius. libro. quarto. Omnis et signum est. Nam  
medici in hieme maxime et in uere radices aptas colli-  
gunt medicinis. ut refert. fontanus. Sic cum homines ma-

.a.

.b.

.c. ne

.ne



gis fulgent delicias. eo & tempore immoris sunt exercit & in-  
tuitis. atq; ingratu aspectu conditoris. ¶ Unde. hugo. de sō  
victore. Delicie erga hoīem. omne sibi auferunt gratiam  
& virtutem. **Galenus.** in. anthodictario. veteri. Eger ex  
in tunc quicquid. natiūis uehementiusq; egrotat. Cuius  
ratio tacta ē sup̄a. Sic peccat in delicijs. maioris atq;  
periculosioris efficiat egritudis & languoris. ¶ Unde se  
migne sup̄. iohānem. Qui peccat se implicat. in delicijs  
sup̄bādāus semp peccat. **Nestorius** in. lib. De. ecclesia Cir-  
culo. Namq; natus nobis ad Aquilonem. montes toto nos-  
tis que ignem emittit. quibus qui appropiānt. mori-  
tur. Cuius ratio est. Nam ira que circa fines ē occidit  
in. sulphurea ē nimium & amara. Quāobrem montes  
illidem semper ardent que. ut refert phinius. In  
Speculo naturali. Cuius etiam signū ē. Nam ut re-  
citat Augustinus. In feruis expurgatorum in septem  
trionibus fore partibus estimantur. Sic circa Aqu-  
lonem mortis humane. magis efflātescunt felicitates  
deliciasq; inuidie. ¶ Unde. Pythagorae. Quāto  
quis morti vicinior fuerit. cōto mundi huius delicias ef-  
fulgebit. **Vegetius** in. lib. De. re. militari. Cuiusq; spuma  
maris. noctis rubet tempore. nante nautā agmē sus-  
piciuntur. Cui etiam rō tangetur in fr̄. capto. De  
visione. Sic dum nobis spumose huius mundi lucent  
delicie. nautā mori emendūm periclitatōis eterne.  
¶ Unde. haimo sup̄. apocalyp. Quādo nobis huius fulge-  
ribus delicias. timor mori ingruit periculi infidelis  
recurrat. Ad capm De venustate **Costantinus** in. trac-  
tatu. De. naturis. liquidiorū. Qui in hictore dū grad-  
atū aquas. languore ex aquis trahit aliquale. Cui  
ratio ē Nam ut ait. Antēna. ex humectato nimium  
tere. inficiat ipm corpus. Aer aut aque gignis.  
vaporibus ē multis nimium humectatus. ut ait Gal-  
enus. in. vi. medicinali. lib. 2. Sic qui dū ambulat



circā aquas deliciarū hūmō seculi. morbum tantem strahz  
eterni supplicij & tormenti ¶ unde. Cassiodor. sup. ps. Ann  
quippe qui mudi hūmō delicias trahit. mors ipm & refo-  
rmatis pectus coniectatur. Recurrit ad capm De orote.

**psidius** in. historijs. naturalib. Serpens in feruore solis &  
lumine. speram circulumq. describit. Sic peccor in lumine  
deliciarū hūmō seculi. circulu in se describit supplicij tem-  
piteri ¶ unde. Gratianus. In. cō. apparatu. peccator qsq.  
vniens in delicijs. pene adapatat. caligine infernalis.

Recurrit. ad capm De uilitate. **plinius**. In. Specto na-  
turali. In ortis quiescentibus. sompnio periculosus accidit  
& profundus. Periculosus quide. Nam i. calces. vernices in-  
silut & serpentes. Sic fortassis quida uernices. ipm sub  
ingredimur. Aureo. Profundus uero. Nam ex altacōnes  
terre sibi in bibunt. qui in ortis dormiunt. ut recedat  
Harentius. Sic qui in ortis obdormiunt deliciarū hū-  
mō. sompnio profundū accit in uilitudine sempitene

¶ unde. Haymo. sup. Apocalip. Qui in in delicijs mudi  
hūmō obdormiunt. sompnio timendum mortis perpetue  
obtorpescunt. Huc usq. de delicijs dicta sunt **cap. De**

**A**ristoteles. In. libro. problematu. Stantes i. umb. **Dilectōne**  
impudius atemplamur. Cuius ratio ē. Nam ut ait. the-  
ofrastus. In. De parte. Sensitua. visus nū in lumine dista-  
bitur. in tenebris uero adunatur. Cui etiam signum ē. Nam  
ut impudius uideamus. visum manibus obumbramus.  
ut refert Euemus. Sic & nos stantes in umb. dilectōis.  
interne. gaudia atemplamur impidi? beatidie sepietne

¶ unde. Cassianus. In. libro. collacōm. scōm. p. 7. Stantib.  
nobis in dilectione dei. lux ipsa lucebit sinceris candi-  
dis radijs diuinis. **comēta**. In. libro. De in p. m. i. aeris.  
Cum ros ceciderit. serenitas pto erit. Cui? rō ē. Nam  
serenitas expurgato aere fit. ut ostendit phs. In. 2. ge-  
tharonū. per descensum aut. rois. expurgatur regio  
aeris. ut ait. fontinus. Sic cum ros descenderit dilectio



me mame. sermone mox consequatur felicitatio eterne.

**F**onte. Gvido in. Sermonibus. In rore siquidem dilectionis  
divine. par est tranquillitas felicitatis eterne. **Theophilus**  
in. Breuiloquio. Dicitur. arcum. Virga per ignem subico  
tracta. flexibilior efficitur. Sic mens tradita per ig  
nem dilectionis eterne. magis flectitur in viam salu  
tis eterne. **¶** Unde Cassianus. In libro. Collationum sanctorum

.k.

patrum. Cumque mens nostra ignem dilectionis consumit. mox in  
viam salutis et gratie ueris adaptatur. **Aristoteles**. In.  
libro. problematum. Qui pedem aut manum mouerit in  
aqua calida. maiorem inde sentiat percipitque calorem. Sic  
qui affectiones eterne. in bono mouerit opere ac exerci  
tauerit in uirtute. maiorem inde calorem sentiet. Di  
lectionis atque caritatis divine. **¶** Unde Boetius in. Epistola  
ad Reginem virginem. Sola uirtus anime. gaudia habet  
de gustare uocanditatis atque dilectionis divine. **¶** **Constat** in. In.

.l.

Tractatu. De. Placuit. liquorum. Cumque uirga fons im  
gitur. fons ipse factus dulcoris comprobatur. Sic dum  
cor quidem hominis. fons immergitur diuinum pietatis et  
amoris. mox gustus ei suauior celestis refrigerii et  
dulcoris. **¶** Unde. Cassianus. In. libro. Collationum. sanctorum  
patrum. Nisi mens nostra fons amoris intincta fuerit.  
eius nequaquam suauitatem aut dulcedinem degustabit.

**Iohannes**. In. lib. De. Regimine. Sanctitatis. Sic aut  
mannas post ablu frigidis semper tunc. Intra id quod Aro  
ypocras. In Epithymis. frigus inquit in auribus et  
in manibus hominis. sue est indicium sanctitatis. Sic et men  
tes humane. in dei dilectione algentes et frigide. sine  
dei dilectionis refrigerio liquefacte. salutis sue sunt in  
diuinum atque beatitudinem sempiternam. **¶** Unde. Aug. in Soliloquiis.  
Sicquid quippe est salutis eterne. dum mens mens. dei  
refrigerata aut liquefacta fuerit in amore. **¶** **Comestator**  
in. libro. De. Insuperantibus. Proprium quidem est roris

no. g.



et prume. in die non descendit sed in nocte. Sic et spiritus est  
 dilectionis divine. non in die defluere mundane felicitatis  
 et affluentie. sed in nocte contritionis et penitentie. Unde. **Crisostomus**  
 in epistola ad thessalonicenses. Hoc enim de ratione dilectionis crucis creditur.  
 ut non mundi huius felicitas. sed afflictio quidem mentibus  
 tribuatur. **Solinus**. in libro perit. Timeo nimirum aures  
 que crudis uescantur carnibus. nullatenus bibunt aquam.  
 Sic et mentes humane. que carnibus uescantur uolupta-  
 tis illitate. aquam non bibunt amoris sed dilectionis divine  
 Recurrat ad capitulum De amore. **Theophilus**. in Breuilo-  
 quio. Diversarum. arborum. in extremitate ligni igne usti. ex-  
 stillat quidam liquor. Sic et in mente dilectione feruida.  
 fluentia sunt et reflunt semper. Unde. **Orosius**. An-  
 tiqui. Cantus. Dilectionis siquidem aquam. fontes emanant  
 et influunt gratiarum. **Ambrosius**. in libro suorum. Symonem.  
 Ad amato seu magnes non trahit ferrum ignitum. sed  
 frigidum petas et extinguit. Sic cristus non trahit  
 mentem carnali dilectione flammam. sed ab omni pravo  
 ardore frigidam petas et extinguit. Unde. **Ambrosius**  
 in libro De uirginitate. Non in corpore sibi cristus. in  
 in munda dilectione feruidus. sed ab omni pravo desiderio  
 petas alienos. **Fontanus**. in Descriptioibus. uirginitatis. Igna  
 copiosius ardet et lucet. noctis que quam in die. Cuius ro-  
 s. Nam diaphanitas transparentia per diurna. ignem dissi-  
 gat et distrabit uniusum. ut ostendit **Theophrastus** in De  
 parte gentiana. Sic ignis dilectionis divine. copiosius  
 lucet in nocte tribulationis et penitentie quam in die felici-  
 tatis affluentieque mundane. Unde. **Eusebius**. in Elogio  
 urgente tribulatione seculi. magis attendit amor di-  
 lectio quoniam cristus. Recurrat ad capitulum De caritate  
**Euenus**. in libro De contentibus. oribus. Igna ab aqua  
 nequaquam extinguitur. Atque unam strepitum et frigore  
 Sic et ignis dilectionis divine. per aquam non extinguitur

fl.

o.

p.



prædue concupiscentie. Absq[ue] strepitu emulatiois etne. idest. nisi  
conuictum strepitus miserie sempiternæ. **¶** Unde Ciprianus  
episcopus. In libro. De xij. Abusib[us] seculi. **¶** Qui ignem m[er]it  
dei dilectionis abicit. igne iehene ualidius uehememētiq[ue]  
accendit. **¶** **CONSTATIM?** In. Tractatu. De. Naturis. liquidorum.

**Q.** Post cibum amarū. potius dulcescit. Cuius rō ē quati  
tas contrarij in g[ra]tiam permiscet[ur]. quēadmod[um] refert  
Theophrastus. q[uod] aqua calida hiemati que acies congelatur  
q[uam] aqua frigida. Cuius etiam causa habita ē sup[er]a. **¶** Sic

post cibum amarū penitentie. potius ē suauior amo  
ris atq[ue] dilectionis diuine. **¶** Unde. Cassianus. In. libro. de  
Collatōnib[us]. scōrum prim[us]. Amari tudinem penitentie. succedit  
dulcor dilectionis atq[ue] cōsolationis eterne. **¶** **fontem?** In. De

scriptoribus. vniuersis. **¶** Qui silem in ore tenet dum bibit. po  
tius ei suauior atq[ue] dulciior apparebit. **¶** Sic qui cristū in  
ore et corde tenuerit. potius dilectionis gr[ati]a suauis  
de gustabit. **¶** Unde. ysidorus. In. De. Summo. Bono. **¶** Cristū si  
in mente tenueris. etiam que omne rōis cōstendit ual  
itudinem. dulcedinem degustabis. **¶** **Auctēna.** In. lib[ro]. De. q[uod] tu

Dilunij. **¶** Quis fons exstat dulciior noctis que q[uam] in die.  
Cuius ratio tacta est sup[er]a. **¶** Sic fons dei dilectionis et  
gr[ati]e. dulciior nobis est. in nocte tribulatiois et peniten  
tie. q[uam] in die felicitatis affluentieq[ue] munda[n]e. **¶** Unde.  
Orasius sup[er]. Can. Canti. **¶** In tribulatiōe liquet et angus  
tia. n[on] dulcius desiderij dilectio q[uam] diuina. Requie. De

accensio. **¶** **CONSTATIMUS.** In. libro. De. Melancholia. **¶** Filices igni.  
et in lacte caprino extincti. omne autum[us] putrefactū atq[ue]  
ethicū passionē. **¶** Sic et mentes humane. i[n] dei igne di  
lectione. atq[ue] lacte demerse dulcedis in terne. omne  
autum[us] morbum molestie sempiternæ. **¶** Unde. hugo. de sto  
victore. **¶** gentes in dei dilectione feruide. atq[ue] diuine  
recomendati dulcedini q[uod] inuncto. pene a se pellunt mo  
lestie inuicere. **¶** **Theophilus.** In. Breuiloquio diuersarū. Ar

No. 5.



aum. Una gutta aque frigide. totam respicit ebullitione  
feruentis olle. Sic una gutta dei dilectionis. omne bulli-  
tionem respicit cuiuscumque molestie aut doloris. Unde. ful-  
gentius. In. quarto. orthologiarum. libro. Una gutta diuine  
dulcedinis. omne sitientem opprimat dulcedis corporalis.

**Archita.** Tharenomus. In. libro. De. Euertab. In. flata. In  
uehementi frigore lecta strepunt. Sic in frigore dilec-  
tionis atque refrigerationis interne. corda nostra strepitum  
faciunt laudis ac iubilacionis sygne. Unde. Orosius sup-  
can. can. In diuine dilectionis refrigerio. mens iocunda  
tur iuberius in tripudio pcomio qz interno. **Theophilus.** In  
Breniloquio. Dispari. Arcum. Ostia humectata. sine strepi-  
tu se aperuunt et frigore. Sic corda humana. Dulcedine  
vorida caritatis. mox ingressu se aperuunt felicitate  
deitatis. Unde. Ambrosius. In. libro. pfectionum. Dilectio cristi-  
dum perfundit hominem. mox ipse intra se aperitur. suum

suscipiet conditor. **Themiſtius.** In. Summa. naturalium. Enchir.  
In. loco. ubi ros cecidit. ignis diffinitime exardescit. Cuius  
ratio est. Nam ut ait. Amicebron. In. lib. fontis. vite. ros. ig-  
ni est naturalis inimicus. Iuxta id qd ait. fontem. In. De  
scriptiōibus. vniuersi. magis exignit ignem una gutta ro-  
ris. qm mille gutte aque pluuialis. Sic in quocumque  
hominum ros diuine fluxerit caritatis. ibi ignis nequus  
in ardeat simplicis rehenatis. Unde. hymno. sup. apocal.

Abi ros dei dilectionis in fluxerit. ibi ignis rehen nulla  
tenus estuabit. **Galienus.** In. Anthoditaro. ueteri. Cuius ma-  
num serpens ferit. si mox in stimentu manū lesam  
fonti in merserit. uenenum sibi pectus nil nocet. Sic  
quem serpens allicit suggestionis diabolice. si mox fontem  
inmersus fuerit dilectionis et gratie. ab omni mox inimico e-  
rit molestia et dolore. Unde. Iero. In. Episto. ad stepha-  
num. Veno lesa homo. dilectionis sanatur fontibus et  
amoris. Recurratur. ad capm. De caritate. **philaretus.**



Sufficient igitur determinato. De hoc Clemento. D. Nunc  
 sequent agendum de hac lra. E. Et p<sup>m</sup>u quide de  
 sancta Eucharistia. Ad quam reducuntur capitula infra  
 scripta. videlicet caplm de Christo. Item caplm registra  
 tum. De Deo. Item capitula De Trinitate. quoz  
 prosecutionem require infra capitulo De Registro.

**P**hilareus. In. Tractatu. De Dietis. Cum naribus cap. De  
 his sagnem sorbet calidum. ipse pfecto prout **Eucharistia**  
 eat sagnis sin plurim. Cuius ratio est. Nam ut ait Antena  
 sago sagnem de corporibus eliat et educit Cuius etiā signu  
 s. Nam vulnera que nō possunt sagnem emittē. illimita cū  
 sagne. sagnem nov in aquam emānare. Sic qui sagnem  
 sancto simplici eucharistie. sagnem pfecto in se pronacat  
 iocunditatis dulcedinisqz interne. **Vnde. Hugo. De Gco. v.**  
**Qui digne simplici carnem et sagnem domini. tam mēte**  
**qm corpore inquit eternatit iocundat.** **Solmus. In. libro.**  
**Peru. Aues que crudis nesciunt carnibus. nullatenus bibunt**  
**Aquam. Sic qui crudam illam sunt carnem sancte eu**  
**charistie. nunq in etiam gustabunt aquam amaritudinis**  
**sempiternę. Vnde. Remigius. sup. Iohānem. Qui particeps**  
**fuerit cristi carnis et sagnis. ois erit expeis in etiam**  
**amaritudinis et doloris. Costantinus. In. tractatu. De. Natio**  
**liquidoru. Sanguis distemperatus cum melle et lactina.**  
**omne aufert caligiem oculoru. Cuius ratio cōgeet infra**  
**caplo. De visione. Sic sanguis sancte eucharistie. melli qde**  
**in mixtus deuocōis dicit. atqz lactine stricōis et pēitēre.**  
**omne aufert tenebram caligis sempiternę. Vnde. ysidorus**  
**In. De. Gūmo. Bono. Cuiusqz deuocōne et pēitētia scā eulā**  
**vistā sumit. ois mox tenebra et caligo proculpellit et fu**  
**gatur. Aristoteles. In. libo. De. Regimine. pīncipū. ad allegari**  
**drum. Sume quide pgruit sanitati natitudinēqz humane.**  
**aliqlem cotidie aur globulū deglutire. Cuius rō cōgeetur**



in f. d. caplo. De Cristo. Sic sume ualeat salua aie. Aurum  
 inquit illud nobilissimu sancte eucharistie. Digne cotidie  
 manducare. **¶** Unde. Beda. In. ome. Pro obtinenda f. salu  
 te eterne beatitudinis. b. ssima illa caro z sanguis sumuntur  
 saluatoris. p. etrat. ad cap. De Cristo. **palemon.** in. libro.  
 De. Sigis. Naauraru. Dentes albi z mudi. naturalit. sunt  
 edaces. Intra id q. ait. fontemus. Qm albos dentes habet. ma  
 gis ceteris semp. nothit. Cuius ratio tangeat. m. caplo  
 De. vetito. Sic dentes aie puritate mudi. soli sunt cristi  
 ms z sanguis susceptum. **¶** Unde. Athanasius. pr. m. In. Ser  
 mone. Solus mtor z puritas aie. Digna eucharistie h. sc.  
**Theophilus** In. Orenloquio. Dm. qm. Arant. Qm oleu. lnn  
 m ore gestauerit. difficile suffocatur aut submergit. m.  
 Aquam. Cuius ratio e. Nam oleum emissum de ore. dimittit  
 ipsam aquam. z sic respirare potit. qui steret sub  
 aqua. Sic qui oleum in os sumptuerit sancte eucharistie.  
 neq. suffocabit. qualicunq. molestia z dolore. **¶** Unde. de  
 leth. 10. In. 3. Smom. opuscula. Qm cristi digne sumo  
 carnem z sanguem. omne m. se tam mentis qm corporis  
 exungit molestia z dolore. **Archita.** Tharenomus. In. libro  
 De. Eueneb. In. Naaur. Qm silem in ore tenuerit du  
 bibit. potus ei dulcor apparebit. Qm ratio tangeat m. caplo  
 De. veritate. Sic qui cristum digno ore suscipio.  
 suauitate dei z solida eternitate degustabit. **¶** Unde. Euse  
 bios. In. Smone. Qm semel in cocti m. fia. digne sup  
 serit carnem z sanguem dominicu. ne pzocul dubio nq.  
 dampnari potit in etnu. s. dulcorem fontis etni ha  
 riet sempetnu. **fontem.** In. Desquodino. vni. s. Ebur si  
 quidem vno dectum decoctum. s. molle atq. flexibile ef  
 fiatur uelud cera. Sic ebur. hac nobile cristi carnis z  
 sanguis. i. vno quide decoctum m. desiderii z amoris.  
 flexibilioris mox. erga nos effiat pietatis. **¶** Unde. h.

b.

c.

d.



go. De. Geo. vii. Cristus quidem digna sumptus mente hois.  
in effabilis cura nrm efficit pietatis. **philaureus.** in. tractat.  
De. Naturis. orboz. Cumqz membru aliq igne ledit. mer-  
cero truda supposita nrm sanat. Sic mentem que igne  
maligno lesa fuerit. felicissima caro cristi. sanctitate pectus

**E.** releuabit. **¶** Unde ysidorus. in. De. Sumo. Bono. Semperne  
sancti mentis et corpus redditur. qm sancta digne eulza  
rilia pasit et abatur. **themisti.** in. Suma. Naturali. Cha-  
um. **¶** Saguis rare mixtus. extinguit naturalit omne ig-  
ne. Cuius ratio e. Nam ut ait. Euemus. Ros igni e natura  
liter inimicus. Sed et saguis ex sui natura suffocat ipsu  
ignem. ut recitat constantinus. in. Tractatu. De. Natia. liqui-  
doru. Sic saguis sancte eulzaristie. rosi tmixtus deuaga-  
ma tie. omne extinguit ignem in condumqz ichene. **¶** Unde  
frido. in. Snone. in in finem quide magis sancta eulza  
rilia ignem extinguit et suffocat ichenalem. qm aq quem

**F.** cumqz ignem extinguere ualeat corpalem. **¶** Recitatur ad  
capitulu. De. passione. **Archita.** **¶** Tharentem? in. lib. De. Fucab?  
in. Natura. Fitis ualida. reddit inspidum nrm abu. Sic  
fitis opum et reru mundanaru. abum sancte eulzaristie  
in sipidum effiat et amaru. **¶** Unde. Gidonius. in. Epistoli.  
Fitas quippe mundanoru. abum reddit amaru celestiu  
gandioru. **Aristoteles.** in. lib. De. Regimine. priapum. Ad  
alexandru. Nequaquam sumat abus. nisi famelicus pcat  
appetitus. Testante Galieno. in. Anthodiatrico ueteri. q. dno.

**G.** Nequaquam immoderandu. nisi homo sit famelicus. sic qz im-  
moderandu. ut adhuc aliquoties immoderata remaneat appe-  
titus. Sic nequaquam sumendus est abus sancte eulza-  
ristie. nisi desideriu precesserit ualidum mentis nostre  
**¶** Unde Damascen. lib. vii. in. Digne quidem carnem  
et sanguinem cristi sumit. in quo desideriu aut feruor tota  
tie no pcedit. Cetera Regramur in. t. Acta et Registro.



**P**rimus. In Speculo. naturali. In fine solitudinis. ma **Capitulu**  
 gis gerunt ipse auct. In profunda autē soli **De fine.**  
 audine minime. Sic et homines circa finem uite temporalis.  
 maiore sue gauriam faciunt uanitas. **Vnde Galenus**  
 In. Tugurtino. Circa finem uite hominis. maior semper iur- **h.**  
 git metus illicite uanitatis. **Theophilus.** In. Breuiloquo. Di-  
 uersam. aram. In extremitate ligni igne abusti. ex stil-  
 lat quedam aqua. Sic et circa extremitate seu finem  
 uite hominis. saltem adhuc liquor distillet penitentie et  
 doloris. **Vnde. Cassianus.** In. libro Collationum. scōz prim  
 Si nō i uite. saltem circa finem uite. peccator stude-  
 at penitere. **Theremius.** In. Summa naturalium. Enaim.  
 Finiente coturno. uenit ymber. Amis uatō ē. Nā cot-  
 urnū ipm nubem scindit et dirimit. ut pluuia distil-  
 lare quidem possit. Sic finiente erga nos nra dei. **J.**  
 festum ymber sequitur refrigerij sempiterni. **Vnde. ysa-**  
**idorus.** In. De. Summo Bono. Cumqz i nobis flagellum  
 dei finem simulerit. nra mox nobis mētus submissio  
 eliquesat. **Nestorius.** In. libro. De. Oceanum. Circolo. In fine  
 maris oceanum. uersus plagam septemptrionale. montes  
 qui ibi sunt flammifigne estuant tota nocte. Quēad-  
 modū et hi nobis reatant qui nauigant ipm mare  
 Et huius ratio cangetur infra. caplo De uisione. Sic  
 circa finem seculi. igne incipient hoies cupiditatis  
 et auaricie uehementi inflādari. **Vnde. hugo. de. scō**  
**o.** Cum enī finis mudi appropinquauit. mox totus m-  
 dus maligno igne periculosius estuabit. **Aristoteles.**  
 In. libro. problematum. Adueniente pluuia. cessat uētus  
 Sic adueniente ymbre celestis amoris et gracie. finit  
 mox uentus tribulacois et angustie uulsi. **Vnde**  
**hilarius sup orationē.** Cumqz nobis celestis iāmus  
 pro uenerit. mox ois nra tribulaco finem sumit.

k.



**philosophi.** In problematibus. Cuncte in temperies magis  
semper finiuntur i meridie & i media nocte. Cuius ratio  
est. Nam uniusque res tunc quiescit cum vincit aut e  
vincatur. Nunc autem sic est. quod in temperies vincit in  
media nocte. ob solis videlicet abstinentiam. & vincitur  
i meridie. per solis calorem. Quia obrem ut frequenter  
cuncte durarum in temperies quiescit & finiuntur in  
meridie & i media nocte. Sic in temperies molestieque  
mundane. finiuntur maxime i media nocte. Itriusque & pe  
nitencie. atque i meridie amoris & caritatis divine.  
**¶** Unde. Haimo. sup. apocalyp. In dei quidem nobis succo  
lis amore. ois mor finiuntur tempestas tribulatiois &  
angustie uniuersae. **fontan.** In. Descriptioibus comissi.  
Comperitur est. quod dum ambulantes in deserto. quendam  
vermem i mundum extremitate baculi que manu  
gererant attingerent. Atque uenientem baculum tra  
siliens. ad manumque tenentis deuiciens. ipse subito  
in ceremio. Sic sepe attingit. ut dum quis i fine ui  
te sue peccatum amplectitur. ipse inde in sperde & sub  
moriatur. **¶** Unde Richerdus. De Geo. v. qui circa fine  
uite sue peccato se implicat. uidet ne subito procipt  
ous. sine penitencie obeat & discedat. **cometa.** In. lib.  
De Inpitionibus aeris. Fulmen lanceas nocte equit  
cum accendit non i medio sed in fine. uidet & circa fer  
rum Et iteo refert Symphianus se uidisse lanceas e  
quicatum. uelud faculas exarsisse. Sic fulmen vndic  
te divine. maxime inflamat hoies. circa fine uite  
**¶** Unde. Augustinus. cont. faustiv. Circa finem ipse  
status nri mali. uehementia temp accendit ira  
dei. Recurrat ad caput De morte. **archita.** Tharen  
tinus. In lib. De Euenab. In. natura. Qui baculum  
aut gladium incipit leuare i extremitatibus. non potest.



acceptum autē in medio ipm̄ leuat. Sic que se leuare sur-  
sum satagit. circa finem uite n̄ poterit. in medio autē  
sen̄ sanitate prospera se leuabit. **Vnde.** Eusebius. In Ger-  
mone. Frustra minur bona agere. circa finem ⁊ ter-  
minū uite nr̄e. sed dum adhuc sup̄ est ipsa m̄ta. bon̄  
sunt opa facienda. **Reuertatur ad Caplū De abitu. ⁊ por-**  
**Determinato igitur de hoc Aemento. f. Nunc cō-**  
**sequenter agendum. De hac littera. G. ⁊ p̄mo qd̄**  
**De. Gracia. Ad quam reducuntur Capitula. De. A-**  
**more. De. Dilectione. Itē de Iubilo ⁊ De. Gustu.**

**S**olimus. in libro. Reu. dno in pluris leui **Cap. De**  
**or ē om̄ino. qm̄ si pluris p̄moqz careret Gracia.**  
**Sic mens p̄mo adhibitis celestis gratie. leui ē ⁊ oī**  
**bono opere ⁊ m̄tate. Vnde. Augustin⁹ sup̄. ps̄. xl. Qui**  
**p̄ndis celestis gratie assumpsit. leui ad cūcta pro cristi-**  
**sistēda nomine apparebit. Theophilus in. Breuiloquio**  
**Diuinarū. arau. Digita humectata. rem apphensam for-**  
**ais quidem tenent. Sic ⁊ mentes humane. rori i-**  
**uncte celestis gratie. quosiam tenent firmissi beati-**  
**tudinis sempiterni. Vnde Cassianus. In libro. col-**  
**lationū. storū p̄m. gentes quide humane. gracia**  
**dei roride ⁊ liquate. forais tenent gaudia beatitu-**  
**dis sempiterni. Reuertatur ad Caplū. De Amore. Gn̄.**  
**Archia. Tharentinus. In lib. De. Scientiis. In. Nat̄a. Cor-**  
**ni plenti oleo redolent uehement. Cuius ratio est**  
**nam i nullo uase. tanti odoris ipm̄ ē oleum. qm̄ dū**  
**recondit̄ in tra cornu Cui⁹ etiā signū ē. Nam ut**  
**refert Iero⁹ sup̄. libru. Regū. quibet ⁊ reges ex cor-**  
**ni olei asueunt i ungi ab maiore flagit⁹ q̄ proue-**  
**nit ex naturali quēntia olei atqz cornu. Sic**  
**mens plena gratie. sume redolet aspectu pietatis**



clementieq; diuine ¶ unde. Ambro<sup>9</sup>. In. lib<sup>9</sup>. prefatōm  
 In aduentu quippe celestis gratie. summus odor summus  
 maiestati ex celsis **Theophilus**. In. Breuiloquio. Quisq;  
 rum. arant. Virga tracta per ignem. terribilis effi  
 citur. et in restem agrue ad aptatur. ¶ **R.** hic mens t  
 ducta per ignem celestis gratie. in mām electū fa  
 alius beatitudinis sempiternae ¶ unde. hugo. de. scō. v.  
 per fontem quide celestis gratie. ad gaudia dispo  
 nimur et aptamur felicitatis eterne. **Solimus**. In. lib<sup>9</sup>  
 Perit. Corut hircum. sup primas positum et accē  
 simi. cūctos pellic serpentes parit et buffones. ¶ **S.**  
 cor humanū. pms celestis gratie et amoris apposi  
 tum. cūctas pellit a se suggestiones prūcipū in fe  
 vorū ¶ unde. Iero<sup>9</sup>. In. Epist<sup>9</sup>. ad paulū et Eustochiū  
 Cor forte factum in gradat. cūcta fugat et pellic de  
 monia atq; demonū temptamēta. **Themistius**. In. Summa  
 ndan. dñi. Eicm. Ex passionē ad tūcem duorū lap  
 dum. aut ferri ad lapidē. elicitur proptinus quide  
 ignis. ¶ **S.** ex mutuo et felici mē se exercitio dei et ho  
 minis. elicitur quidam ignis celestis gratie et amo  
 ris ¶ unde. Anselmus. In. Sermonē. pulchra signide  
 tie. ignis apitur celestis amoris et gratie. **Constantin<sup>9</sup>**  
 In. Tractatu. De. Naturis liquidoy. Vasa plumbea. Aliq<sup>9</sup>  
 quoq; liquore plena. ante qm̄ ymber adueniat. pms  
 succunt. ¶ **S.** et mentes humane. ante aduentū quide  
 celestis amoris et gratie. sudorem pmitunt et tricio  
 nis et pēitencie ¶ unde. ysidorus. In. De. Gm̄. Bono. Ne  
 quāq; ymber adueniet celestis gratie. nisi pcellit  
 contritio mentis nostre. **Comēstator**. In. lib<sup>9</sup>. De. Inp̄stia  
 mbus aeris. Ex mutuo mē se deursu nentoy. interdu  
 fulmen atq; comitruū generant. Sed de hoc requirē  
 in frā Caplo De vndicta. que uidelz et q sine cause



comitari & fidemur effectum. Sic ex mutuo me se oc-  
cursu dei & hominis. ignis provenit celestis gratie &  
amoris. **¶** Unde. Damascenus. lib. octavo. Cumq; adve-  
nienti aristo occurrimus. mox mens ignem celestis gr̃e  
perapimus & sentimus. **archita.** Tharcentinus. in. lib. De  
Euentibus. In. Natura. Qm̃ dñi aqua in natis & plũbe-  
is. ab igne nullatenus dissoluitur. Sic qm̃ dñi in no-  
bis celestis fuerit gratia. nequaquam dissolui potuit cor-  
da nra. **¶** Unde. Augustin. In. libro. De. Natura & Gr̃a.  
Nequaquam homo latetur. qm̃ dñi a gratia possidet. Re-  
curratur. ad caput De karitate **fontinus.** In. Descrip-  
tibus vniuersi. Aqua nõ penetrat p̃nas auri. s; nõ  
oleum mox pertransit. Sic nõ aqua prauitatis aut  
concupiscentie. s; oleum celestis amoris & gratie. p̃-  
nas penetret mentis nre. **¶** Unde. Fulgentius. In. q̃to  
orichologiarũ. lib. Nequaquam nobis infusa aqua munda-  
ne gratie. sed oleum suauitatis gratieq; diuine. **archita.**  
In. lib. De. Euentib; In. Natura. Nisi claudat vas aliquot  
liquorem retinens. euaporatur & recedit subito tot  
liquor. Sic & nisi mens nra claudat fuerit ad munda-  
na. tota recedet mox a nobis gratia consolatioq; di-  
uina. **¶** Unde. Cassianus. In. libro. Collationũ scõrũ. p̃m  
claudatur mens nra ingressu ueritatis. & mox in nos  
mandat gratia dei ineffabilis pietatis. **palemon.** In. lib.  
De. Signis Naturarũ. Una gutta olei. superfert et  
sup̃greditur multas aquas. Sic una gutta celestis a-  
moris & gratie. supereminet & exellit cunctas uirtutes  
humis uite. **¶** Unde. Cassiodor. sup̃ p̃m. Una gutta cele-  
stium. omne sup̃greditur suauitate atq; uisendiem  
mundanorũ. **Euennus.** In. lib. De. concentib; orbis. Una  
gutta aque frigide. totam ebullitione respicit feruen-  
tis olle. Sic & una gutta celestis gratie & amoris.

v.

x.

y.



ebullitionem restringit omnis molestie Aut doloris. **¶** Unde  
 Haymo. sup. attus. aposto. Una gutta celestis grē. i. abis-  
 sum mittit omne molestia hūmte. **Theophilus.** In. Breuiloq. do-  
 mīnarū. arau. In uehementi frigore. strepuit tecta. **¶** Sic i  
 refrigerio celestis gratie. mentes mor perstrepunt hu-  
 mane. strepitum laudis atqz inbilatōis mterne. **¶**  
 Unde. Ambro. In. Exameron. Tacti intus celesti grā. mor  
 z nos sentimus pcomā solaciaz diuina. **Ar-chita.** In. De Cie-  
 ribus. In. Natura. omia humectata. facilliter se aperuit. sine  
 strepitu z fragore. **¶** Sic z mentes humane. rore humecta-  
 te celestis gratie. facillius se aperuunt aspectu pietatis di-  
 uine. **¶** Unde Cassianus. In. lib. 2. collatōm. scōrū. prīm.  
 fons siquidem gratiarū fluens intra hōiem. omī sibi iūct  
 conditorem. **Theophilus.** In. Breuiloq. domīnarū. arauim.  
 Vno ligneum affectum. positum intra aquam. protinus  
 solidatur. **¶** Sic cor humanū. q. ob culpam confrigitur. dī  
 fontī gratiarū in mergitur. ipm mox eternali solidatur.  
**¶** Unde. ysidorus. In. De Sumo. Bono. Vnus rupta in  
 quatuoribus uarijs. fontibus mox i mergatur celestis g-  
 acie z amoris. **Fontin. ?** In. Descriptōibus. vniū. Afferes  
 ad ignem incuruauer. sed in aqua protinus repantur.  
**¶** Sic mentes humane. a trāmite ueritatis z iusticie ob-  
 liquate. in aquis sunt celestis gratie repante. **¶** Unde  
 Damascen. lib. 9. vñ. cont. Errores Grecorū. Quī i mā  
 dei aut errat aut demat. celestis gratie dirigendus  
 fontibus se in mergat. **copatm. ?** In. Tractatu. De. Natis  
 liquidorū. os mortui hōis in iectum. turbidū facio  
 fontem. **¶** Sic cor humanū. peccō quidem mortuū. fonte  
 facit celestis sibi gratie turbulenti. **¶** Unde. hugo. de  
 scō. v. Peccōr mīnū quisqz. fontem sibi ipsi turbat ce-  
 lestis amoris z grē. **cometa. ?** Sup. gmeralia. Autēne.  
 fulgidissimū efficitur ipsū aurū. cum rore fuerit  
 humectatū. Cum etiam rō tangeretur iustā capitulo.



De visione beata. Sic fulgidissima efficitur mens hominis.  
 qui rore humectatus fuerit celestis gratie et amoris.  
**¶** Unde Iero. In Epistola. Ad Nepocianum. Mens rore in-  
 cincta celestis gratie. non solum sibi sed et oculis effulge-  
 bit pietatis divine. **Fontinus.** In. De scripturis. Vniuersi.  
 patris pater humectatus aque immergitur. sicut vero  
 minime. Sic mens que pater humectata fuerit rore  
 contritionis et penitentie. fontem salutis in mergitur ce-  
 lestis amoris et gratie. **¶** Unde. Eusebius. In. Sermone.  
 pater inquit in nobis fluat rivulus lacrimarum. ante quam  
 fluant fluentes et flumina gratiarum. **Constantinus.** In. Trac-  
 tatu. De. Naturis. Verborum. Brevitate ecclesie. Aut plorat  
 aut gaudent. Aut cantant. Sic divinitate ecclesie celestis  
 amoris et gratie. Aut gaudent gaudio ineffabilis leticie.  
 Aut plorant per ineffabilem gaudio et amore. Aut caritatem  
 caritatem inebriationis eterne. **¶** Unde. Orosius. Sup. can.  
 cana. Qui enim gustaverunt fontem gratie. gaudent et  
 plorant. pre ineffabili quod in tuo renouit solacio et dul-  
 core. **Ambrosius.** In. lib. De. Quatuor. Diluvio. Qui manum  
 in mittit fontem illotam. saporem fontis atque dulcedinem  
 suam auferit. Sic qui mentem mittit ut in tingat  
 fontem celestis gratie in mundam quantumlibet aut illotam.  
 Dulcedinem sibi non auferit tam valida tam ineffabilem. **¶** Unde  
 Origenes. Sup. can. cana. Qui cor suum celesti gratie  
 accipiente in mundum applicat aut corruptum. dei illam  
 ineffabilem dulcedinem nunquam percipiet meter-  
 num. **Constantinus.** In. Tractatu. De Dispositione. Organorum.  
 lacrima melle myrra. omne dicitur auferre caliginem  
 oculorum. Sic lacrima deuotionis anime. melle puritate  
 celestis gratie. omne auferit tenebrarum caliginem  
 semper eterne. **¶** Unde Beda. In. Omne. Lacrima umbram adue-  
 mens gratiarum. omne extirpat caliginem quantumlibet  
 tenebrarum. ecclesie De voluntate. **¶** In. lib. De Signis

. C.

. D.

. E.



lio. lapidum. Crystallus lac sibi naturali quadam virtute in-  
 trahit & in bibit. ut quidem patet de naturalem quemen-  
 tium que inter lac cernitur & crystallum. Tunc etiam signum  
 e. Nam ut refert. Albus magnus. sup. 3. gecharoz. Con-  
 mento. 20. Crystallus auget ipm vis lac mirabilis unius.  
 .f. Sic crystallus in impide puritatis. lac nobis auget & gra-  
 tiam dei ineffabilis castitatis. Conde. Ambro. in. h. p. facio  
 num. Sola nam puritas mentis. domi sumit gre mune-  
 risq; celestis. **plinius.** In. Speculo. naturali. Ante aduentum  
 plume. Aranea exit. musca pinguet. rana clamat & avis  
 alius volat. Sic ante aduentum celestis gre necesse e ut  
 mens nra i actionem foras exeat virtuosam. Disce  
 atq; & pinguet. solum. laudem clamat. diuinam. & alia  
 volat nolite. in dei speciem contemplandam. huc usq;  
 .c. **Constantin.** In. tractatu. De melancholia. post. **Capitulu**  
 sompni. penes gustum aeterna unius. Sic **De. Gustu**  
 & nos post sompni cecitatis & ignorantie. amn? gut-  
 tibus iudicium amoris dulcedinis q; diuine. **Conde**  
 Orosius. sup. can. cantu. Hoc en facit ignorantia &  
 cecitas mentis nostre. ut nobis nil sapiat dulcedo io  
 cunditatis in cerne. **Solmus.** In. lib. Rerum. duos gustu  
 sunt habent in trisecus circa psofagiu. & n extrinsec  
 habent en rostra cornea. Sic sancti viri qui no  
 aures in denu volant. gustu habent. solummodo in tris-  
 secus. celestem solum gustantes dulcedinem. no aut ex-  
 trinsecus. gustantes dulcedinem corpalem. **Conde.** aug?  
 .b. De fide. ad petru. Solo corpalem gustare dulcedinem.  
 ne q mens habeo amictam solacium & dulcorem.  
 .t. **Aurena.** In. vi. orationum. lib. **ligata** pno infecta  
 colericoq; humore. etiam hoc ipm q dulce fuit. amari  
 gustum rependit. Sic ligata sic. humore corrupta  
 puritatis & iusticie. etiam ipm i estimabile iudicium  
 tem iocunditatis interne. amaram reddit gustum  
 mentis nostre. **Conde.** Origenes In. lib. De Decalogo



ceptorū. Corrupto gustu aīe. Amārescit mor suauitas  
 dulcedinis simpiternae. **Alienus** in. Amethodiano. veteri.  
 Mel gustum nostrū exterminat et corrumpit. Cuius sig-  
 num est. Nam post esum mellis. Alia q̄ fuerit cibaria  
 gustum minime iam delectant. Sic gustum ipsius aīe.  
 maxime corrumpit mel voluptatis dulcedisq̄ mūda-  
 ne. **Vnde**. ysidorus. in. De. Humo. Bono. Dulcedo q̄te  
 corporis. gustum omne aufero celestis dulcedis et amo-  
 ris. Recurrat ad Caplū. De subilo. **Aristoteles**. in. lib. De  
 Regimine. principum. ad aliterandū. Culo autem i mā-  
 ne rādenda ē ligula hominū. qui amiserant ipm gustū.  
 Cuius ratio ē. Nam cum ligula sit quoddā membrū frigi-  
 dum et porosum. ideo multū colligit colere et decimas  
 quibus collectis sup lignū. corrumpit. Neque ipse  
 gustus. Sic et ligula aīe. culo depuranda ē. Itacio  
 nis et pēitencie. cum gustum amiserit dulcedis sem-  
 piterne. **Vnde**. Damascen. lib. viij. cont. Errores  
 Grecorū. Nisi ligula ab omni lahe depurata fuerit cor-  
 dium. dulcedinem dei nūq̄ gustare poterit eternum  
 requirere. in. Caplō. De uisione. **philosoph.** in. problemib.  
 Ebriorum quorūlibz naturalit peccat gustus. Sic te-  
 bratorū mūdatis delicijs. gustus peccat oīs. idēgus-  
 tando saporem amoris dulcedinisq̄ celestis. **Vnde**. Oro-  
 sinus. sup. Can. Canet. Quia in ebriatus fuerit i hoc  
 saulo. nequaquā diuinitus gustu inebriari poterit in  
 futuro. **philarecus**. in. tractatu. De naturis. morborum.  
 Quā dū sumus in balneo. amittitur oīs gustus. Sic  
 quā dū sumus in balneo prauis et illicitis voluptatibus  
 amittit mor oīs gustus dei dulcissime karitatis. **Vnde**. **Crisostomus**. in. lib. De p̄rogatiuis sancti. Pauli.  
 Voluptas gustata corporis. iam degustari n̄ sine vo-  
 luptatem eterne dulcedinis et amoris. **ysidorus**. in  
 history. dicitur alib. Formosus cecuciens. Amissa uestigia



sui itineris q̄ percurrit. gustu oris ea facit & inquit. Sic  
 peccator amissa uestigia celestis patrie. gustu ea querat  
 deuotionis dulcedinis q̄ in terne. **¶** unde. hugo. De. Geo.  
 victore. Gustu quidem aīe. querenda ē uia felicitatis eterne  
**Constantin.** In. tractatu. de. Naturis. liquidoru. Natura  
 quidem uenem calis ē. ut cum per edum ignorant  
 sumptum fuerit. gustu ualde dulcescat. post modicu  
 uero t̄p̄o uehementissime amarescat. Sic & dulcedo h̄  
 vice. p̄m̄ quidem gustu m̄o m̄o dulcescit. postm̄o  
 aut eternalic amarescit. **¶** unde. crisostom. sup. orathe  
 Voluptas m̄o dulcescit corporis. tandem aut plena ap  
 parebit eterne amaritudinis & doloris. **Iohāni.** yzago  
 lib. Omnia dulcia corrumpunt gustum. amara ipm̄ re  
 ficiunt & emendant. em̄ rō ē. Nam q̄ amaru sen  
 atre fuerit. q̄z corruptiois in ligaba colligit hoc co  
 sumit. ut refert Galienus. In. Anthoditario. Veteri. Sic  
 dū. & dulcedo corporis. gustum corrumpit interioris ho  
 minis. emendat aut ipm̄ amaritudo penitencie aut  
 doloris. **¶** unde. hilarius. sup. Iohānem. Dulcedo uolup  
 tatis mudatne. stat quā dulcediem pellit aīe. Dulces  
 cet aut amaritudo in posterū huius uite. huc usq̄  
**A**ristoteles. In. libro. De. Regimine. p̄cipu. ad. Capitū  
 All ex. andrū. Vehemens corpus factum gaud. **De. Gaud.**  
 dūm. sompnu dulcem effiat & sustinem. Cuius ratio  
 est. Nam ut reatit auicena. In. vi. medicanthm. libro.  
 Gaudium depurato sanguinem. Depurationem aut sag  
 nis. sompnus comitatur dulcis. ut refert. Euen. Sic  
 ead uehemens gaudū aīe. sompnu dulcem p̄stat b̄  
 audis tempore. **¶** unde. Augustin. In. de. fide. ad. petru.  
 Verum gaudū. quod ex uirtuosa sciencia nascit. tran  
 quillitas uice peccat comitatur. **Aristoteles.** In. lib. pro  
 blematu. Validum quippe gaudium. Actum effiat &  
 in dūat. Cuius causa tangatur in fr̄. Cap. de latma.

• 3.  
no

• 11.

• 10.



Amis etiam signum est. Nam qui subito gaudi fieri ne  
hement. plorant aliquantul. Sic et uerum gaudium spiritus  
quosdam mentis infert gemitus et singultus. **Vnde** O  
rosius. sup. can. canis. Totus gaudens et sperans in dno.  
gemit sine intermissione inquit in hoc mundo. recurrit  
ad caput registratum. De subilo. **philosophus**. in. problematib.  
Gaudium in gaudentibus uocem facit ualidam et obtu  
sam. Testante Eueno. qui ait Gaudentes seu ridentes  
uocem faciunt grauem et magnam. plorantes autem  
acutam. Amis etiam ratio tacta e supra. Sic et gaudium  
aie. uocem grauem facit laudis atqz inbilationis in  
terne. **Vnde** athanasius. pr. m. in. sermo. Grandis  
e uox. in deo sperantes homines. eo q n solu calum. s; et  
aures repleat conditoria. **fontanus**. in. Descriptioibus.  
vniuersi. Gaudium in fert agilitatem. et efficit leuitatem.  
Amis ro e. Nam gaudium depurat spiritus. puritate  
aut spm. agilitas corpus et leuitas comitant. Que  
admodum sup. tactum e. Sic gaudium mentis q ex deo  
prouenit. leuitatem et mirabilem totum hominem efficit et iduc  
**Vnde** Ambrosius. in. lib. De officiis. Qui gaudet in ce  
lestibus. nullus sibi grauis carnicar actus. nullumqz gra  
ue opus. s; totus remanet leuis factus. **costantinus**. in.  
tracta. De melancholia. Gaudium subleuat spiritus. et alle  
uat ipm pectus. Sic et gaudium aie. omne molem ex  
onerat mentis nre. **Vnde** Cassianus. in. libro. colla  
cionu. scorum. parati. Nil tam graue est homini. qd  
no leue sit. gaudio spiritali. **philaretus**. in. tracta. De  
crisi. Subito illapsum corpus gaudium. crisi infirmis  
aliquotiens efficit et induit. Amis ro est. Nam gaudi  
um. materiam dissoluit spactam circa pectoris re  
gionem. Qua soluta interdum creticit que laguens  
Sic gaudium spirituale ipso aie. crisi infert salutem

**A.**

**Q.**

**R.**



beatitudinis q̄ eterne ¶ unde. crisostom⁹ sup. mathen. vñ  
quippe gaudm̄ sciencie. salutem efficit corp⁹ & anime.  
iusticiam inferens beatitudo sempiternae *salutatis*⁹. in libo  
De Regimine Sanitatis. Gaudm̄ quidem corporale. fo-  
**S.** ras mētē de corde totum sagnem et amore. Cuius  
etiam signū ē. Nam vultus in tristitia pallid⁹. s̄ post  
gaudm̄ rubicund⁹. Sic gaudm̄ spiritale in trā hominē.  
omne foras pellit molestiam & dolorem ¶ unde. hu-  
go. De scō. victore. Omne q̄ amaritudinis in interiori.  
laetet hoīe. hoc gaudio menas eicimus meditante.

**Galienus.** In. vi. q̄ medicinali. lib⁹. Quidq̄ corrupciōis cor-  
pectus hominis colligitur. hoc ipsum totū gaudio exsere-  
atur. Sic quidq̄ tribulaciōis in mente nr̄a fuerit. hoc  
totum ē nobis celesti gaudio exalabitur ¶ unde Damasc⁹

**T.** in. Sermone. Omne q̄ in mente nr̄a amaritudinis  
contrahit aut doloris. hoc totum gaudio pellit⁹ diu-  
in refrigerij & amoris. **Theophil⁹.** In. Breuiloquio. di-  
uersariū. arā. Gaudm̄ quidem vltimū aptum cōfert  
roseumq̄ colorem. Sic gaudm̄ verum aīe. rubo-  
rem infert consolaciōis atq̄ iocunditatis eterne

*Sufficienter igitur determinato De hoc Elemento. G.*  
*Nunc consequens agendum. De hac littera. h. Et*  
*primū quidem De honore. ad quem rediatur*  
*Altitudo. Celsitudo. Excellencia. superbia. atq̄ tumor. Ca*

**V.** ¶ **Onemus.** In. Descriptiōibus. vñ. Cumq̄ p̄uulū. De  
vras atq̄ in altum suspendit aut recondit honore.  
Totus in aeternū liquor qm̄ in ip̄o fuerit transfusus  
Sic mens hoīs. in altum levata mūdā culminis  
& honoris. in aeternū cito deueniet eterne ama-  
ritudis & doloris ¶ unde. **Galustinus.** In. Tugēio.  
Semper em̄ altus honor hoīs. humilioris erit ama-  
ritudinis & doloris. **allabici⁹.** In. Theorica. planetarum.



In altis quippe regionibus. longo tempore sanī sumus. sicut cū  
in firmam. citius morimur. Cuius ratio ē. Nam aer al-  
tissimus ē ualde. Subtilis autē aer. sicut raritatem subtile  
et altitatem facit. sic etiam morbum tantum reddit. ut op-  
tendit. Iohānnes. In De. Regimine. Gaudet. Sic et nos  
in altis honoris adminisq; mundam. Dm̄ sanī sumus  
et prosperi. sicut oīo aer atq; p̄iculosus moritur. **¶** Unde  
Girardus. In. Appen. Iuris. Alia quippe honores. periculo-  
sas ī ferre necesse. **Alfarabius.** In. lib. De Diffenā. Regio-  
num. Cumq; fruges in montibus pereunt. fructus autē  
in uallibus multi erunt. Sic fructus celestes. quos hōi-  
mundi abicit et perdit. humilitas eternitē seruabit. **¶**  
Unde. Origenes. In. lib. De Rer. Eccliarū. Omne q; ad  
honorem dei pertinerit. honor mundi abicit et p̄ter-  
it. **Comēta.** In. lib. De. Impiis. aeris. Alce quippe  
nubes. igne semp fulmīs ualidius in flammatur. Cuius  
ratio tanta ē supra. Sic honoratos et exaltatos in hac  
mundo hōes. citius semp magis ferunt in infernales. **¶**  
Unde. Haymo. sup. apocalyp. Quanto nūc in hac mūdo  
hōes prestanti⁹ honorantur. tanto igne iherosolimo in-  
cendy acrius in flammatur. **Themistius.** In. Summa. natura  
lūm. Eūm. Nix quidē in altis montib; nō soluit nec  
liquefat. Cuius signū ē. Nam toto āno. in altis montibus  
Alōge in ciuentib; nix apparet. Cui⁹ eadē ratio tanta est  
supra. Sic nix celestis refrigerij et amoris. neq; nō liq;-  
at ī monte mundam culmīs seu honoris. **¶** Unde. Hugo  
De. sctō. victore. Nūq; in ethē dulcedo illa celestis grē.  
honoratis et superbis datur mentibus degustare. Reque  
De. Alarabie. **Solinus.** In. lib. Rerū. Alia uolatus animi.  
pestilentiā regionū adesse indicant āno illo. Cuius  
etiam ratio tanta ē sup. Sic Alia honores ac sublimi-  
tates hominū. pestilentiā īminere indicant inferno  
rum. **¶** Unde. Haymo sup. apocalyp. Hōes siquidē mū-

X

Y

Z



danorum. eternorum sunt iudicia tormentorum. **Comen** <sup>ar</sup>. Auerroris.  
 sup. lib. De plantis aristotilis. Alia poma arborum. immo  
 ra semp sunt. veribus statureunt. agnis quoqz cadunt.  
**A.** Sic exaltati et honorati in hoc seculo. minores sunt et rep  
 adiores in oculis conditoris. pleni veribus uarie solli  
 citudinis et laboris. uelociter quoqz cadent vima pietate  
 miserie et doloris. **Vnde**. Cipriano. **Orat.** In lib. De. r.  
 Abstinentia seculi. Honorabiles quidem et elati in huius  
 seculi. coram deo sunt contempti et despecti homines. multos  
 ferunt sollicitudines et labores. dolores quoqz tandem ac  
 quient infernales. **Alexand.** Sup. 3. orcharorum. Alce mi  
 bes. pluma non emittunt. Cuius ratio est. Nam alte mi  
 bes sicte sunt uehement. ut refert. Fontinus. eo qd  
 minam sui distantia. non possint a terra humore et  
 crasse seu uaporem. **Sic** et honorati atqz exaltati ho  
 mines huius uite. plumam nequaquam faciunt penitentie. s  
 in sperata et subitanea morietur morte. **Vnde**. Tundal  
 In libro. Reuelacionum. Nunquam reperi Alique sublimi  
 tuerat penitentie mortui. Aut ante mortem suam ex ite  
 ro emendatum. **ptolome.** Almagesti. 1. In. Supiori inter  
 sticio aeris. est sempiternum frigus et sempiterna nebula. c  
 declaratas habita est supra. **Sic** in summo gradu mundi  
 in culmine et honoris. frigus est extrematioqz amoris.  
 atqz nebula pietate caliginis et horroris. **Vnde**. **bdari**  
 sup. **gathen.** Cuius quis ad altos honores uehit. i eo  
 mox amor cristi extinguatur. et mens horrida caligie  
 dampnabiliter obumbratur. **Fontinus.** In. Descriptioib. vni  
 uersi. In alta aeris regione. nulla penitus umbr. uita  
 Cuius declaratio habita est sup. Pullu em. aialm i af  
 aeri fore creditur regione. **Sic** in altitudine mundam  
 culmine seu honoris. nulla prorsus uita celestis gra  
 tie et amoris. **Vnde**. **En.** sup. 9. **Qui** uinit i horibus  
 vere ipse est mortuus. et fortassis periculosus moritur.



**O**mentator. In libro. De Insuperioribus aeris. Igno capm De  
quidem celestis. semper ex sin uatur. ad yma **humilitate**  
cessit et descendit. Cuius signum e. Nam ignis quide fulmi  
nis. Deorsum semp tendit minime uero sursum. Cuius  
easim rati cingetur infra. caplo de uoluntate. Sic igit  
Amoris. qui ex deo profluit. semp deorsum ad yma hu  
militatis tendit. **V**nde. Ambro. In. Exameron. Amor ipse  
celestis gratie. semp yma erigit humilitatis mte Requ  
re. In. 18. De. Altitudine. **Auicena.** In. lib. De. quatuor. Di  
lunja. Dilunju no accidit. nisi aut in uallibus aut in so  
litudinib. nemorosis. Sic om. Dilunju celestis Amoris  
et gratie. in ualle humili accidit mentis mte. **V**nde  
Fulgenc. In. 2. Orithologia. libro. In undatio siquidem  
celestis refrigerij. in ualle et in profunditate accidit cor  
dis nostri. **p. h. m. u.** In. Speculo naturali. dque profunde  
Difficilis cardus quoqz fluit. Sic mentes humiles  
et profunde ipsoru hominu. Difficilis mortis dea  
dunt in profundu. **V**nde. Haymo. sup. apocalypsim.  
Et altum e. Male quid fluit. q aut de psum et hu  
mle fuerit. Difficil cadit. **Theophil.** In. Breuiloquio  
D. n. ar. ar. Quod uehement in terram proiectu  
fuerit. per repulsionem aliquat. sursum salu. **Q**uoz  
ex hoc ipso quod quis in terram humilitatis pectus  
fuerit. alius in deum erigit et ascendit. **V**nde. Sa  
lustino. In. Eugenio. eo ipso q quis a deo humiliatur  
ip. plerumqz ad celestia ualidius exaltatur. **C**etera  
De humilitate requiratur In capto De al. et hore.  
**A**duertendu aut circa pre habita. q ad capitulu.  
De humilitate. infra scripta reducuntur capitula.  
videlicet. Oratio. Cognicio. Penitencia et cotri  
cio. Sufficiens itaqz determinatio De hac lra. h.  
Sue sequent prosequendu De. hoc temeto. **f.**

S.

E.

f.



**P**ontinus. In Descriptioibus vniuersi. Dignus ieiun **Capitulum**  
 no spinto madefactus. a plumbo nequaquam le **De Ieiunio.**  
 dicitur bulliente. Cuius ratio tangetur infra. caplo De. vbo.  
 Sic mens sacro illimita ieiunio. ab incendio nequaquam ledi  
 poterit sempiterno **Vnde. Iero?** In. Epistola. Ad paula z. En  
 stoichum. Ieiunij quippe virtus. omne extinguit igne pro  
 tu cruciatus. **philosoph?** In. problematib? Dignus ieiun  
 hominis maior est z grossior qm abatu. Cuius signu e  
 Nam anulus qui n qit depom a digito. du quis ieiun  
 mus e. depontur mox cum abatus e. Cui? etia causa  
 tangetur infra. caplo De. virgite. Sic spiritus q per  
 digitu sedm Augustinu describit. maior ee semp in ie  
 iunantib? demonstrat **Vnde. hilarius. sup. orathe?** Sic  
 em spiritui dei accipim? cum no solum a cibo. sed et  
 a delicto quolibz abstinemus. **Galenus. In. Anthoditaro.**  
 Veteri nulla medicina pstantior in febrib? vniuersis. qm  
 extenuatio ipsius hois. a cibis z potibus abstinentis.  
 Sic nulla pstantior salus aie. qm tunc aliquacies  
 diuini nois ieiunare **Vnde. Ambro?** In. libro. De  
 Officijs. Nil salubrius aie. nil gratius oculis pietatis  
 diuine. qm m edum ieiunia celebrare. **Aristoteles. In.**  
 libro. problematu. Homo ieiunus gravior e. qm qui  
 cibo patus est. Cui? ratio e assignanda infra. caplo  
 De. viribus. Sic homo ieiunus a grata. gravior  
 redditur. ad cuncta bona opa facienda. seu ad cuncta  
 pro cuncti nois sustinenda **Vnde. hugo. De. sco. victo?**  
 Qui ieiun? e a cibo gratie. i ai gratus e bona ope z  
 iuitate. **Iohannes. In. lib. De. Regimine. Sacerdotis. vobisfe**  
 rum e ualde. ieiunio uentore. nebulam in troire. Sic  
 periculosum e aie. ut ieiun? quis seu natu? a cibo g  
 tie. nebulae se implicet h? uite **Vnde. Damascenus**  
 lib? viii? In periculum uergit. corporis z anime. ut  
 in statu quis putat miserie. a celesti presumat g natu? qe.



Sufficienti itaqz determinato. De hoc elemento. i. sunt  
consequent' agendum De hac scia. sc. Et p'mm quidem  
De. karitate. qd quam reducitur capitula De Dulcedine  
Item. De. Gustu. De. Iubilo. De amore. Item capitula  
De. Dilectione. Item De. Attentione. In amore. *Christi*

**P**onimus. In. Descriptioibus. vniuersi. Ebur decoctum cap. De  
In vno fora. molle atqz flexibile efficitur velud karitate  
tera. Sic ebur lissime dentatis. vno decoctum m'e ferui  
de karitatis. Flexibilioris ex hoc erga nos efficitur pietas  
tis. Unde Orosius. Sup. Can. Cantu? Cumqz artus per  
amorem i mente accenditur. mox ois nra dei erga ho  
minem mitigatur. *Th. cophilus*. In. Breuiloquio. Quisqz arti  
um. Digitus ad ignem lesus. ut quidem sanetur facili?  
ignem e demio applicandus. Cui? ratio tange't infra. cap.  
De voto. Sic mens igne allisa prane percipit. mox ig  
m sanctanda applicetur amoris atqz karitatis diuine  
Unde. Origenes. In. libro. De. Rit. Eccliaru. Lesus qd  
ab igne prane atqz illitate voluptatis. igne sancte dei  
felicitissime karitatis. *Aucten*. In. lib. De. quatuor. Diluio  
ois fons maior atqz diffusior e noctis qe qm in die  
Cuius ratio tange'tur infra. caplo. De. Virginate. Sic e  
fons karitatis diuine. maior atqz exuberantior e i nocte  
tribulatiois e penitencie. qm in die felicitatis affluencieqz  
mundane. Unde. Cassianus. In. libro. Collat. scz. pr.  
Fons quide dei rotundissime karitatis. magis diffunditur  
i metibus tribulatiois. qm in mundi hui? felicitatib? p'spe  
ratis. *Archita*. Tharentinus. In. lib. De. Euentib? In. Natu  
In vasis quide argenteis seu aureis. difficulter valde  
bullire potat ipa aqua. Cui? ratio tange't infra cap.  
De. venustate. Sic in auro seu argento mudi h? exse  
crabilis namctatis. nequaquam bullire poterit aqua.  
dei felicissime karitatis. *Alzabit*. In. Theorica. planetar



. N .

. O .

. P .

Qui in profunda aut in fonte collocatus fuerit. stellas in  
die clare limpidèq; videbit. Cuius ratio tangetur infra  
capto. De visione. Sic qui in fonte profundatus fuit.  
divine atq; mellifue karitatis. veritatem contemplat  
impudens petre deitatis. **¶** Unde. Dionysius. In lib. de  
celesti. jerarchia. Cuiusq; de karitate pfundum. fonte  
mox karitatis deum uernis contemplamur. **Solimus.** In.  
libro. Peru. In estu quippe uehementi. pisces sursum se  
hinc extra aquam. Sic et mentes humane in estu  
quidem karitatis diuine sursum saluant de aquis p  
sentis miserie. in altu beatitudinis sempiternae. **¶** Unde  
Augustinus. In lib. Soliloquiorum. In dei karitate etiam  
ipsa mens hominis. in altum mox erigitur felicitatis  
beatitudinis qz celestis. **ysidorus.** In historiis naturalibus. Ser  
pens transiens fluminem. prius sursum emittit enom qz  
uenenū. Cuius ratio tangetur infra. capto de ve  
nis. Sic mens hominis. fontibus in silens karitatis.  
omne necesse est prius emittat uenenū amantibus pra  
munitis. **¶** Unde. Damascus. pp. In sermone. Omnisq; igit  
hominis. antequam karitatis igitur fluminem. omne p  
ius sursum seclus egerat et peccatū. **fortius.** In Descriptio  
nibus. Omnis. Incendio grandi facto. rubescit perpen  
diatū totū celū. Cuius ratio tangetur capto De  
visione. Sic et in incendio beatissime karitatis. mentibus  
quidem humanis. rubet et illucet celum altissime trini  
tatis. **¶** Unde. Dionysius. In lib. De diuinis. Nominibus. Cuius  
karitas dei in mentibus nostris accensa fuit. mox to  
ta nobis diuinitas in fluit et luceat. **Aurēna.** In libro  
suorum. gmeratū. In quocūq; loco. nocturno tempe  
flamma eruperit super thalam. ibi thesaurus latitare di  
noscat copiosus. Cuius ratio tangetur infra. capto. De  
uilitate. Sic in quocūq; hominis. flamma diuine gra



serit karitas. ibi thesaurus fore dicitur pectus dea-  
tis. **Conde.** Cassianus. in lib. collationum. secundum primum. ubi ipse  
in cendum karitatis. ibi et thesaurus pectus voluptatis.  
**Euenus.** in libro. De concentibus. oritur. Lapis cadens in aqua  
ores in ea effectus efficit et relinquit. Nam spuma gignit.  
strepitum efficit. Aquam sursum salire facit. circulumque de-  
scribit. Sic mens hominis. fontibus madens karitatis. et  
in se effectus relinquit. Nam spuma gignit deuotionis  
in time. strepitum efficit laudis diuine. mentem sursum  
salire facit in altum superne glorie. circulumque descri-  
bit felicitatis eterne. **Conde.** Eusebius. in Germanice.  
sens karitatis inmensa. in effabilem in se deuotionem  
percepit. diuinis laudibus feruenter insistit. se ipsum us-  
que sursum tollit. sed et eterne beatitudinis se ascribit.  
**Exar.** in libro. De signis. lapidum. aque fluentes in  
aurum. aurum ex se profunt atque nobiles margari-  
tas. omnis ratio tangetur infra. capitulo. De virtute. Sic  
mentes quidem humane. ad aurum uergentes melius  
sunt karitatis. aurum in se capiunt pectus deitatis.  
**Conde.** Richardus. De sancto. victore. Quia karitatis se  
in miserit. ipse profecto tota diuinitate natus  
numquam erit. **Aristoteles.** in libro. problematum. Que ne-  
helement sunt dulcia. per minima in dulcedine amara et  
aliquasiter estimantur. omnis ratio tangetur infra et  
De voluptate. Sic et ipsa dulcedo atque suauitas ka-  
ritatis diuine. per minima namque atque inestimabili in  
dulcedine. peccatrici quidem anime. amara in capite  
apparet. **Conde.** Orosius. super cantica. cantica. In i munda  
quippe anima. christi illa suauissima karitas non dulcescit  
sed uehementissime amorescit. **Constantinus.** in Tractatu  
De Naturis liquidorum. Post cibum amarum. potus qui  
superbibilior. dulciior degustatur. omnis ratio tangetur

.Q.

.R.

.S.



in frā. Capitulo. De. Virginitate. Sic abū. post abūm Anna  
 rīm pēcentie. potus degustatur Dulcis caritatis dis-  
 cedimus qz in cerne. **Conde.** Ambrosi⁹. In. lib.º p. facōm  
 amaritudinem hominis. fons p. fundit p. etne caritatis  
**T. Philaretus.** In. Tractatu. De. Naturis. Genitorū. Pedes  
 in frigidatū aut frigore mortuū. nō aque calide sed  
 frigide t. mergantur. Cūis ratio tangeť in frā. caº  
 De. Veritate. Sic affectiones aīe. p. eto quide mor-  
 tue. non calori prane cupiscentie. s. frigori in tē-  
 gantur caritatis diuine. **Conde.** hugo. De. Gco. v.  
 Corda quide p. eto mortua. nō ipā prana cupiscentia.  
 sed caritas refrigerat unificatqz diuinā. **Theophilus.**  
 In. Breuiloquio. Diuinarū. Arā. Qm silem i ore  
 tenuerit. dum bibit. potus bibenti mox dulcor-  
 atqz suauior apparebit. Cūis ratio tangeatur in frā  
 Caplo. De. Cristo. Sic qm cristum in mente semper  
 tenuerit. caritatis eius dulcedinem prestanti⁹ degus-  
 tabit. **Conde.** hilarius. sup. iohānem. Nisi em qd in  
 tus in mentem cristum suscepit. cristi ipē suam  
 tatem z dulcedinem nullaten⁹ degustabit. **Archita.** Illa  
 ventius. In lib.º De. Elementis Nature. Qm manum  
 aut pedem inquerit in aqua calida. calorem aque  
 sentiet percipietqz calorem Cūis ratio tangeť. caº  
 De. voto. Sic qm se mouerit atqz exercitauerit in  
 bono opere. maiorem calorem in se sentiet amo-  
 ris atqz caritatis diuine. **Conde.** Gidomus. In. Epri.  
**X.** Exercitiū virtutis sedulū. solū libet caritate re-  
 frigeratqz diuinū. Recurratur ad Caplū De amore.  
**Cōstantinus.** In. Tractatu. De. Naturis liquidorū. Omnis  
 fons exstat dulcor noctis tempore qm in die. Cū  
 ratio tangeatur in frā Caplo. De. Virginitate. Sic z fons  
 caritatis diuine. Dulcor mirū semp ē i nocte







**Aucebron.** In libro. fontis. vite. Igms copiosius lucet noctis  
tempore qm̄ in die. Simis ratio tangetur in f. a. caplo  
De visione. Sic igms karitatis diuine. copiosius qm̄  
dem lucet in nocte tribulacōis & pēitencie qm̄ in die  
felicatis affluentieq; mmdane. ¶ **Vnde.** Damascen<sup>9</sup>  
**B.** In libro. contra. errores. Gregorū. Lux m̄qm̄ karita  
tis afflictis irradat. Diuibus autē hm̄<sup>9</sup> se oc  
cultat. **fontin<sup>9</sup>.** In. Descriptōibus. vniuersi. Igms p̄ aqua  
nō exstinguitur. q̄sq; dnam strepitū & fragore. Sic  
karitas in mente hominis nō exstinguitur. nisi fragor  
p̄petui gemitus coinceatur. ¶ **Vnde.** Haymo. sup. apocalip  
Ex quāta karitate cristi in mente hominis. mor igms  
in flāmat̄ nallidus in fernalis. **Alexand<sup>9</sup>.** Sup. 3. ge  
tharorū. Igms fulminis sen comitū. solo igne exstingui  
tur corporali. Simis causa tangetur in f. a. caplo. De  
vndicta. Sic igms dei dulcissime karitatis. solo igne  
conspiscencie exstinguitur corporali. ¶ **Vnde.** Augustin<sup>9</sup>  
**C.** cont. faustū. Nil tantū inrentem extirminat cristi fe  
licissime karitatis. sicut igms prane acq; dampnabi  
lis voluptatis. **Comētor.** In. hb<sup>9</sup> De. Impulsiōibus. aeris.  
Igms inuicatur ros maxime a natura. Simis sig  
est. Nam in eo loco ubi ros cecidit. igms difficilime  
exardescat. Simis etiam ratio tangetur in f. a. caplo  
De. veritate. Sic igni p̄petue karitatis. inuicatur  
minū ros corruptibilis voluptatis. ¶ **Vnde.** Hugo.  
De. Geo. v. Nil prorsus karitati cristi hostilis. qm̄  
prane voluptatis & concupiscencie in agris d̄pe  
tens. **Theophilus.** In. Brenitoqmo. Diuinarū. arcū. In  
fine sen in extremitate ligni abisti. quidam exst  
lat liquor. aptus & agris medicine. Vne admodū  
in hōmbus cernim<sup>9</sup> vniuersis. Sic & in mētib<sup>9</sup>  
humans. igne accensio dei impide karitatis. liquor



Amor et refertur pietate voluptatis. Unde. Fulgentius  
 In. quarto. orthologiarum. libro. Gens accensa in crisi et  
 estans haritate. iam in celerum delectari incipit vo-  
 luptate. **Archita.** Tharentinus. In. lib. De. Euentib. In. sta-  
 una gutta aque frigide. totam ebullitione respicit fer-  
 uentis olle. Sic una quibus minima gutta haritas  
 diuine. omnes delicias exsuperat huius vite. Unde  
 Iero. In. Episto. ad Nepocianum. Una namque harita-  
 tis gutta minima. solatia huius mundi transcendit et  
 super greditur inuversa **Constantin.** In. Tractatu. De. Natio-  
 Liquidorum. post esum mellis. alia quod fuerint cibaria.  
 gustum minime iam delectant. Omnis ratio tangeatur  
 in. sta. capitulo. De. Virginitate. Sic et post esum dei  
 mellis atque iocundissime haritatis. iam abus omnis  
 desinit totius que ex cogitari potest voluptatis. Unde.  
 Grego. In. oratione. super. Iob. Qui semel gustauerit  
 aut bibit haritatis crisi flumini. in mundana dulcedine  
 inquam delectabitur in eternum. **Auerrois.** In. lib. De.  
 Sompno. et vigilia. Qui in xra ignem aliquem obdor-  
 merit. ignem in sompno visiones sompniarumque uidet  
 Omnis ratio tangeatur in. sta. capitulo. De. Visione. beata.  
 Sic et cuius in animus circa ignem quiescit  
 haritatis diuine. visiones mox quasdam tenaces be-  
 tudinis sempiternae. Unde. Dionysius. In. De. celesti. Je-  
 rarebia. Qui haritati inicitur. iam profecto in ce-  
 lestibus iocundatur. Recurrat. ad caput. De. amore.  
**Archita.** Tharentinus. In. lib. De. Euentib. In. sta. sta-  
 tis exinguit ignem una gutta roris. quoniam gutte atque  
 innumere pluuialis. Omnis ratio tangeatur in. sta. ca-  
 De. vanitate. Sic magis exinguit sitim mundanorum  
 una gutta dei beatissime haritatis. quoniam omnis dulcedo mu-  
 dane atque suauitas naturae. Unde. hugo. De. God-  
 victore. Magis una nos gutta refrigerat haritatis.

.F.

.F.

.G.



quoniam omnes delitiae mundane et excretabiles voluptatis  
**Comētator.** In libro. De Inpugnabilibus aeris. Ignis quidem  
 fidum accendit et comburit reas. super aqua. extra  
 uero minime. Cum ratio tangeatur in fra. capitulo.  
 De uindicta. Sic ignis karitatis diuine. solummodo  
 in flamat in aquis afflictionis angustieque mundane  
 unde. Cassianus. In libro. collationum secundarum per atrium  
 Ignis quidem karitatis. flammam suam mittit solum  
 modo tribulatio. **alexand.** Super. 3. exheretorum. Exiit  
 te igne flammis in nubibus. totum protinus comi  
 tatur. Sic karitate extincta in mente hominis. totum  
 in mer consequit perue molestie et terroris unde  
 haymo. Super. actus. apostolorum. Crisi in nobis extincta  
 karitas. molestias inferet atque miseras semper  
 natus **Themistius.** In. Summa. naturarum. Antium. Propter  
 roris et prunne. in die non descendere sed in nocte. et  
 ratio facta est supra. Sic et ipsum est karitatis diuine.  
 nequaquam nobis desuere in die felicitatis et affluentie  
 sed in nocte contritionis et penitentie unde Ambrosius  
 In. Exameron. Li. vii. Non in die felicitatis et affli  
 entie. sed in nocte contritionis et penitentie. ymber no  
 bis distillat karitatis diuine. Requirit de. amore  
**Comētator.** In libro. De Inpugnabilibus aeris. In eo loco  
 ubi ros in die cadit. ignis diffialime exardescit.  
 Cum ratio. tangeatur in fra. capitulo. De. uisione.  
 Sic et in mente hominis. in qua ignis diuine karitatis  
 estuauerit seu amoris. ignis nequaquam accendetur  
 per seum supplicij et doloris unde. Cassiodorus Super  
 ps. ubi estuauerit crisi karitas in corde hominum.  
 multa omni pena puto esse potest uelut **Costant.** In  
 tractatu. De. staturo. liquidorum. Quanto magis flos  
 aliquis exhamatur. tanto dulcor degustatur. Cum  
 ratio tangeat in fra. capitulo. De. ueritate. Sic quoniam



magis fons hauritur karitas diuine. tanto tunc ple  
 mor. et prestantior. omni dulcedine et sapore **Ex**inde  
 Crisostomus sup. mathen. Quanto magis karitas de  
 gustamus dulcedinem. tanto ulteriorem suauitatem per  
 cipimus et dulcorem. **Aurea**. In libro. Inuicem. omni  
 fons aureum fundum habens. in estate lucet ingiter  
 tota nocte. Cum ratis tangeant. infra. caplo De  
 virtute. Sic karitas in fundo scaturiens cordis hu  
 manum. lucem prebet ingiter ratiq. sempiterni **Ex**an  
 Diomius. In De Di. Noibus. ca. 2. Karitas no  
 ardet in mente hominum. nisi et luceat et fulgeat in  
 eternum **Comenta** or. In libro. De. In p. l. i. omb. Aeris. Cuius  
 ros ceciderit. die illo serenitas p. l. i. erit. Cum ratis  
 est. Nam serenitas ex puritate aeris pronem. ut  
 refert. Euemus. Defluxus aut. roris. serenitate facit  
 Aeris. ut reatit Comenta. sup. 3. m. g. e. harora. Sic  
 in descensu m. r. nos karitas diuine. tranquillitas  
 comitatur et pax beatitudinis sempiternae **Ex**inde. Cuius.  
 In. Sermones. Dum em. quid karitate perfundit. mea  
 ip. s. p. r. o. celesti lumine serenat. atq. etia fel  
 acia comitatur **Archita**. Thadrentinus. In. lib. De. E  
 uenibus. In. Natura. Corp. ante mortua. rore nulla  
 tems madefiunt. Cum ratis e. Nam queda exalta  
 ciones corrupte dum euaporant. descendetem rore  
 exterminat et desiccant. Cum ratis etia signat e. Nam  
 ut refert. plinius. In. Speculo. naturali. Nix nunq.  
 descendit in mare oceanum. Gratia em. calida. que  
 ex mari oceano sursum tendit. minem anteq. des  
 cenderit. liquefacit. Sic corda humana. ob culpam  
 quidem mortua. nequaquam perfunduntur karitate  
 dulcedine q. diuina **Ex**inde. Grosius. sup. can. can.  
 Nos quide. die. fugat a se m. r. am karitatis iter  
 ne. Recurrit ad caplin. De Dilectione sup. Theophilus

I.

7.

M.



**Theophilus.** In Breuiloquio. Dicitur. Arcu. Aqua non pe-  
netrat penitus animum. sed eas oleum magis pertransit.  
**Fit** mentes humanas. non penetret aqua illuc no-  
luptatis. s. oleum dei dulcissime karitatis. **Vnde.** Au-  
gustinus. **Sup. ps. xl.** Non intrat usque ad atri-  
um aqua cupiditatis mundane. s. oleum karitatis dulcedinis q.  
interne. **fontanus.** In De scripturis. vniuersi. vasa plu-  
bea. aliquo q. signore plena. Antequam ymber adueniat  
sudent. Omnis raso tangetur infra. **De vena.**  
**Fit** et mentes humane. Antequam ymber adueniat ce-  
lestis amoris. karitatis et gratie. ymbrem emittant  
contritionis et penitentie. **Vnde** Richardus. De. Geo-  
victore. Ante ante aduentum quippe diuine karitatis  
et amoris. mens nostra ictu feriat. penitentie et doloris  
**Constantinus.** In. Tractatu. De. Naturis. liquorum. Nisi clau-  
datur vas liquorem retinens. euaporatur et recedit  
subito totus liquor. **Fit** nisi claudatur mens hominis  
mundane ingressu uiciorum. recedit magis totus liqu-  
or dei dulcissime karitatis. **Vnde.** Cassianus. In lib. Col-  
laconum. reorum. prim. Nisi cor nostrum ad mundana op-  
ertum et clausum fuerit. tota e nobis karitatis io-  
cunditas desinit et recedit. **Genetibi.** In lib. De. Gero.  
Orbis. fulgidissimum efficit nunc aurum. quod rore fuit  
humectatum. Omnis raso. tangetur infra. **capto** De. Vita  
**Fit** fulgidissima mens hominis. que rori in ancilla fuit  
humectata. **Vnde.** ysidorus. In. De. Gumo. Bono. **res**  
rore humida karitatis. fulgidissima e in oculis felici-  
tatis. **Theophilus.** In. Breuiloquio. Dicitur. Arcu.  
**Quia** dum aqua in uasis est plumbeis. ipsa uasa ab ig-  
ne non liquefunt. **Fit** quia dum aqua diuine karitatis  
et refrigerij in mente fuerit. ipsa mens. nullius igne  
molestie liquefat. **Vnde.** Damascenus. lib. octa. **et**  
nante in nos cristi dulcissima karitate. iam mens  
ipsa libera ab omni erit sceleris prauitate. **Auicebron.**



Sufficient igitur determinatio de hoc elemento. 12.  
Sunt consequentia Agendum. de hac ita. l. Et primum  
quidem. De lumine. Ad quod reducuntur capitula  
in si. Ascripta. videlicet de cognitione divina. Item.  
Capitulum de contemplatione. Item. Cap. De iubilo.

**A**vicebron. In libro. fontis vite. omne lumen. capitulum  
supra nunciente altero lumine. quodammodo ob  
umbratur. Quodammodo videtur quod lumen lune. solari obum  
bratur lumine. et lumen ignis. lumine quidem solis. Sic  
lumen celestis amoris et gratie. lumine obumbratur et  
obteguntur huius vite. Unde. Dionysius in libro. De. Divi  
nitatis. Nominibus. capitulo. 32. lux namque ipsa celestis radij.  
lumine obtenebrat et obruit corporali. **comentarius** in libro.  
De. In primis. aeris. Lumen quippe solis. virtute et  
lucem ignis distrahunt vehementer. Cuius signum est. Nam  
ut ait. Euennus. Ignis copiosius ardet et lucet. noctis  
tempore quam in die. Sic lumen mundane felicitatis  
et affluentie. ipsum lumen extinguunt et distrahunt huius  
vite atque infirmitas eterne. **Comentarius**. hugo. De Sancto  
victore. lumine quidem mundane felicitatis et affluentie  
lux ipsa extinguuntur infirmitas atque beatitudinis sempiternae  
**Alkabit**. in theoria. planetarum. Stelle quidem. lucente  
lunari lumine minus lucent. Cuius signum est. Nam  
lucente luna. pauca lucent pauca que apparent stelle.  
Sic nobis lucente mundano lumine. iam quidem non  
lucent luminis felicitatis eterne. **Comentarius**. Damascenus  
in libro. contra. Errores Grecorum. In luce itaque mu  
dana. celi illa absconduntur luminis vniuersa. **Theophilus**.  
in. Brevissermo. Diuisarum. Arcum. Lumen extinguunt. feto  
rem efficit vehementem. Quodammodo videtur in can  
dela cerea. que dum extinguuntur. fetor fragorosis atque  
pestiferis generatur. Sic lumine in nobis extincto  
celestis amoris et gratie. fetor magis in surgit pe

2.

5.

11.



V

X

V

naturalis. caligine qz eterne. **V**nde. fortunatus. In. Omelia.  
 Cumqz intra nos lux divina extinguatur. in fernalis  
 nox caligo & tenebra comitatur. **C**onstatinus. In. Tractatu  
 De. Naturis. liquidoru. Lumen desiccatur naturalit. humo  
 rem & aquositate[m] corporu uniusam. Sic lumen eterne  
 candoris seu gratie. omne humore exterminat & de  
 siccatur tribulatio[n]is & angustie uniuerse. **V**nde Beda. In  
 Omelia. Nil mali mensura[m] extinguit. qd no in dei  
 lumine p[er]uenit euanescit. **C**aladi. **S**up. thymeu. pla  
 coms. In lumine extrahuntur foras de in carceribus ca  
 uernulis suis cuncti sensus. Sic & in lumine candoris  
 diuini. cuncti quidem sensus humani. foras trahuntur  
 de tenebris carceris sui. in lucem refrigerij sempi  
 terni. **V**nde. Damascen. In. lib. cont. **E**rrores Gre  
 coru. Tota mensura absorbetur ratio hominis. in luce di  
 uini radij & candoris. **philareus**. In. Tractatu. De. Natis  
 oroboru. In lumine quidem sam efficiuntur famores.  
 & in firmi infirmiores. Quis causa habita e supra  
 Sic in lumine celestis gratie. isti maiori gaudent sola  
 cio & dulcore. mali aut & misam. maiori torquentur  
 miseria & dolore. in quantum se illam eternam memorant  
 beatitudinem amisisse. **V**nde. Haymo. **S**up. apocalyp. Illa  
 in qm eterna felicitas. istos letificat. malos aut magis  
 cruciat. in quantum hi gaudent de felicitate accepta.  
 isti aut misant de perdita beatitudine seu amissa. **A**uerrois  
**S**up. libru. De. memoria & Reminiscencia. Lumen ex sui  
 natura obliuionem aliqualem infert ingenijs sensib[us] qz  
 humanis. Quis causa. tacta e sup. Sic lumen celestis  
 gratie. obliuione in nobis facit mundi hui[us] tribulatio[n]is  
 atqz angustie uniuerse. **V**nde. hilarius. **S**up. gathen.  
 Cumqz in nobis lumen diuini exarserit. omne nox a  
 nobis tribulacionem molestiamqz fugabit. Reque Dexp.  
**philosophus**. In. problematib[us]. Lumen sursum trahit pulue



res. athomosq; solares. Cuius signum est. Nam athomi at  
 cendunt in solis lumine. in tenebris uero minime. ut re  
 fert. fonsanus. Sic et lumen aie. ipsum sursum percrabit  
 in altum iocunditatis celsitudinisq; supne. **Vnde.** hugo  
 De. sto. victore. Nulla adeo gravis mens hois. que no  
 sursum tendat. in luce celestis luminis et cantoris.  
**Cometator.** In. libro. De. inspiromb? aenis. Lume accensu  
 in domo. utrum piosolum fulminis repmit et restrigit.  
 Et estante themistio. In. Quina naturatu. Enau. q aie.  
 cont. filmen siue ualeat accensio candelaru. Rata  
 comitru obstat murm resonantia campanaru. Quoz  
 eadem cause tangetur. in fr. caplo De. vho. Sic lumi  
 accensum in domo aie. utrum diuine sedat repmitq;  
 vndite. **Vnde.** iero? In. Ep. ad paulam. et Eustochiu  
 Limpiditas quide cordis mri. impetam sedat ire atq;  
 furoris diuini. Huc usq; de lumine diuino actum est  
**S**olimus. In. libro. reru. In fine quide omnis **Cap. De**  
**solitudis.** magis garriunt ipe aues. Cuius. **Laudes.**  
 ratio e. Nam in profunda solitudine. aues sunt fero  
 ces. que dicuntur piones. quas timentes. fugiunt ex  
 silium. ut refert. phinno. In. Speculo. naturali. Sic  
 et mentes humane. in fine saltem huius mte. gar  
 riu faciant laudis atq; inbulacois mercede. **Vnde.**  
 alanus. In. lib. De. dulcedine aie. Qui torpuit in mte.  
 saltem adhuc circa extrema sua. laudes perstrepat  
 et comit q; diuina. **philosoph?** In. vi. aristoteli. libro. Catus  
 galli mediotectus. fugat et dissipat fanta smata um  
 nersa. Et hoc idem testatur beatus grego? In. 902.  
 Sup. iob. Cuius eadem ratio. tacta e sup. Sic aut  
 diuine laudis. cunctam pellit molestiam uersuie in  
 fernalis. **Vnde.** Anhardus. In. Ep. ad. kret. Neqm  
 ibi permancebunt demones. ubi diuine perstrepiun  
 tur resonant quoq; laudes. **Centobius.** In. lib. De. giro  
 orbis. Oriente sole. mri mox in orientali lib? pab?



**Laus Divina.**

fradgores atqz strepitus audiuntur. Iuxta id qd ait fontinus  
In. Descriptibus. vniuersi. Legunt aures suas. & specus. An  
tra quoqz terre advenit. homines illi qui in orientibus  
sunt partibus. ob solis qui ibi fit strepitum seu fradgore  
fit & in sancta ecclesia. solari quidem luce exorta. mox p  
comis intonent resonentqz divina. **Unde. Origenes.**  
In. libro. De. Rit. ecclesie. oriente sole. audiamur in nob  
ver laudis atqz iubilationis interne. **Refratur. ad caplm.**  
**De. iubilo registrati. Aristoteles.** In. libro. proble. Voces.  
siquidem minnerse. remotius audiunt noctis qpe qm in die  
divina causa multiplex a philosophis assignatur. **Dicit**  
**Thomastus.** In. Summa. naturalium. Enan. qd nax sit uacua.  
a lumine uidelicet & calore. **Theophrastus.** In. De. parte. Ge  
siana. dicit noctem ee frigidam & humidam. Et qd voces  
remotius audiantur in frigido & humido. qm in calido seu  
in sicco. **Simplicius** autem. In. lib. commentorum dicit noctem  
tranquillam fore quodammodo & quietam. In quieto aut  
ut ipse asserit dicit. voces audiuntur remotius vniuerso  
hinc etiam sententia pferat. **Euemio. Alfarabius.** id  
In. lib. De. Differentia. Regionum. sic ait. constat in quibus  
quiescente uno sensu. Alios magis vigere sensus. mag  
inter quos videtur colligato naturalis. ut e niter  
uisum pariter & auditu. Sicut autem sic e. qd noctis in  
tempore. quiescit aliquantulum ipse sensus. Quod bre spiri  
tus visuales reflectuntur aliquantulum ad auditu. **Quod**  
tingit audiri melius noctis qpe qm in die. **Sic**  
& voces laudis divine. tendit exardit acies in noc  
te tribulationis & penitentie. qm in die felicitatis affue  
cieqz mundane. **Unde. hymo. sup. apoclip.** Dulcissi  
ma vox laudis sue in auribus conditoris. qua qd  
in dolore fecerit mundane molestie seu doloris. **Unde**  
**De laude. Refratur In. Capitulis registratis philaretiis**



**P**hilarecus. In tractatu. De crisi. Cumq; i mor. *Capitulo*  
 bo. natura fortit' pugnauerit. morbu cito *De Lite*  
 citat & expellit. Si aute natura vincatur. languens p  
 cinis morietur. *Fit* & in statu huius inter. fortem ne  
 cesse e hoiem. litem assumere. *Fit* morbos malicie vin  
 uerse. *Fit* si mens dimicta fuerit. morte eterna pro  
 addubio interibit. *Vnde. Aug. In. lib. De victo. ap*  
*ana. Nisi mens nra. foris quide dimicatione pugnau*  
*rit. mens ipa profecto morte periet sempiterna*  
*Comestator. In. lib. De Inpitiobus. aeris. Et foris in cer*  
*se. mmonoz gauru uentoru. interdu fulmen atq;*  
*tonitru generatur. Fit ex lite. quam sibi assumunt*  
*hoies. terrores & ictus sibi efficiunt m finales* *Vnde*  
*Cassianus. In. libro. collationu. scoru pnt. Qui em*  
*unt lite sua terrent homines. trebunt & eos post*  
*hanc vitam priapea i finales. Archia. Tharentinus.*  
*In. lib. De. Euentibus. In. natura. Et conuisione ad m*  
*uicem duoru lapidu. elicitur quidam ignis. Fit et*  
*ex hagio mentis. cont' carnis mens. sepe elicitur di*  
*lectio karitas q; diuina* *Vnde. Ambrosius. In. Exa*  
*meron. Sepe eten bello carnis & spiritus. ita cam*  
*si uicerit spiritus. quidam comadit cantor radi q;*  
*diuinus* *Solmus. In. lib. Peru. Et ano quo anes d*  
*alco pugnant aere. pestilencia inferioru regionu*  
*uulda. neced q; & strages plurime comestatur. Qui*  
*raco e. Nam natura quodam mstrictu. anes cer*  
*ram fore corruptam sentiunt. unde & in Alenm.*  
*at si fugiant se ex collunt. Fit & dum hoies sibi*  
*litem assumunt mutua. pestilencia sibi vnnere.*  
*inducant sempiterna* *Vnde. Origenes. In. libro*  
*De. Put. et caru. Bella & hagio hominu. maloru*  
*ut frequen sunt ptingit futuroru. Recitatur.*  
*ad caplm De pugna. In de certat Aristoteles.*

*f*

*G*

*h.*





**A**ristoteles. In libro. problematu. Lacrima que a **Capitulum.**  
 colore provenit. falsa est ualde. que autem **De lacrima.**  
 uento effluit. dulcis. Cum ratio tangetur infra. Caplo  
 De. voto. Sic lacrima. que a mundi huius molestia deue  
 nit. amara cernitur. que aut a uento causat celestis  
 refrigerij. dulcissima demonstrat. **Vnde.** Orosius. Sup  
 Can. Cana. **¶** Nil dulcius qm sit lacrima. ex dilectione p  
 ueniens dulcedinemqz diuina. Recordar ad caplm De. luc  
 tu. **fontem?** In. Descriptioibne. vniuersi. Puluis oculo in fili  
 end. nequaquam affine. nisi lacrima mediant. **¶** Sic neqz  
 a nobis exit puluis uarie in quietudinis. nisi in fletu  
 z in lacrima pccentis. **Vnde.** Eusebius. In. Sermone.  
 Nil unquam excogitari potit amissumqz molestie aut do  
 loris. quod no abstergat deuota lacrima pccoris. **Costantinus?**  
 In. tractatu. De. Naturis. gorborum. post emissionem mo  
 dicam lacrimaru. minus fieri impudior atqz lugulencior  
 demonstratur. **¶** Sic post lacrimam deuocois ac. visus fit  
 impudior cognocois diuine. **Vnde.** Cassianus. In. libro  
 collacoin. Reorum. prim. **Vnde.** uirgata lacrimis. maio  
 ris in tra se est. atqz impudioris luminis seu caroris  
**philosophus.** In. problematib. Cumqz solem contemplanur  
 confestim aliquatit lacrimamur. Cum ratio tangetur  
 infra. Caplo. De. uisione bti. **¶** Sic z dum i mente. solem  
 contemplanur. in stitit. mer lacrimam emittim? inbulatio  
 mo atqz deuocois interne. **Vnde.** Ambrosius. In. libro  
 De. uirgitate. In contemplacoe quide luminis diu  
 ni. semp nocet nos e uberi? salto lacrimari. **Costantinus**  
 In. lib. De. gradatolis. Qm uehement gaudent. p  
 gaudio quide plorant. **¶** Sic qm ueraciter gaudent i  
 celestibus. dulces emittit lacrimaru gemmis z singule  
**Vnde.** Crisostomus. In. lib. De. progatis. scilicet. parit. **¶** Ga  
 dium quod ex diuinis nascitur. fletus sempe z la  
 crima uberior conicitur. Huc usqz De. Lacrima.



Sufficienter igitur determinato De hoc Elemento. l. p. ut  
consequenter agendum De hac lra. v. Et p. m. quidem.  
De hoc excellentissimo noie. Maria. In cuius laudis ti-  
tulum. Sabonus copiam reducendi Capitula in f. a. p. a.  
Capitulu m. d. l. De. Dulcedine. I. m. Caplm De Gustu  
I. m. Caplm De. Denotone aie. I. m. Capitulu De Cri-  
to. I. m. Capitulu De amore. De Dulcone. Et hancare

M.

**P**tolomeus. Almagesti. p. Quācumq; altum sit qm Capitulu  
Pclm. a longe tamen aspiciendū videtur. attinge De. Maria  
I. m. I. m. Sic illa m. m. uirgo quācumq; sit exaltata.  
ad solium celestis glorie. sua tamē semp grātia et virtu-  
te. tram attingit mentis nre unde. anselm. I. m. S. m. o.  
Maria quippe sup omnes celos elevata creditur. inquit  
tamen deesse nobis qm in hoc mundo p. m. i. u. u. e. u. r.  
**phidaretus.** I. m. Tractatu. De. a. u. l. i. Celum ab nubilatum.  
nubilusq; obductum. cursum confert lagdis et infirmis  
Testante Galieno. qm ex cathda seu colerica causa t. h. r.  
manetur. factis ymbribus cretiant ut frequent. Sic  
illa m. m. et p. m. uirgo mater totius salutis et gracie.  
imbibus quidem obducta de. a. c. i. o. m. a. a. i. e. cursum mox  
affert natiuitatis sempitne ¶ Unde. Ignatius. I. m. Episto  
ad h. c. m. uirginem. o. m. e. m. o. r. a. r. e. uirgo sancta. q. ymbribus  
tibi destinatis afflicte aie. ymbrem econtra polliceris be-  
atitudinis sempitne. Requie. De. C. u. i. s. t. o. **fontinus.** I. m.  
Descriptioibus. v. m. i. s. i. Incendio grandi facto. rubescit  
perpendicularit cotum celum. Sic i incendio quācumq;  
tribulacōis et angustie. mox mater illa aie uirginitas  
et gracie. oculis pro nobis rubescit pietatis diuine  
¶ Unde. Cyrillo. I. m. Sermo. De. N. a. u. r. mox em dū  
quis tribulacōibus estuat. uirgo cristi ut ad iunet  
totam celoru curiam irradat et illustrat. Recitat ad  
Caplm De. Sanctis. **Amicebron.** I. m. lib. fontis vite. Celum

N.

O.



- naturāliter sursum trahit ignem. & omne id q̄ ignee fu-  
 erit qualitatis. Sic maria ad se trahit. amittas sibi de-  
 uotas animas. sin amore atq; desiderio inflammas  
 unde. Iero. In Episto. ad Nepocianū. maria uirgo mole-  
 ter sursum trahit ad celestia. amittit corda humane de-  
 uocōne & gratitudinē inflammas **causam.** **Sup. Thymen**  
**placōis.** Celum siquidē uelocitate sui motus. sustinet  
 ne in nihilum decadat totum mundum. Sic maria  
 sua nos uelocissima uirtute & gratia. ab omni casu  
 maligno prohibet & ruina. unde. Iuliano. In. S. moe-  
 stantia ē uelocitas marie in auxilium. ut a casu & ru-  
 na nō solum quēlibet hominū. s; & ipm prohibeat  
 totū mundum. Recurratur ad caput. De cruce infra  
 postq̄m igitur gloriosam uirginem comparauimus  
 celo. Nunc consequentē comparabim⁹ etiam rori. ab di-  
 uersa ipsius roris qm plurimas qualitates  
 .Q. **Comēttor.** In. libro. De. In. p̄sionibus. aeris. Proprium ē  
 roris & primine. in die nō descendē sed i nocte Sic  
 appm ē marie materis gratie. n̄ aduenire i die mu-  
 dane consolacōis & affluentie. s; i nocte tribulacō-  
 nis angustie quoq; nostre unde. Remigius. In. lib.  
 De. uitis Sanctorū. eos quippe n̄ inuat marie conso-  
 lacō. quos uenia consolacō releuat in hoc mundo.  
 s; semp maria hinc succurrit hōi. qui p̄suras sus-  
 tinet. hui⁹ mudi **archia.** Tharenom? In. lib. De. E-  
 uenabus. In. natura. In eo loco. ubi ros cecidit. ignis  
 difficilime exardescit. Cumis ratiō ē. Nam ros igni  
 ē naturalis inimicus. Sic & i mente humana. ubi  
 marie refulsit gratia. in cendit nūqm extingui po-  
 terit sempiterna unde. Ambro. In. lib. De. uirgi-  
 nitate. Quis igit hōis. que marie suscepit radium.  
 nūqm igne malo extingui potit in eum **Comēttor**



**Comen** <sup>or</sup> Sup. 3<sup>m</sup>. Oetharon. Cum ros ceciderit. serenitas  
 presto erit. Cum ratio tangetur infra. capto. De. vi  
 dicta. Sic dum maria p<sup>r</sup> gratiam menti n<sup>r</sup>e adue  
 nerit. serenitas mor vite p<sup>r</sup>etue t<sup>r</sup>imnebit  
 unde. Cassianus. In libro. collationum. scorum patrum.  
 In m<sup>r</sup>thru quidem matris gratie. mor m<sup>r</sup>a redit  
 serenitas menti nostre **Theophilus**. In. Breuiloq<sup>o</sup>. Di  
 uersarum. Arcu. In uase rore pleno. rosa toto ano  
 florida conseruat<sup>r</sup>. Cum ratio tanget<sup>r</sup> infra. cap<sup>i</sup>  
 De. virtute. Sic t<sup>r</sup> mente hominis. que marie virtu  
 te plena fuerit. rosa illa nemistatis florida eternit  
 ater p<sup>r</sup>manebit unde. Alanus. In. lib<sup>o</sup>. De Dulcedie  
 tie. In ingressu uirginis m<sup>r</sup>a domi<sup>r</sup> aie. n<sup>r</sup>a mor  
 m<sup>r</sup>a m<sup>r</sup>a se celesti e<sup>r</sup>nalit<sup>r</sup> radiat nemistate  
**Fontanus** In. Descriptioibus. vniuersi. Quia ueste rorida  
 idz rore humectata indutus fuerit. die illo neq<sup>u</sup>m  
 sibi a contrariis fulmineq<sup>z</sup> timebit. Cum ratio t<sup>r</sup>ge  
 tur infra. capto De. vniuersa. Sic mens humana  
 mariam inducit per gratiam. nequaquam dei timo  
 re iracundiam seu vniuersam unde. hugo. De  
 Sc<sup>o</sup>. v. Cum quippe. in quo marie in signis t<sup>r</sup>uen  
 ta fuerint. nulla vniq<sup>u</sup>m aliquando dampnatio ex  
 terrebit **philaretus**. In. tractatu. De. naturis. or  
 boru. Quia mane liberit n<sup>r</sup>m rorem. aie febris  
 in se estum exterminat seu calorem. Sic qui marie  
 in biberit gratiam. sitim n<sup>r</sup>e ex t<sup>r</sup>inguit atq<sup>z</sup> mo  
 lestiam uniuersam unde. anselm<sup>o</sup>. In. Sermone.  
 Quia semel marie virtute gustauerit. omne estu  
 ip<sup>e</sup> tribulatiois z angustie ex sufflabit **archid.** **tha**  
 rentm<sup>o</sup>. In. lib<sup>o</sup>. De. Genesib<sup>o</sup>. In. natura. Ros t<sup>r</sup> fusus  
 vlneri. nequaquam sinit sagnem emanare. Cum  
 ratio tangetur infra capto. De. vlnatu. Sic t<sup>r</sup> du  
 maria menti se infuderit. in hac mea effundi sag

.5.

.T.

.V.



nem non permittit. unde. Eusebius. In. libro De. vero  
Cultu. Nec homo male moritur. nec saguis ei effin-  
ditur. qui marie deuotus & sedulus inuenitur  
In. libro. De. iupitionibus. In. plurima quide descendunt  
grandiores lapides q̄ & rane. in rore aut granula di-  
u inuenta sunt minutissima descendisse. Cuius declara-  
tio patebit infra caplo De. uirtute. Sic & in plurima  
consolacōis mundanie. rane proueniunt atq; grandi-  
nes in quercudiā uarie. In rore autē consolacōis ma-  
rie. Animum in fluit diuinitatis extelle. unde. fortū-  
In omē. sup. orissus ē. Vnus ē omnis consolacō que  
est ab homine. marie autē consolacō plena ē om-  
ni solacio & dulcorē p̄tolomeus affirmasti. 1.º q̄ celū ab  
sua elongacōem. tūdi huius n̄ p̄t effice regione.  
hoc ipm rore efficit mediante. itestante. Amtebron  
In. libro fontis uite. qm̄ ait. itota uirtus celestis in  
fluencia. rore huius mudo illabit. mediante. Sic & q̄  
dens n̄ potest fāte in hoīe. sua uidelicet iusticia q̄  
hibente. hoc matre sua efficit mediante. unde  
Ignatius. In. Episto. Ad beatā uirgēm. Quos dens  
saluare n̄ potest per iusticiā. hos per tuam saluās  
misericordiam t̄m̄itā  
Ad hoc igit ut ymber prouēiat. necē ē ut uapor ne-  
bulasq; ascendat. Sic ut & nobis ymber prouēiat  
marie uirtutis & gratie. necē sumopere ē ut p̄us  
uapor ascendat deuocōis in terne. unde. Anselm⁹  
In. Sermo. Ut quide marie grātiā hauriamus.  
deuocōnem ei p̄uina totius mētis nr̄e t̄m̄itā  
mus  
In. Descriptōibus. vniūsi. corpora mor-  
tua rore nullatenus m̄desunt. Sic mentes ob-  
scelus mortue. marie n̄ p̄funditur grātia & uir-  
tute. unde. Crisost⁹ In. Sermo. In maliciā mētē  
hoīs. mat̄ nequaquā in grediam saluatoris



In Tractatu. De Naturis liquorū. Dum  
em modicum in orto foditur. fons in ortis acinus  
qm̃ in campestris in uenitur. Cuius raco tangetur  
in fra. Capitulo. De visione. Sic et dum i maria in mo  
dorum nre mentis deuotio foderit. fons mox sibi ce  
lestis miratus et gratie eternit̃ apparebit. unde hu  
go. De. Geo. v. Cumq; mens nra matrem pertran  
sit gratie. redimunt mox fluentia felicitatis he  
dicudinis qz eterne

.a.

In lib. De humanis.  
actib? In orto miru semp dulcis obdormit. Cuius  
racō est. Nam exalaciones terre sibi inbibunt. qui  
in ortis dormiunt. Quibus in bibitis. aggrauat  
et profundat naturatit nre pompi? Sic i maria  
que et ortus deliciarū dei dicitur. mens dulciter et  
tranquille eternit̃ obdormit. unde. Alanus. In  
lib. De. Dulcedie. aie. Qui in umbra marie quie  
rit. qm̃ nulla umq̃m in et̃m molestia ex terrebit  
Iohannis In lib. De. Regimine. Salutis. Cibati i or  
tis. acinus qm̃ si abarent alios. i pignatur. Cuius  
racō tangetur in fra Caplo. De. Vanitate. Sic q̃ ma  
rie cibantur uirtute et gratia. pignedit reficiuntur  
mentis et corpis sempit̃na unde. Criso? In. Omel.  
Sup. orissus ē. Quem marie cibāt gratia. pignedo  
in ipso et medulla diffuset sempit̃na

.b.

.c.

In. B.  
inloquo. Dinsaru. arant. Qui ortum circūfodiunt. i  
de plures fructus sumunt. Sic qm̃ maria suis spunt  
et Ambunt prealbus. fructus ipso uite diffuset co  
piosus unde. Ambro? In. Frameron. Qui maria



arum ornantur laudibus. & precibus. fructum sibi sumet  
inde felicitatis beatitudinis & celestis thesauri. In. Brenilo  
quo. Diversarii. Arcu. Cuius & finis. fecundant na  
turaliter. prout ortum. Sic tunc contritio & penitentie  
atque finis humilitatis nostre. ortum sibi faciunt

**D.** secundum fertilemque mariem. unde. Cassianus. In  
libro. Collationum. secundum primum. maria in grece. i. in a si  
quidem amaritudinis & dolore. fecundioris erga nos est  
fuit pietatis & clementie. Pecunia. ad. caplm. De  
crusto

In. Descriptioibus. vniuersi. humana habi  
tatio trahit ortum. eius causat & efficit beatitudinem. Et  
habitatio in maria. mentis nostre. beatitudinem in ipsa facit  
imaginatio. atque clementie vniuersi. unde. Anselmus.  
In. Sermone. Qui sub marie habitat umbratula. p  
fecto dulcedinem eius magis prouocat pietatis

In. Speculo. naturali. fecundat naturaliter om  
nis ortus. quoniam pedibus tepitur. gressibusque humilis.

**E.** Sic maria magis erga nos mirante & gratia fecun  
datur. dicit deuotis affectibus anime mouetur. unde  
Bernardus. In. floribus. Cuiusque maria pedibus impul  
satur affectum anime. i. in omni inquit erga nos super  
affluet pietate

Tharenemus. In. lib. de. E  
uentibus. In. Natura. In loco in cendy. ubi indehiet  
quondam stigerunt in cendra. ortus irriguus opti  
mus quod placatur. Cuius ratio tanget infra cap. De  
visione. Sic in incendio afflictio anime. ipsi tempore ort  
sunt deliciaeque marie

**F.** unde. Ambrosius. In. li. prefatio.  
Sic autem summe marie delicie. i. releuanda tribulata  
mente

In. Didascalicon. li. 3. Sic oleum in acto  
in orto. fecundat naturaliter ipse ortus. Sic dum seme in  
cuius viciatur. maria & ipsa erga nos uberius fe  
cundat. unde. Bruno. In. Sermone. Sparsa in  
tutum semine. maria magis nobis irradiat pietate



In Breuiloquio. Diuisarū. Arcū. pāno sus-  
pendio i arbore. fugiunt protinus nre aues. Sic & di-  
mentes hominū marie applicātur. cuncte mor aues  
infernales demonesq; fugiunt / unde. Origenes. In  
libro. De. Prin. Etādrū. Qm ad maritū deuote con-  
fugerit. i fugam i fernales pīcipes cūctos vertit

In Speculo naturalī. Arbor nata i muro seu lapī-  
de. scindit. diuiditq; utrumq;. Sic maria. per deuotionē  
quidem nata i mente hominis. scindit ipm & aperit in-  
flum saluatoris / unde. Orosius. Sup. Can. Cantū  
maria quide in mente humana hoc efficit per gratiā.  
ut aperta quidem ad celestia. suauitatem inbibat dulce  
veneris. Sup. libm. De

plantis. Aristotlis. Aq. Arbor circa aquam quide ois.  
radices tre i mittit longiores. Sic maria circa aquā  
moles tie & doloris. longiores figit radices sue solati-  
& dulcoris / unde. Eusebius. In. Sermonē. Cumq; tri-  
bulacio mudi huius ingruit. maria mor se nobis  
dulcius iocundus q; infundit

In Breuiloquio. Diuisarū. Arcū. Arbor arida scindatur. & ter-  
ra liquida mponatur. Sic maria arefacta in homīe.  
scindatur mor deuotione tie. & in ipā abscondatur  
officiā mēdis nre / unde. Bbido. In. Sermonē  
Cumq; maria i nobis aruerit per ignorantia & in-  
gratitudinē tie. mor ipm perfundat deuotō mēdis  
nostre

In Speculo. naturalī. Arbor quippe  
ois. gūm suū emittit solūmodo uersus solis radi-  
um & calorem. Sic maria sue uirtutis solatiū  
in cor solum transmittit humānū. Diuinū lūmīnū



radio illustrati unde. Sic maria mater gratie. quoniam  
 quide[m] sic virtutis et gratie. i cor fundit celesti illustra  
 tum lumine et cantore **Comestitor** in. libro. De. in p[ro]p[ri]o  
 mbus. Aeris. Arbor attensa fulmine. Ab aquis n[on] ex  
 tinguitur. sed uehementi[us] atq[ue] ualidius inflammatur  
 Cumis ratio tacta e[st] supra. Sic dum maria erga  
 nos zelo amoris accendunt. Aquis mor[is] lacrimarum  
 hic felicius inflammantur. Unde. Orosius. Sup[er]. cant  
 cantu[m] cum e[st] quis fonte lacrimarum perfundit. ma  
 rie mor[is] pietas ualidius extitatur. **Auctena**. in. lib[ro].  
 suora. omeratut. Arbor longo sub aquis iacens que  
 tandem in lapidem transmutat[ur]. Omnis causa tangit[ur]  
 tur infra. caplo. registrato. De. obmatia. Sic ma  
 ria i[n] aquis n[ost]re tribulacois et angustie. in lapide  
 se facit fortitudis sempit[er]ne. Unde. Iero[ny]m[us] in. Episto  
 ad paulam. et Eustochiu[m]. maria quide[m] turris e[st] for  
 titudinis et fidei i[n] m[un]do. i mente uniu[er]su[m]q[ue] ho[m]i[nu]m  
 tribulati **Fontinus**. in. De scripturis. vniu[er]si. Quoniam  
 uetus ualidior. tanto fructuosior o[mn]is arbor. Omnis  
 ratio tangetur infra. caplo. De uirtute. Sic quoniam  
 uentus n[ost]r[us] maior fuerit tribulacois et angustie.  
 tanto maria uerior i[n] gra[tia] et uirtute. Unde. An  
 selmus. in. Sermones. Secundum magnitudinem n[ost]re  
 aduersitatis. maria b[e]n[e]dicta sic tribuit inestabil[em]  
 pietatis **plinius**. in. Speculo. natural[is]. In arbore co  
 ctura. per hiemem se osuunt. Aues. p[er]ta. ciconee  
 et prundenes. Aues quoniam relique estinales. Circa  
 q[uod] aduertendu[m]. Nam ut refert. Fontinus cotroner  
 sit oritur mo[d]o p[ro]p[ri]o de humismodi. et mea[m] em uoluit  
 q[uod] Aues in stance hieme. ad regiones longinquas  
 Auolent et recedant. Undam no[n] asserunt. q[uod]  
 in terris maneat. in arboribus uidetur. in  
 paludibus et in stagnis. Sufficit aut[em] ad p[re]sens

**R.**

**L.**

Vicome.

**M.**



asserunt dixisse. q. quedam aues in arborib. se ab  
 scidunt. Sic homines i matre se saluatoris. que  
 sperantur mundane angustie et doloris. unde da  
 mascemus. lib. vii. In omni nra tribulacione et an  
 gustia. conseruari nos et abscondit agunt in ma  
 ria **Solimus** in. lib. vii. Sub arbore. nequaquam ouat  
 serpentes sine rane. Cuius ratio e. Nam serpentes  
 et rane ouant in lubricis et viscosis locis. Sub arbo  
 ribus aut hoc minime tucitur. Nam totum humo  
 rem atq. infusitatem terre. Arborea sibi an trahit  
 et in bibunt. Sic marie pnte lumine. neq. in mane  
 nec fce possunt serpentes suggestionis uersutiez  
 maligne. unde. Origenes. in. lib. de. Pitu. et. et. et.  
 Illucens maria p gratiam intra hoies. mox cuncti  
 in abissum pelluntur priapes infernales **phimus**. In  
 Speculo. natural. tpe quidem ymbrio et plume. for  
 aior ad secandu e et durior ois arbor. Cuius ro ta  
 geat in fra. caplo. De. Vena. Sic maria i nra tri  
 bulacione et angustia. fortior est quatum ad mala o  
 exstirpanda. unde. Orosius. sup. can. canis. Cuius  
 nobis neccitas ingunt. mox maria et quosq. ma  
 lorum impetus apparebit **Theophilus**. In. Breuiloq.  
 Diuinaru. Arcum. qm folia collecta sub arbore. ar  
 boris applicauerit. Arborem in futuro fructuosiore  
 reddit. Sic qm marie bnficia. memorie gratanter  
 applicauerit. nrm addandu paciora bnficia in ci  
 tabit. unde. Anselmus. in. Seruone. Dignus erit  
 de dandis marie beneficiis. qm iam gratus exst  
 terat de. Acceptis **Solimus**. In. lib. vii. pisces. hnt  
 naturalit sub ramis latentis arboris sub aqua.  
 Sic et mentes humane. sume gaudent sub protec  
 cione umbratuloq. marie. unde. Wbfrd. Summ  
 gaudm tie. i maria confide firmit et sperare. **phidare?**



**philaretus.** In tractatu. De. Naturis. morboz. Qui manu  
egram sepeluerit sub arbore. in ipa' mor transacto noc  
tis tempore plenariam recipiet sanitatem. Sic qui ma  
num uirgatu in merserit in mariam. omne mor tam  
mentis qm corpus sanitatem recipiet sempiterna. Unde  
**Anbardus.** In libro. Exhortationu. Qui mente marie  
applicauerit. ab omni egritudine mentis et corporis eter  
nalit' conalebit. Huc usq; maria arbori comparatur.  
Postqum igitur gloriosam uirgitem pparatum font.  
Huc consequenter comparabim' etiam umbre. ab us  
uiss ipsius umbre et quatu plurimas qualitates.  
**ysidorus.** In. historia. naturalibus. Serpens quide. ois  
naturaliter horret umbram. testante primo In. Specto  
naturali. Serpens ad solem erit. s; ad umbram se ab  
scindit. Sic et psonam marie uirginis. ipe serpens  
fugit umbram infernalis. Unde dixerimus. In. Sermo.  
Nunqum aliquis in tenebris timuit uel abhorruit hoste  
quendibz corporalem. sicut serpens antiquus marit  
dei matrem. Recuratur ad caplm De. Cristo. **philoso**  
In. problematibz. Scantibus nobis in umbrat. ipe est  
limpidior insus m. Cuius etia signu e. Nam ut li  
pidus uidetur. manibus insum aliquatit' obum  
bramus. Sic spe mentis nobis stantibus in maria.  
mens mra limpidior. ad contemplandu secreta int  
teriora q; diuina. Unde. ambro? In libo. De. uirgini  
tate. Qui marie iunus steterit. celestia mysteria  
clarus limpidus q; uidebit. **fontinus.** In. Descriptio  
nibus. vniuersi. Umbra calefacit corpus extrinsecus  
s; Umbra calefacit ipm corpus intrinsecus. s; mfri  
gidat extrinsecus uehement. Per hoc em. q; corp'  
humanu calefactu exceri' mfrigidat. calorem ad m

. Q .

. R .

. S .



teriora reuerberat & refrangit. Quā obrem accidit  
 qd ut ante dictum ē. umbra corpus meū accendit  
 foras autē in frigidat uehement. Sic maria mētē  
 humanā. in flāmato mīsticus igne dilectis & grācie  
 foras autē refrigerat. contra estum tribulacōis & an-  
 gustie mīuēse. Unde. Aristoteli. habemus eam  
 que deum exorat pro homine. que mentem inflā-  
 mat hāritate. que & refrigerat. ab omni scelere qd  
 inuitate **comēttor** in. libro. De. Inpitionib. aeris. In item  
 perie aure. ea que a nubibus ē uelocit' currit umbra  
 cum rō ē flām & tunc. nubes uelocit' quidē erunt  
 que umbram faciunt. Sic in tribulacōne & in tēpe-  
 rie mūdātorū. maria uelocissime currit in auxilium  
 & occursum. Unde. Eusebius. in. lib. De. vij. oribus  
 coronatorū. Nil quidem oīo uelocius. qm' marie ex-  
 stet cursus. cont' mūdi hūi' impetus & insulcus. Re-  
 currat ad capm. De. Sanctis **aristoteles**. in. li. pro  
 blematū. Vbi umbra in die fuerat in estate. ubi calor  
 maior ualdior qz in nocte. Cum rō ē. flām umbra  
 strigens eram. aut poros terre. exhalationes calidas  
 euaporare nō simebat. que saltem noctis in tempore  
 euaporantur & exalant. dum aut exsiliunt. eram ca-  
 lestaciunt & accendunt. Sic in quacūqz mente. maria  
 sedule in uentā fuerit in die pūis uite. ibi p' inor-  
 tem calor consolacōis atqz iocunditatis eterne. Cū  
 Anselmus. in. Gerione. Nemo ambigit. qd eam que  
 maria inuit obumbrat in hoc seculo. etiam ab umbrā  
 & protegat in futuro **phimus**. in. Speculo. naturali  
 Umbra rorem suū & pruinā sup grāmīnā. totā  
 die. Sic maria sua grācia & uirtute. rōē dū i  
 nobis conseruat felicitatis atqz iocunditatis et-  
 ne. Unde. Ambrosius. in. libro. prefationum.

. J .

. V .

. X .



Non solum q[uod] uirtutis i[n] nobis fuerit. per mariam trans-  
mittit. sed & i[n] nobis i[n] corruptum iugiter Auertitur.

**P.** In problematib[us] maior e[st] umbra i[n] nocte a lu-  
na. qu[am] i[n] die a sole. Cuius causa tangetur i[n] fr[ate] cap[itu-]  
lo. De uirtute. Sic maior e[st] consolatio marie i[n] nocte tri-  
bulacionis & p[en]itencie. qu[am] consolatio humana. i[n] die  
qu[anti]tateq[ue] felicitatis affluencieq[ue] munda[n]e. Unde. Ignatius.  
In episto[la] ad Romanos. In t[em]p[or]e iusticie maior e[st] mi-  
nuta consolatio marie uirginis. qu[am] felicitas atq[ue] io-  
cunditas totius orbis. At o[mn]is consolatio temporalis.

**C.** In speculo naturali. Umbra destruit uim i[n]  
uicis. Sic maria omne estum ardoris concupiscentieq[ue]  
carnalis. Unde. Ambrosius. In libro. p[er]f[ect]i[m]i. Quia quid  
p[er] uim i[n] nobis estu[m] extirpat p[er]one. Scilicet. & tunc  
fontem i[n]fundit consolacionis interne.

**S.** In Anthodacario. ueteri. Per umbra[m] montis sanant[ur] p[er]u[er]-  
si. & p[er] umbra[m] alti mari. sanant[ur] uicicia uicisi. Cui[us]  
ratio tangetur i[n] fr[ate] cap[itu]lo. De uirtute. Sic per um-  
bra[m] marie maris altissime deitatis. o[mn]is sanant[ur] i[n] no-  
bis morbus munda[n]e & corruptibilia uicicia. Unde  
Crisostomus sup[er] Mattheu[m]. Quia sub marie stant umbra  
culo. A morbo curantur tam mentis qu[am] corporis  
uiciorum.

**S.** In sup[er] 3<sup>o</sup> de celo. & orbe. Umbra  
quedam eternitatis stat i[n] luna. seu facies quedam ef-  
figies q[ue] humana. Cuius declaratio patebit i[n] fr[ate].

**A.** Sic maria eterno quidem que. stat pro nobis i[n] lu-  
na diuinitatis excole. Unde. Anselmus. In sermone.  
Stat aut[em] maria i[n] cessante i[n] aspectibus saluatoris.  
pro salute exorans uniuersu[m]q[ue] ho[m]i[n]u[m] p[ec]catoris  
In libro. Peru. Comb[ust]i umbra[m] seu monum[entum]. t[em]p[or]ales  
terre abigit quoq[ue] duces. Sic maria cunctos  
i[n] fugam uertit & conuertit principes i[n] fideles.



in lib. De Insuperbibus aeris. elongata nu-  
be. ab habitabili regione. pluuia nō descendit. Cuius  
signū ē. Nam alte nubes pluuia nō distillant. Cuius  
eandem ratio causa ē supra. Sic maria dei matre elo-  
gata quidem a memoria mentis nr̄e. pluuia nō des-  
cendet consolacōis in terne. Unde. Ambrosius. De lau-  
dibus. uirginis gloriose. maria quidem ignorata. ab  
homine. ymbrem nec ipsa transmittet dulcedinis  
sempiternae.

In. De scriptoribus uniuersi. Nubes  
soli opposita mox ingreditur. Cuius etiā signum  
est. Nam ut refert Cuius. Nubes in hieme albe-  
scit. In estate uero ingreditur. Cuius etiā causa cau-  
setur infra. Caplo. De victoria. Sic maria soli. sue  
proli exposita uere iusticie. mox em̄ ingreditur aspec-  
tibus. pro quolibz peccatore. Unde. Ignacius. In. Epistola  
ad. Gemorem. Ecce aut maria in cōspectu domini.  
vniuersz salutem impetrans peccatori.

In. Specto  
naturali. Nam in uespere qm̄ in mane. dum sol hinc  
ruberet nubes. Cuius etiā ratio tangetur infra caplo  
De. uisione. Sic in uespere mortis humane. qm̄ in  
die p̄ntis miserie. maria semp nobis rubet. Suo  
mente lumine et candore. Unde. Aristoteles. Sup. or̄.  
Nunquā aliquis hominū moritur. nisi nāscitur  
nisi qm̄ marie grācia misericorditer tueatur.

In. perspectiva. Quid. Nubes quācumqz sit  
alta. in circulo tamen orizontis uidetur attingere  
qm̄ terram. Cuius ratio tangetur caplo De. vi-  
sione. Sic maria quācumqz sit exaltata. ad celeste

b.

c.

d.



solum. temp̃ tamen pietatis sue oculo attingit & respicit  
istum mundum. Unde. hugo. De. scō. v. Nulla mōrū prohi-  
bet celorum distantia. qm̃ nobis maria. temp̃ p̃uersetur  
& remaneat spiritaliter in hac mēsa

**p.**

In. lib. De. scientiis. In natura. ubi cumq; attingit co-  
morū in cēdis ualida. mox efficitur & strahitur que-  
dam nubes. Cum causa tangitur infra. caplo. De. vir-  
tute. Sic ubi cumq; in cēdis tribulatiois uarie. ibi mox  
maria p̃sens ē sua imēsa grācia & uirtute. Unde  
cassian. In. libro. collatōm. scōrū. p̃r. Anteqm̃ enī mūdi  
huius tribulatio orta fuerit. maria mox sua uirtute  
aduenit & succurrit

In. lib. De. in p̃sidiis. Aēris. Unde nubes uaporem attrahit. illuc rore plu-  
uiasq; transmittit. Sic & unde maria deuotione su-  
mo die. illuc rorem t̃smitit dulcedis sempit̃e.

**f.**

Unde. Glibo. In. Sermone. In quocumq; hominū  
deuocio. marie oblata fuerit. eadem quocq; consolatio  
p̃petua t̃notescit

In. Summa. naturalium. Enim. Occidente sole. surgit p̃ratinus ois nubes.  
Sic ip̃o per mortem occidente homī. maria mox  
surgit sua ineffabili pietate. Requie De. Cristo.

In. Anthoditario. ueteri. cont̃ frenesim et  
insaniam uniuersam. fūme ualeat nubem p̃templa-  
ri aliquam intra aquam. Cum rāco tanget̃ in f̃a  
caplo. De. uisione. Sic cont̃ omne mentis uesam  
ani. fūme ualeat p̃templari aspiceq; mariam

**G.**

Unde. Ambro. In. lib. De. uirginitate. ualeat aut̃ q̃  
metum & insultum amissumq; molestie. maria mē-  
te aspice & tenere.

Sup. 3. metharoz. Nubes  
nō solū uapores & aquas. s̃ rādas uyperas q; assu-  
mit. Cum signum ē. Nam in calida pluuiā. ser-  
pentes rāniculeq; descendūt. Circa q̃ aduerten-  
dū. q̃ rāne nō ascendūt in quātum rāne. quā mē-



lum graue tendit sursum. sed raminus uspor de pa  
ludibus ascendit. ex quo sursum in aere. solari lum  
ne & uirtute. rane hmodi generatur. Sic maria  
no solum sibi iustos assumit homines. s; & quoslibet  
pccores. unde. Anselmus. De laudibus marie. o ara  
nemine spernit hominum. sed tam peccatorum memor e  
apud dominum. qm iustorum. Huc usqz mihi apparatur

j.

In tractatu. De. Naturis. liquidorum. omnis  
fons maior e atqz diffusior noctis tempore qm i die  
Cum ratio tangeatur in fra. caplo. De Voluptate.  
Sic maria maria maior atqz diffusior e in uirtute  
i nocte tribulacois & angustie. qm in die felicitatis  
affluentieqz mundane. unde. Ambro. In. lib. De Vir  
ginitate. Semp quippe uirgo cristi se diffundit ube  
rins. dum humanis quide animi mundi hui fuerit  
inolestia amictus. Requie De. Cristo In  
libro. De. Virg. orbis. Quanto magis fons aliquis  
exhauretur. tanto dulcor tegustat. Cum ratio tan  
geatur in fra. caplo De Viribus. Sic qnto magis ma  
rie grata gustata fuerit. tanta uehementi. feliciqz  
dulcescat. unde. hugo. De. sco. v. Quato magis ma  
riam gustu mentis attingimus. tanto eius dulcedi  
nem percipim; & sentim;

j.

In. libro. De. Quatuor  
Dum fons aliquis tegitur. subito desiccat. Cum ratio  
tangeatur in fra. caplo. De. vicio. Sic dum laus marie  
tegitur & tace. mox eius nobis fons dulcedis pemit  
exsiccatur. unde. Origenes. In. lib. De. Fiti. Ecce  
qm marie laudes tacuerit. eius inqum in eternum  
suauitatem atqz dulcediem degustabit  
In. libro. De. Euentibus. In. Natura. Comper

k.



3 tum est. quod dum aur argentus thesaurus. fons ad ab  
 sccondendū īmergebatur. fons ip̄e protinus signanter z  
 notabiliter augebatur. cuius ratio tangetur infra. capto  
 De. v̄metate. Sic z conperit cotidie in toto orbe. quod  
 dum thesaurus aīe. māri amendat gr̄acie. fluens mor  
 1. augebatur dulcedine simplici. unde. Anselmus. in. 8.  
 mone. Am se totum z sedile. mārie recōmendauerit.  
 ip̄e in se fontem dūm saporis z gr̄acie auemētabit

3 *Pestorius.* In. libro. De. octidm. circulo. fons non nequ  
 oritur. nisi fons aliquis in vicino p̄tū. desiccat. Sic  
 nequaqm nobis fons mārie oritur pietatis. nisi fons  
 z nobis desiccatus fuerit p̄tū atqz illite uoluptatis  
 unde. Glibo. In. Sermonē. Desiccat p̄tū in nobis  
 humor concupiscēcie. ut nobis uberius pateat z sta  
 turiat fons mārie *Auēns.* In. lib. Quorū. oīneralū.  
 fons aureū fundū habens. in estate lūcet ingit tota  
 nocte. Cuius ratio tangetur infra. capto De. veritate  
 1. In tenas aut m̄a ē de fonte. in an? finto. colligit *ip̄*  
 aurū. Sic māria in auroso z virtuosō corde hominis.  
 in estimabili ex se p̄fert radium sin lūmīs z cōdōis  
 unde. Ambro? In. Exameron. variā illa m̄ oīs vir  
 tutis z gr̄acie. nō m̄m s̄ virtutē irradiat mēis  
 nr̄e. p̄currat ad. caplū. De. Cristo *archita.* Tharen  
 3 tūus. In. libro. De. fientib? In. statua. Resplendēte ar  
 cu p̄deqz celesti. proice āmūlū aureū mēra fontem  
 z m̄ra nēstio quā m̄tuce. nātāt sup aquam. Cui?  
 tamen ratio tangetur infra. capto De. verbo. Sic  
 1. ī minente arci v̄ndute diuine. mārie mor offer uo  
 tum z desiderū mētis t̄e. z sup aquas ferens il  
 lesas oīs tribulacōis z angustie. unde. Boecius.  
 In. Episto. ad. Regina. Virgēm. fac uotū mārie. et  
 mor īmūno transibis ab ai h? mudi molestia z  
 dolore *philareti.* In. tractatū. De. naturis. orbor  
 3 Qui in m̄stāci ann fit totūm. mānū legdam



foris i merferit. mox sanatur. Cuius ratio tanget infra  
 Capitulo. De valutate. Sic qui mox in tempore tribula  
 aonis mentem marie applicauerit. sanitatem mentis  
 corporis qz habebit. Unde. Cassianus. in. libro. collatio  
 num. sanctorum primum. Ad mariam mox in stance tribula  
 aone auerte. z ab omni mox liberaberis molestia z  
 dolore. **Archidia.** Tharentinus. in. libro. De. Euenabus. in  
 natura. Qui vnus fonte submergitur. ad fundum deue  
 nit ibiqz iacebit. qui vero ante mortuus in iectus fu  
 erit. sup natat. Cuius causa tangetur infra. Capitulo  
 De. vita. Sic qui vnus existens in gratia. ad mari  
 am pfugerit. profecto in ipa pfectus eterniter tutus  
 erit. qui vero per peccatum mortuus ad eam uenerit.  
 no mirum. si de frustratus inde redit. Unde. Ambrosius  
 in. libro. De. uirginitate. Qui timidus ad mariam ac  
 cesserit. timidum esset. si quid peticum accipere.  
 qui vero vnus in gratia z mundus in aia ipm iplo  
 rauerit. pma uite ppetue reportabit. **Petrus ad**  
 De. Cristo. **Satienus.** in. Anthoditaria. veteri. Cuius ma  
 num serpens ferit. si in istanci manum alteram fon  
 ti frigido i merferit. proculdubio sanus erit. Cuius  
 eam tangetur infra. ratio. Capitulo. De. usura. Sic  
 qui dum malignitate hostis antiqui leditur. marie i  
 stimenti fontibus implicatur. ab omni ipse tunc me  
 tis z corpore molestia liberatur. Unde. Crisostomus  
 in libro. De. laudibus sanctorum. Qui mox cu. tribula  
 aone aliqua quatur. marie se totum erit. ab om  
 ni malo mentis z corporis. proculdubio salu erit.  
**Amecena.** in. libro. De. Quatuor. Diluuiis. Et ano  
 quo desiccantur fontes. in tali multe neces z stra  
 ges accidunt regione. Cuius ratio e. Na desicca  
 tio fontium. significatum dat. quia na carale z ra.



• R.

• S.

• T.

dicale humidum. in humanis corporibus est sumptu  
 Quo cōsumpto. hominū qm plurimū moriunt. Sic  
 dum laus et memoria marie. in mentibus deficiat  
 hominū. tormentorū mor in plurimīs mors cō  
 sequitur eternoz. **¶** Unde. Iero. In. Episto. ad qdau  
 lam. et Eustochiū. Cumqz marie in nobis memoria  
 deficiat fuerit. timendum quia mors mentis et  
 corporis ppetua imminet. Huc usqz fontē spatur  
 De titulo autē subsequenti capli. require ubi nosti  
 Postqū igitur gloriosam uirgīem comparauim⁹ fon  
 ti. nunc consequentē comparabimus. Et d. Quēad  
 modum in prescriptis Capitulis. registratis. sup<sup>r</sup>  
**fontem** in. Descriptōibus. vniūsi. Ebore naturaliter  
 attrahitur pū aurū. Cuius ratio ē. naturalis que  
 nientia inter durū atqz aurū. Cuius etiam signū ē  
 Nam ut refert Theophilus. In. Breuiloquio. Diver  
 sarū arcum. prudentes inquit inquisitores au  
 ri. pū scutellis duris inuestigant. Sic ebore  
 marie castitatis atqz pudicie uirginitatis. Aurū illud  
 attrahit fuit altissime atqz felicissime deitatis **¶**  
 Unde. Augustin⁹ In. lib. De. Natura. et Gracia. can  
 didissima puritas marie uirginis. ipm dei sibi ac  
 ceptit Alū in diuina **Theophilus**. In. Breuiloquio  
 Diuisarū. arcū. Speculum visū oppositū ita  
 sicut. pū perurit et occidit. Cui⁹ ratio tangetur  
 infra. caplo. De. Visione. Sic maria. speculū illud  
 limpidissime deitatis. hostem in nobis occidit. Diabolice  
 humanitatis **¶** Unde. Anselm⁹ In. Sermo. maria un  
 uersos unificat sua uirtute homines. s. et cunctos  
 sua pteate occidit pūncipales infernales **fontem**. In  
 Descriptōibus. vniuersi. Rosa rori inuncta. p to  
 tum annū uiridis atqz florida conseruatur. Cuius



ratio tangetur. infra. caplo. De. virtute. Sic maria  
 rosa illa pectus uenustatis. vixi quidem in tincta me  
 impide puritatis. vixore nobis florebit in eterna  
 bilis pietatis. **Vnde.** Gvido. in. Germane. maria  
 vore perfusa deuocōis acie. eterna nobis efflore  
 bit gracia et virtute. **Alexand.** comentator. sup. **V.**  
 yecharorū. cristallus. lac sibi naturaliter intrahit et  
 inbibit. cuius rō ē naturalis quēciēcia que de  
 cristallū cernit et lacteam quāitate. Cuius etiam  
 signū ē. Nam ut refert. fontinus. cristallus auget  
 lac in miteribus uniuersis. Sic cristallus nostre  
 puritatis. marie sibi attrahit dulcedinem lactee  
 pietatis. **Vnde.** ambrosius. in. Exameron. puritas  
 quippe mentis nr̄e. ipm sibi alluit nr̄m diuin  
 itatis exēse. **archia.** thareninus. in. libro. De **in**  
 uentibus. in. natura. flos quidem ois. nō aque in  
 mergitur. s. i. mergitur immo forti. cuius ratio  
 tangetur infra. caplo. De. virtute. Sic flos ille  
 atq. candor puritatis pectus. maria inq. mater  
 omnis virtutis et gracie. nō aquis se i. mergit p  
 ne cupiditatis et concupie. sed immo. amoris atq.  
 deuocōis interne. **Vnde.** iero. in. Episto. ad. Ne  
 poetam. mariam fugit et horret. prauē concupiam  
 voluptatis. deuocōnem aut in nobis amplectitur  
 caritatis. Recurratur ad caplm De latris regit  
 tum. **Bar.** in. libro. De. Sigillis lapidū. In quacūq.  
 gēma. aut lapide p̄aso. reperiā fuerit facies seu **no. P.**  
 effigies iūrginis. talis inq. gēma seu lapis. iustā  
 tem graciosum reddit in aspectū. Cuius rō tange  
 tur infra. caplo. De. uilitate. Sic in quacūq. me  
 te. memoria iuēnta fuit huius gloriose iūrgis.  
 talis grōsus et acceptus apparebit in oculis o. **Vdito**



mo unde. Anselmus. In. Sermonibus. Memoria quippe u  
 gnis. in mente sedule gestata hōis. nōm gratia facit  
 in aspectibus dī saluatoris *Iohānnis*. In. libro. De. Pe  
 gmine. Sanctitatis. Cuncta quidem periculosa et gēna  
 seu mortalia vulnera. uirginis sunt manibus ali  
 ganda. Testante. fontina. qui ait. Vlnus q uirgo  
 ligat. medicus cito sanat. Cuius etiam ratio tan  
 getur infra. capto. De. uirginitate. Sic et corda hu  
 mana. pēto quolibz vulnerata. marie sunt attachibz  
 diuinitas restauranda unde. Ambrosius. In. lib. pre  
 facioni. gens illa oī sic pristinae saluti redditur.  
 cuius sancto marie tactibus atrectat *Beatus* In  
 libro. De. in uenatione. Arcum. In exercendis magro  
 maniae pēstigijs. uirginem necesse ē circula inter  
 pom. Cuius ratio tangetur infra. capto. De. uir  
 ginitate. Sic in cōstigendo cōt infernale pmi  
 cipem. Sumepere necesse ē. in corpore marie dei  
 matrem unde. Crisostomus. In. libro. De. laudibus  
 sanctorū. In bello itaqz quod contra hostem in fer  
 natem inuimus et assimim. mariam dei matrem ut  
 adiuuet in nocemus. Hinc usqz generalibz *appt.*  
 postqz igitur in generali piani descriptum. Ugiem.  
 sunt consequenter per fontis ipm laudabim qua  
 luitatem. ob uaria fontis Acadēcia seu naturas.  
 .b. Centobis. In. lib. De. uirgo. Orbis. corpora vulnerata.  
 aut submersa aut mortua. naturahc hitis petunt  
 id quidem intelligit de marinis fluitibz Sed et  
 de alijs fluminibus uerificari potest. Refert enim  
 Plinius. In. Speculo naturah. q uniuersa submerso  
 rum corpora. procedente tempore. hitis natāho  
 semper querūt. Cuius etia rō tangetur infra. ca.



De visione. beata. Sic mirum per omne modum cor  
 da humana. peccato quidem suffocata & mortua. ad  
 litus sunt illud mariam uirginem prociuius trans  
 mittenda. Unde. Augustinus. In. Episto. Ad. volu  
 am. Cumq; nrm aliquis molestia huius mundi q  
 atur. mor marie. mentis eius deuotio. destinetur  
 Recurrat. ad caplm De Cristo registrat **philoso**  
 In problematibus. Litus quidem naturalis uirtute. ue  
 hementissime attrahit ipsas naves. Cuius signu  
 est. Nam ut refert. Euemus. In. libro. De. contentib  
 orbis. naves uelocius currunt de mari ad litus. qm  
 de litore uersus mare **Aristoteles**. In. proble. Litus  
 quidem naturalis uirtute. uehementissime attrahit ip  
 sas naves. Cuius signu e. Nam ut refert. Euemus.  
 In. libro. De. contentibus. orbis. naves. uelocius cur  
 runt. de mari ad. l. litus. qm de litore in tra ma  
 re. Cuius etiam ro tangetur infra. caplo. De. vir  
 tute. Sic maria uirtute sui in menti muneris. me  
 tem molenter ad se trahit hominis. de maho h  
 seculi uniuersis. Unde. Ambro. In. libro. p. facom.  
 maria quidem tam malos qm bonos. ad se trahit  
 homines uniuersos. Requie De. Cristo **plm** In  
 Speculo. natural. Tempestate ualida ingruente. mo  
 stru. maria. marneq; belue litus querunt. Cuius  
 uato tangetur infra. caplo. De. uita. Sic tempe  
 statibus ingruentib; arbulacois uarie. mentes mor  
 hominu. mariam saluis mē portum. attendant  
 studeantq; adire. Unde. Remigius. In. lib. De. gal  
 uandis & dampnandis. Cumq; tribulaco nos huius  
 mundi urget. molestia q; extorquet. in sola mor  
 maria uirgie saluos fieri nos oportet. C. u. Sup  
**Constantinus**. In. tractatu. De. natura. liquidaru  
 Sanatus est mirabilis aqua maria salis. tamen

E

.D.

.E.



nequaquam sanatur. qui littori pedem in mergit lagridum.  
nisi eam in merferit ipsam sanam manum. Cuius. rō.  
tangetur infra. capto. De. virtute. Sic maria sanata  
mōrum mirabiliter est volnerū. tamen neminem uniat  
in sua in firmitate. nisi prius in sua sibi deuotus fue-  
rit sanitate. unde. Iohānes Belet. In. 3.º Sermonū.

**F.**

Opusculo. Nisi nos in prosperitate nra deuoti exstite-  
rimus marie uirgin. ab ea nō mereamur in aduer-  
sitatibus adiuari **philosoph** 9 In. problematibus. Quia  
in marino littore soporatur. Difficilime quidē exatit  
Cuius causa tangetur. infra. capto. registrato. De  
Virtute. Sic qui in umbra refugioq; marie. monte  
soporatus fuerit. nulla unquam eum mundi huius mo-  
lestia exercebit. unde. Timotheus. In. libro. Reue-  
latōm. Quomodo quidē marie deuotus et fidelis fu-  
erit. et cunctis nre huius mundi in curibus tunc erit

**Comēta** 02. Sup. 3.º. metharonū. Nequaquam terremotus ces-  
sare poterit. aut tempestas. nisi litus sanetur. et  
aer in clusus in aere in littore emittatur. Cuius rō.  
ē. Nam essentialis causa terremotus atq; tempest-  
atis marie. est vapor in clusus in interiorib; ter-  
re. Sic nequaquam mundi huius tempestas cessare  
poterit. nisi maria p̄cibus nris fassa fuerit. ut  
vapor consolacōis eius erumpere quidem possit.

**G.**

unde. Ambro. In. libro. p̄fatōm. Gaudemus  
marie clemēciam. ad hauriendam inde suauita-  
tem atq; dulcedinem sempiternam **Aristoteles**. In. lib.  
problematū. litus nescio qua occulta uirtute. gra-  
tat dormiente in nauis. dū appropiat uersus litus.  
Cuius rō tangetur infra. capto. De uigilia. Sic  
maria exatit in hac uita mentem hoīs. ipsum  
ab inueniabus malis p̄muniens unius. unde  
Crisostomus. In. lib. De progamio sancte uirginis.

**H.**



Tanta erga nos clemencia ē marie uirginis. q̄ p̄ccō  
rem tam in uigilia qm̄ in sompno. p̄munit & exi-  
cat a nocuis. **Fontinus** In. Descriptōibus uinū. Aqua  
semp̄ deorsum fluit. In littore tamen aliquatū sur-  
sum tendit. Sic mens humana. incessantē ad ymā  
fluit mortis p̄ccat. marie autem stans iuxta sedule.  
Insuper petit altitudis sempiterno. **Vnde. Cassianus**  
In. libro. collatōm. sanctorū. p̄m. In cessanter i me-  
dium uergit natura conditō q̄ humana. maria tū  
sine meritis ipm̄ a casu prohibet & ruina. **Thomastus**  
In. Summa. naturalū. Eucū. Ip̄as aquas maris saltas  
lucis suis uirtute dulces reddit. Cuius signū ē. Na-  
ut refero p̄hō. m. 3.º. geotharorū. Aqua maris ē sal-  
ta & amara. fontes autē qm̄ in littore fuerit. Dul-  
ces sunt ualde. Cuius etiam rō tanget infra. 88.º.  
Di. veritate. Sic omne quidem amaritudinem huius  
uite. maria dulcem reddit suis gratia & uirtute.  
Huc usq̄ piam uirginem apparauim⁹ lictori. ut s̄.  
postq̄m igitur uicem uirginem apparauim⁹ lictori.  
nūc cōsequēdū apparauimus ipsā sol. ob solis accide-  
ntia uaria seu naturas. Quemadmodū infra patebit  
**Comētor.** In. libro. De. Inp̄ssionibus. aeris. fulmē fac-  
tum in sole. p̄ccus nichil nocet. Cuius ratio ē. Na  
solis radis uirtutem fulminis distribuit circūq̄q̄  
Sic diuū fulmen uindictē diuine illuxit. Effigie  
marie clemencia p̄ccus nil nocebit. **Vnde. Ambrosius**  
In. libro. De. uirginitate. Cuiq̄ mā dei cont̄ nos de-  
censa fuerit. ipm̄ inq̄r māter casti abigit & ex-  
tinguit. **Fontinus.** In. Descriptōibus. uinū. Sol iudic  
naturalit̄ sup̄ aquas. Sic maria. suis querit deli-  
ctis. sup̄ aquas mundane molestie extinguenas  
Retrahitur ad caput De uerbo Cristo **Thomastus.**  
In. Summa. naturalū. Eucū. Sol in suo artu. fr̄g⁹



uentamq; p̄mittit. Sic maria exorta p̄ gratiam suā  
i mente hominis. uentum p̄mittit eternū refrigeriū  
et dulcoris. **¶** Unde. Methodius. ḡitur. in. lib. 20. De  
finibus. mundi. Cumq; maria mentē p̄ ortum sue  
gracie infulserit. mox mira nobis dulcedo et futu-  
tas i notescit. **¶** Revertatur ad caput. De. Cristo

in. lib. 20. De. concenab? orbis. Sol in die lucet supra  
terram. i nocte in fra terram. Sic maria in die  
quiescente. illuminat ipm mundum. In nocte autē  
future. p̄gatorū irradiat uniuersum. **¶** Unde. Tundal  
in. lib. 20. Reuelacōm. Anno q; maria nō solū ip-  
sum mundum. s; et illustret p̄gatorū quid totū

In. Sciencia. perspectus. Sol in die lucet  
mundo. i nocte ipsi celo. Sic maria in die quies-  
cens lucet mundo. et eis qm i mundo sunt hominibus uniuersis.  
In nocte autē lucet pro nobis. oculis saluatoris.

**¶** Unde. Haymo. Sup. Actus. ap̄lōrū. Maria quies-  
cens in die. mundum illuminat. in nocte autē deū ipā  
placet. **¶** Requie. De. Sanctis

In. lib. 9. suorum  
ommentat. Sol aurum gignit in infimis t̄re par-  
tibus. et gemitum ad lucem pertrahit supra terram.  
Sic et maria in nr̄is mentibus gignit gratiā et  
uirtutem. quibus gemas. ad felicitatē nos p̄trahit

beatitudinē q; celestem. **¶** Unde. Isidorus. In. lib. 9. De  
x. milibus coronatorū. Omne q; uirtutis et gratie  
in nobis repertum fuerit. a maria deuēit et  
descendit

In. Speculo. natur. th. Dum sol ori-  
tur. horrendus mox fragor et strepitus. in orientis  
libus partibus generatur cumq; nato tangeatur  
in fra. caplo. De. Verbo. Sic et dū maria i mēte  
nr̄a per clemētiā suā oritur. mirus mox  
fragor laudis eius a nobis in eccl̄a audiat. **¶** In.



Anselm<sup>9</sup> in. Sermones. In ortu quidem festinitas ma-  
rie uirginis. mox unusquisque fidelium. resonantia fa-  
ciat eius precum et canoris. In. tractatu  
De. statibus. liquidorum. Ascendente sole. ascendit et  
sagittis in corporibus uniuersis. Cuius signum e. Nam  
lagnores i meridie cum sol in summu gradu ascen-  
derit. in capite magis pungunt. In media autem  
nocte. que et descendus solis iam dicitur. in firmi-  
tates mentis urgent. Cuius etiam causa e. Nam  
motum solis. sequitur motus sagittis. Hic ascenden-  
te maria. ad thronu celestis glorie. coascendat et  
i nobis tota deuoto mentis ire. **C**um. Orige-  
nes. in. libro. De. Rit. statum. Ascendente igitur  
maria per gratiam. in orizonte mentis humane.  
mox et in ipsum ascendat. totus ardor deuotionis  
in terne. Huc usque quamuis ipsum soli. ut sup. placit

lib. 6.

**P.**

In. theoria. planetarum. Qui diuini  
volunt in astris. futuros reru effectus pariter et  
euentus. in altu se montem transferunt ut frequer  
Cui<sup>9</sup> ro e. Nam ut ait Eucemo. in. libro. De. con-  
cenabus. Orbis. subalica montem aeris. subalica  
tem effiat rationis. Sic et qui contemplari nunc in  
hac uita uolunt celestem patriam. ipsum deuote  
ascendant addeantque mariam. **C**um. Tertulian<sup>9</sup>  
in. libro. De. humanis actibus. Ascendendum primum et  
ad marie placia. ante quam quis mentis figat oeu-  
lum in beatitudine sempiterna  
in. Descriptio  
inbus. unius. Eos quippe qui altum peragunt mo-  
tem ascende. finem necesse e suis naribus applicare.

**Q.**

**R.**



S.

Cum ratio est. Nam nimis subtilitas montem aeris. ascendente interdum suffocatur et occidit. Quam quidem excellentiam aeris. temperat ipse finis. si narius fuerit applicatus. Sic ad mariam qui adumbrandi voluit accedere. finem quidem primum humilitatis sue. metas studeant oculo applicare. Unde. Cassianus. in. lib. 2. col. lacorum. scorum primum. accedentes ad marem dimittimus primum studeamus gremio humiliter in clivari. **Fontinus.** in. Descriptioibus. vniuersi. Annon in valle gremio. in monte ante leuius. signant et notabiliter tunc. Cum ratio tangit infra. capto. De torpore. Sic mens in valle quidem primum misere gravis et torpida. mediante quidem ipsa maria. ad oia fit leuius. spontaneitas et prompta. Unde. Eusebius. in. lib. 2. De. v. viliis. coronatorum. mens que ante actidiosa fuit et torpida. cum ad mariam confugerit. leuius ad oia apparebit. **Archidia.** Tharenon. in. lib. 2. De. Genibus. in. Natura. Qui defert marem aque. de uallibus uisus montem. Antequam supra motem ueniat. tota aqua sumitur et exalat. Cum ratio est. Nam subtilitas aut siccitas motem aeris clambit et sumit aqua illam. Sic qui motem turbidam marie deuote abiecit. profecto mox ab eo tota tristitia exalabit. Recurratur ad capitulum De Patria. infra. Unde. Crisostomus. in. lib. 2. De. laudibus. hie uirginis. fac notum marie uirginis. et antequam feteris. expero eris ois molestie et doloris. **palemon.** in. lib. 2. De. Sigis. Naturarum. Qui in monte moritur uolui rubet. in uallibus uero passet. Cum ratio tangetur infra. capto. De. uenustate. Sic qui sub umbra et protectio marie mortuus fuerit. rubore eterni luminis effulgebit. in uallibus aut mundane consolationis mortuus. eterna est attinge palandus. Unde. Eusebius.

T.

V.



In libro. De. x. milibus. Coronator. Qui marie mto  
 illustratus luce moritur. ppetuo ipse diminutus hinc  
 eternali illustratur. **plinius**. In. Speculo. natali. In  
 alto quidem monte. odores aano & longinqua pera  
 pimus regione. Cuius signu e. Nam ut refert. So  
 lino. In. libro. reru. vltim. altos montes transuolat  
 ibi qz adducit. sicut & explorat. Sic & nos mente  
 stantes in mari mrgm. odorem mor mris per  
 apimus refrigerij semper. **¶** Unde. hugo. De. sancto  
 victore. In odore currentes marie mrgms. odorem  
 senum felicitatis lctudis qz celestis. **Amica**. In. li.  
 suoru. omeratu. gons naturalis gignit aurum. sz  
 omne aurum qz protulerit. ad ualles reuertit & repellit  
 Sic maria gignit aurum aurum ppetui quoqz fructus.  
 gemituqz transmittit humilibus fides. **¶** Unde. Re  
 ningu. lib. 9. m. De. uirtute. oritur. Que etem dei  
 filium mudo in salutem genuit. ad huc coetudie om  
 nem & uirtute gignit & efficit. humilibusqz tuf  
 mittit. **philaretus** In. tractatu. De. placuit. gorbore.  
 Qui pede legato montem ascendit. mox senat. sed  
 oio eodem lagre pes sibi aliis aut manus opposita  
 in firmatur. Cuius ro tangetur infra. ca. De. ope  
 Sic qui ad mariam pfident. ascenderit. mente et  
 corpore proculdubio sanus erit. sz hoc ab ipso eri  
 gunt. ut salte mens sua in se. humile in firmet  
**¶** Unde. ambrosius. In. libro. pfacom. Necessu pmi e  
 carnem materari. scienciaqz turbari. Anceqm  
 marie ualeat uirtute & grata illustrari. **Centobius**  
 In. libro. De. giro. orbis. oio mons naturalis mris  
 e natus. fontib9 irriguus & porosus. Sic maria. ius  
 e nata ut seruet in se profugos. fontib9 irrigua  
 ut per fundat aridos. porosa ut lingue suscipiat tri  
 bulatos. **¶** Huc usqz maria motibus ppat. Sup.

X

P.

Z.



.A.

In libro. De p[ro]p[ri]et[ati]b[us] aeris. pallidus circulus  
lunam ambiens. umbram pluviamq[ue] adducit. Cui[us] ratio  
e[st]. Nam regio seu circūfentia lune pallida. aerem signi-  
ficat ualde humectatum. ut ostendit. Alexander super  
3<sup>m</sup>. Moysaroz. Humectatus aut[em] aer. in estate umbram  
facit. in hieme uero nixem. ut recitat Theophrastus  
Sic dum mens merore facta pallida mariam de-  
uote amplectitur. ymber sibi mox celestis gratie  
comitatur. Ante. Cassianus. In libro. Collationū. Ro-  
manū p[ri]m[us]. Cumq[ue] mens n[ost]ra deuote ambit amplecti-  
turq[ue] mariam. consolacionem mox recipiet dulce  
dñemq[ue] eternam

.B.

In. De scriptis. vniuersi.  
Luna suo splendore. frigus semp[er] efficit et inducit. Cui[us]  
signum e[st]. Nam ut refert Theophrastus. In. Summa. na-  
turaliū s[ci]entiarū. Nix liquefit a solis lumine. a luna  
uero minime. Cumq[ue] eadem causa tangeret infra. cap.  
De g[ra]ndia. Sic maria m[un]do o[mn]i uirtutis et gratie.  
frigus semp[er] infert refrigeracionis atq[ue] consolacio-  
nis eterne. Ante. Inselm[us]. In. Sermone. Nunq[ua]m e[st]  
tempus atq[ue] neq[ue] hora. i[n] qua nos non p[ro]solvatur re-  
frigeretq[ue] maria. Recitat. ad ca[pitulum]. De. Cristo

.C.

.X. B.

In. vi. Adh[uc]. libro. Luna ex sui natura cogit demones  
flet mirū quidem. Refert enī. fontin[us]. q[uod] Gallus  
cantus mediotectus. id[est] i[n] media nocte factus. fu-  
git demones. et pellit fantasmata uniuersa. Si igitur  
hunc effectum. cantus galli efficit. multo magis p[er]  
luna. que gallum ad cantū excitat et in pellit Cui[us]  
eadem ratio tangeret infra. caplo. De visione. Sic  
Sic maria erga hoīes. amicos pellit et fugat pri-



apex infernales. Unde. Iuliano. In. Sermon. Vnde  
te quidem sua maria. terret & fugat demonia un  
uersa

In. theoricis. planetarum. Luna. ex se no  
bis eterno tempore quandā faciem representat. Inel  
ligimus autē hūc de macula lune. que admittit hu  
mam volens apparendū cernam. maria luna. Cum  
eciam causa tanget in fra. caplo de isto. Sic ma  
ria mater beatissime deitatis. sue semp nobis volūm  
exhibet pietatis. Unde. Ambrosius. In. libro. De. virgi  
nitate. Inquā ē tempus aliq sine hora. i qua a  
nobis marie facies sit auersa

In. Breui  
loquio. Dicitur. Aron. In plenilunio. demones iob  
se suis corporibus conquiescunt. Cum causa. tangat  
in fra. caplo. De. vena. Sic in marie plenitudine  
pietatis. hostes quietantur aduersantes actibus sensi  
bus q̄ humano. Unde. Haymo. sup. Actus. Apostolorum.  
Maria quippe plenitudie sue ineffabilis pietatis. se  
dat i nobis ipsos suggestores diabolice prauitatis

In. Descriptioibus. vmbil. Et anno quo luna  
eclipsatur. auerunt eade muri. edificia atqz tres.  
Cumis racia tacta ē sup̄a. Sic & dum maria in  
humano mentibus per ignorāciam & iniquitūdi  
nem eclipsat. casus mer & ruina mortis p̄etue  
connectitur. Unde. Iero. In. Episto. Ad Nepocianū  
Vbiqz marie i memor existetis. ibi necessario  
casum facit. Require De. Cristo

In. ite  
tatu. De. Naturis. liquidorū. Qm̄ dū aliq̄d mali la  
tuit in corpore. luna desinit pungere. donec illud di  
gerat & expellat. Cumis signū ē. q̄ in nobilissimo. ne  
hemoculis p̄iungit morbi. Sic qm̄ dū aliq̄ i mi  
net tribulatiois aut molestie. maria n̄ cessat homi  
nem amonere. donec totū malū hōis sua repel  
lat

.d.

.e.

.f.



lac gratia et virtute. **¶** Unde. Tundatus. in. libro. Reue-  
lationum. In mittit enim nobis virgo beata cogitationes  
plurimas. quibus mundi peccemus huius molestias  
universas. Recurrat ad caput. De cristo cometa. **¶**  
in. libro. De insurrectionibus. aeris. Cuius mare ceperit  
et undare. mox ipsum luna intus pertrahit ad abissi-  
mum. Cuius ratio est. Nam luna causat fluxum et re-  
fluxum maris. eo quod habeat dominum super aquas  
ut ostendit propheta. in. 3. prophetarum. Sic et dum mare  
mundane tribulationis undaverit. mox omne malum  
nostrum maria in abyssum proicit et transmittit. **¶**  
Unde. Gervasio. in. Sermone. In undantibus tribulationibus  
huius seculi. maria isolationem destinat prociui. **¶**  
in. alexand. Sup. 2. prophetarum. Luna terminum po-  
nit mari. Cuius declaratio. habita est supra. Sic maria  
mater gratiae. terminum ponit cunctis molestiis huius  
vite. **¶** Unde. Ambrosius. in. Exameron. Mater siquidem  
domini. cunctis finem imponit tribulationibus huius mundi.  
Huc usque pergam virginem. hinc dominum comparanda.  
postquam igitur gloriosam virginem comparavimus. hinc  
nunc consequenter comparabimus ipsam ymbri. ob va-  
ria ymbriis accidentia. atque quoniam plurimas quales.  
**¶** Theophrastus. in. Summa. naturarum. Ceterum ymbres maiores  
nullas timeat aque quam terre. Cuius signum est. Nam  
qui navigio utuntur. magis pluviantur. quam qui in luto  
re gradiuntur. ut refert. fontem. Cuius etiam ratio con-  
gruit infra. cap. De veritate. Sic maria. maiores  
in quam nullas transmittit sue virtutis et gratiae. in aequam  
tribulationis et angustiae. quam in terram felicitatis et  
fluentiaeque mundane. **¶** Unde. Anselmus. in. Summa. maria  
quidem. magis dirigit oculos sue pietatis et gratiae  
super afflictos mundi huius molestia et dolore. quam super  
affluentes in hac seculo mundano lumine seu candore



**C**ande. Iero? In Episto. Ad paulam & Eustochim. maria  
itaqz consolatos in hoc mundo respicit. Afflictos ante  
& opustos. attrahit & assumit. **Solmus.** In. lib. 9. Perum.  
ymber. pices pellit in fundum. Timent em pices  
naturale ipm ymbrem. ut recitat plinius. In. Spe  
culo naturali. Sic maria suggestiones prandas. do  
cordibus pellit hominu. ipas qz pellit & reprimat  
in abissum **C**ande. Cassianus. In. libro. collationum.  
scoru pmi. maria namqz per uirtutis sue radu.  
ipos fugat & pellit demones in iherus. **Theophil.**  
In. Breuiloquio. Diuersaru. arcu. ymber recardat  
in aqua & impedit motum nauis. Tunc signu est  
nam uelocius uehitur nauis. sereno in tempore. q  
in ymbre. Sic maria dum menti aduenerit. de flux  
um hominu in mortem repmit & restringit **C**and  
harmo. sup. apocathp. Gemo quippe humanu. cotti e  
in nihilum atqz in mortem uergeret. nisi ipm ma  
rie clemencia sustentaret. Recurrat. Ad cap. De xpo  
**plinius.** In. Speculo. naturali. ymber fumare facit in  
dos magnaru amu uniuersos. Omnis ro tangetur  
in fia. caplo. De uolucate. Sic maria fumum dicit di  
uinu desiderij & amoris. de mdis & cordibus homi  
num unius **C**ande. Ambro? In. Exameron. maria  
sursu facit fumigare aspectibus diuino. quid qz in  
nobis fuerit gratie aut uirtutis **Centobius.** In. libeo  
De. Curo. orbis. ymber supremu gaudiu confert. mo  
dulaminis qz dulcorem. Tunc signum e. Nam sirene  
sereno tristant tempore. Ad ueniencie aut gaudent  
ymbre. Sic maria mater in effabilis pietatis. gau  
diu confert cunctis tam mente qm corpore tri  
bulatis **C**ande. cris? nulla unqm in hac mundo  
moestia cernit. quam n marie consolaco committetur.



k.

l.

g.







Sufficienter igitur determinato De hoc elemento. or.  
Nunc consequent agendum de hac li<sup>a</sup>. N. videlicet  
De. Naturitate. Cetera requirantur in. Registro.

**A**llabicus. in. perspectus. Scientia. Circa or. Caput. dum.  
tum solis. luna. interius ex. candelat. Cum. De. Naturitate. .2.  
ratio ē. Nam quanto tenebrosior nox ipsa fuerit. tanto  
luna pulchrius luceat. ut ostendit Euen<sup>9</sup>. Circa or  
tum vero solis. tenebrosior exstat nox. ut recitat  
Theophrastus. Sic circa ortum naturitatis sue. animus  
lucescat pulchrius menti nostre. ¶ Unde. Huius. sup  
or. Athen. Nemo ambigit quod animus eo que quo car  
nem assumpserat. speciatim quiddam virtute humanam  
mentibus luceat. ¶ Exar. in. libro. De. Sigillis. lapid<sup>9</sup>  
Gemma p<sup>o</sup>iosa quolibz in terris nata. nullius ad huc ē  
efficacie aut virtutis. nisi cum auro circumducatur. Aut  
circa aurum ab aliquo deferatur. Sic animus natus in  
carne. nullius tamen ad huc erga nos ē pretat<sup>9</sup> aut  
gratie. nisi nro circumducatur bono opere aut virtute  
¶ Unde. Buius. in. Simone. De. Naturitate. Do. Nō no  
bis proderit ad salutem. animum natū fore t<sup>o</sup>ne.  
nisi eam per gratiam et virtutē. natus fuerit  
intra metem philosoph<sup>9</sup> in. problematibus. Sol quide  
semp<sup>9</sup> maioris cernitur quantitat<sup>9</sup>. in suo ortu pa  
riter et occasu. Cum rō ē. multū medū et vapar  
mulus interpositus inter nos et corpus salare.  
Cum ead<sup>9</sup> signū ē. Nam no refert. fontan<sup>9</sup>. Nūm<sup>9</sup>  
apparet grossior in aqua quā est aquam. Sic aut<sup>9</sup>  
maioris semp<sup>9</sup> erga nos cernitur pretat<sup>9</sup>. i. or. vi  
delicet sue naturas. At in occasu sue felicitate per  
simo theophrastus. in. Buius. in. Duius. in. Arcu. Or.

.8.

.5.



3. **O**rigēna polita & fulgida. post in mersionem sanguis magis fulget. Cumq; rāo tangeat infra capitulo. De. passio. Nec mirū quidem. Refert enī. fontinus. quod aurum fulgidius efficit. dū rore aliquatū humectat. Sic & cristus purissimis illis sanguinibus immersus virgine. maiori proculdubio erga nos luit lumine pietatis.

**T.** unde. Damascen. In lib. Cont. Errores Grecoz. Qui ante natiuitatē suam erat rigidus. natus de virgine molliissimus & effectus. **philaretus.** In. tractatu. De. natura gorbōrū. Cumq; sal igitur immittitur. vapor ignis capiti minus nocet. Sic eo ipso qd cristus per suam fidelissimā natiuitatem carnem in unius fuerat. ex tunc in patris humano generi penitus nil nocebat.

unde. Cassianus. In libro. Collatōn. Scōrū. patrū. Cristus natus in carne. omne patris erga nos ex tinxit seminem & furorem **plinius.** In. Specto. naturali. Herba regionis orta. subito orta subitoq; arefacta pestilentiam imminebat idcirco illo āno. Testante. Solino. In. lib. Perit. qm ait. eo āno quo viror hbari subito arefactus fuerit. pestilentia quodammodo psto erit. Cumq; rāo tangeat infra. Capto. De. voluntate. Sic cristus natus in carne. subitoq; arefactus in mēte. pestilentia mortis idcirco imminebat unde. August. In. Episto. Ad volusianū. Natiuitas quidē crisi. per in gratitudinem extinguit in mēte hominis. pestem adde idcirco ppetue miserie & doloris. Pecunrat. Ad

**X.** caplm De. cristo. **archita.** Tharconus. In. lib. De. Euentibus. In. natura. Quibus aut tris. in qua arbor aliqua nata fuerit. dū a casu longoq; tempore pmanebat. Sic mēs humana mēte quam cristus mēte natus



fuerit. a casu & ruina mortis i columna permanebit  
 unde. Remigius. sup. mathem. Natus quide xpc  
 in tra mentem hominis. casum repellit omne eterne  
 miserie & doloris. Tetera De. Natunatio requirantur  
 In. Tabula. & In. Registro. eo modo. quo supra tactum  
 est. huc usq. De. Natunatio dicta sufficiat. **Petrus**  
 ad caplm De. Cristo. Item De. Eulogista. Supra.  
**Sohnus**. In. lib. Peru. Caparis herba illa nobilis.  
 nequaquam nascit ubi plantat. s. in terra arida & de  
 scerta. Sic cristus nequaquam nasci voluit. virili ate  
 plantatus semine. s. ex maria mrgine. desiccata  
 & arida ab oi gaudia & ardore. **fontinus**. In. Descrip  
 tiombus. vniuersi. Herba illa que seras nectes q  
 confringit & aperit. in eo loco nasci gnuent. ubi in  
 cendium aliquot grande fuerit. Cumis ro eagee  
 in fia. Caplo. De. voto. Sic cristus. qm vitam vite  
 aperit. de sola uirgine maria nasci voluit. que ig  
 ne spiritus sancti totalit uita fuit. **philaretus**. In. De  
 catu. De. Naturis. gorbore. Cumq. puer aliq. nas  
 citur. mater mor a laguore que fortassis ante  
 habuit liberat. Cumis ratio e. Nam ut refert co  
 Natunus. In. libro De. gelaolia. Dolor pellit dolore.  
 infirmitasq. lagrem. Cumis eam signu e. q. Astu  
 ti medici carnem patientem vulnerant. & sic ipm  
 sanant. ut refert Euen. Sic & dum crist. misti  
 ce quide per gratiam in tra metem nascit. mor  
 vniuersus lagr molestiaq. fugatur. Requie De. Cristo  
**Alhabiti**. In. Ga. perspectina. Circa ortu solis. luna  
 in cernis grotidescit. Cumis ro est Nam quato te  
 nebrorior nor ipa fuerit. tanto luna sincer. eluc

P.

no

Z.

A.



Sufficienti itaqz determinato. De hoc Elemento. Pl.  
puno prosequendum de hac lra. D. Caputula ante  
que de ee videtur. requiratur in tabula z registro

- O**mentator. In libro. De Inpressionibz aeris **Capitulu**  
Id hoc em ut ymber proueniat. note de. oroe  
**b.** Et ut multus vapor nebulaz ascendat. Cumis ro est  
nam vapor digestus. in ymbrem oedit. ut ostendit  
alexander. sup. 3<sup>m</sup>. meteororum. Sic ut z nobis ymber  
proueniat celestis consolacois z gracie. necesse e ut  
multa ascendat oratio atqz deuoto mentis me  
**U**nde. origenes. In lib. De. Puti. Ecclesiaru. Du em  
utilida ascendit oro. multa descendit gratia consolacoqz  
a deo. **archua.** Tharentinus. In lib. De. Euentibus.  
In placida. Tranquillo existente aere. flama ignis  
rectius sursum tendit. Sic z in tranquillitate tie.  
**C.** alius acutius ascendit deuoto orois me **U**nde  
Richardus. De. scō. victore. Tranquillitas z par hois.  
oracione mram sursum ferunt z offerunt aspec  
tu conditoris. **fontinus.** In. De. scriptoibus. vmbri.  
flatus quidem noster seu abelitus. videtur clare in  
frigore. sz minime in calore. Cumis rati cangean  
in fia. capitulo de. visione. Sic z mra oro oculis i  
notescit pietas diuine. in frigore quide tribulacois  
z agustie. n aut in calore felicitas prospectas qz  
**D.** mundane **U**nde. haimo. sup. apocathp. Oracione uideri  
facit mram n mundana inluptas aut affluca. sed  
tribulaco angustiazqz nostra. **theophilus.** In. Breuiloqo  
Diusari. Arcu. Quanto lapis in funda rotatur. Du  
aub. tanto iaceat remotius. Sic quanto mra oro



Divinus rogetur aut prolongatur. tanto ad aures Divi-  
 nitatis remotus deponatur. **¶** Unde. **Castianus**. In lib<sup>o</sup> colla-  
 tionis scilicet prim<sup>o</sup>. Quanto divitior mea oratio fuerit.  
 tanto Divinis Auribus clarius innotescat. **Comentator**  
 In libro. De insensibilibus aeris. Cumque nebula ascendit  
 pluvius mox consequitur. Dum vero reversus terra re-  
 dit. seremetis seu aere siccitas committitur. Cuius ratio est.  
 Nam ut ait. **Alexand<sup>r</sup>**. Super 3<sup>m</sup>. etharorum nebula sine  
 vapor digestus in aere. materiam ymbriis facit. Si  
 vero vapor aut nebula non ascenderit sed ad terram des-  
 cenderit. ymbriis principium nequaquam erit. Sic et  
 dum multa nebula in Deum ascenderit orationis atque  
 devotionis aere. ymber mox consequitur consolatio  
 eterne. **¶** Unde. **Hugo**. de sancto. victore. Cumque multa  
 oratio ascenderit. multa per consequens consolatio re-  
 ascendit. Requira In capitulo De voto. **Iohannes**. ysa-  
 goge. lib<sup>o</sup> viij<sup>o</sup>. De Dispositione organorum. Quatenus igitur  
 hora aut tempore aut momento corpus aerem  
 aut non emitit. aut non recipit. suffocatum protinus  
 morietur. Attestante philosopho In lib<sup>o</sup> De Respiratione qui  
 ait. et **Theophrastus**. In De parte sensuum. Vita inquam  
 in respiratione consistit. Sic quatenus hora homo  
 suspiria orationis non fecerit. mors sibi proxima inmine-  
 bit. **¶** Unde. **Origenes**. In lib<sup>o</sup> De Ritibus. Scilicet. or-  
 tem mox in cursum. Dum ab oratione desistimus. Quo-  
 cessamus. Et huc usque de oratione. **ysidorus**. In historiis  
 naturalibus. Formica quidem amissa vestigia sui itineris  
 ore suo querit. Sic peccator amissam viam celestis  
 patrie. ore querat et inveniat orationis sedule et  
 devote Recurratur ad tabulam et ad registrum.

.C.

.F.

.G.



Postquam igitur sufficienter determinatum. De hoc Elemento. O. Nunc consequenter agendum de hac tra.  
 40. Cap. aut que de eadem videtur requirere in registro

**O** constantinus in tractatu. De Naturis. li. Cap. De quiddam. Sagivis effusus. ex sui quidem passione natura. marcescere facit gramina atque herbas. Sic sagivis passio domine. virorem in nobis delictis voluptatis concipit mundane. Unde. Jeronimus. In Epistola. ad paulam. et Eustochium. omne pulchritudine huius seculi. aridam et deformem unde facit passio. arist. philaretus in tractatu. De Naturis. morborum in occasu quidem solis. sagivis qui in corporibus fuit mens redit. Et tunc eadem. Constantinus. in lib. De melancholia. qui ait. Ascendente sole. Ascendit et calor in corporibus universis. Vergente autem sole ad occasum. vergit ad interiora ipse sagivus. Cuius ratio est. Nam ut ait. Galienus. in vi. medicinalium. lib. 9. motus sagivus sequitur motum solis. Cuius eadem signum est. Nam ut refert. Suenus corpora humana in die aliquantulum rubescunt. In nocte autem penitus expallescent. Sic autem occasum. ab eis in. Ad memoriam mentis veniat ipsa mors passio quoque arist. Unde. Anselmus. In sermone. de morte quidem in morte hominis. sagivus ad cor nostrum veniat domine passio. Requere de. xpo Comestator. in lib. De Inpirationibus aeris. patiente atque turbata superiore regione aeris. patiuntur et in terra se aliquantulum corpora universa. Cuius signum est Nam ut recitat constantinus. Cuius regio aeris in temperies amara patitur. mor dolor in nobis auge



sagibus cur-batur. sed et ratio paritatur. Cumque rō ē. nā  
 distemperato dēre. distemperatur et in cunctis corpo-  
 ribus nūc curat. ut probat ypo-cratis in lib<sup>o</sup> epithi-  
 Sic patiente cristo qui beatorū ē regio et patria. cō-  
 pacant et mor corda hominū unūda ¶ Unde. Cri-  
 tostom<sup>9</sup>. sup. mathen. maledicte aīe. que n̄ in cris-  
 ti parte fuerint passione. Recurrat ad caplm. De  
 Eucharistia. **habitu**. In. Scia perspectina. Sole qd  
 patiente eclipsim. multos morbos multa hac anno  
 corpus patientur. Cumque rō ē. Nam per eclipsim so-  
 lis. grandis fit per mutacō in natura. ut ostendit  
 fontinus. In. Descriptōibus. unūsi. Sic eclipsato xp̄i  
 sua felicitima passione. mor et nos omni ppati  
 Annus molestia et dolore ¶ Unde. Gundo. In. Germoe  
 Cumqz cristus ppat. maledictus homo. qui n̄ et ip̄e  
 toto ad pacatur. Recurrat ad caplm. De Cristo.  
**Theophilus**. In. Bremloquo. Diversarū. Arcū. Virga  
 per ignem tracta. Flexibilior efficitur. et in restem  
 igne adaptatur. Sic cristus p ignem adaptatus  
 beatissime passionis. Flexibilioris erga nos effect<sup>9</sup> est  
 pietatis atqz clemencie seu amoris ¶ Unde. Aug<sup>9</sup>  
 Cont. faustū. Tota nra patria. igne emollit<sup>9</sup> cristi  
 beatissime passionis. **Archita**. Tharēt<sup>9</sup>. In. lib<sup>o</sup>. De. F-  
 uentibus. In. Natura. In incendio grandi fco. rubescio  
 perpendicularit<sup>9</sup> totū celum. Cumque rō cacta ē sup<sup>9</sup>.  
 Sic in incendio domine passionis. tota idolū et  
 ipsa ē regio patriarqz celestis ¶ Unde Ambrosius  
 In. Exameron. O quātum flagitū humane miserie.  
 nā passio quidem cristi cūctos deiecit et turbavit  
 choros angeloz. s. mēces emollire n̄ potat pccoz

I.

St. N.

M.

N.



postquā igitur determinauim⁹. De hoc elemento. p  
nunc consequent⁹ agendum de hac lra. d. Et si  
que de eē indētur capitula. requiratur in. Tabla.

**A**ristoteles. in. libro. problematu. Amote in cap<sup>m</sup> de  
temperies. magis semp quiescant in meri dmetē.  
die & i media nocte. Cumq rāto ē. Nam unaqueqz  
res tunc magis quiescat. cum vincit aut cū vincit  
sūt aut sic ē q in temperies aurariū vincuntur  
in meridie. per irāte & calorem solis. Vincunt  
autē in media nocte. ob absentiam & defectū solis.  
Sic vniuersē mundi hui⁹ molestie finit⁹ & quiescit  
i nocte tribulacōis & penitencie. atqz i meridie amo  
ris sen horridis diuine **Solimus**. in. lib<sup>o</sup> Peru. Quia  
in alto volantes aere. quiescant & id nō mouent  
alas. Sic & nos stanti in atitudine hui⁹ uite. ab  
omni mox cessamus & quiescim⁹ bono opere & Deute  
**Unde** ysidorus. in. De Summo Bono. Atacido siquidē  
temporaneē dignitas. quiescem nobis effiat atqz ac  
adidm in peccatis. **philosophus**. in. problematib⁹. Ique  
stantes & quiescentes. acis pputrescūt. Testante. po  
eta. qm sit. Et putrescunt. in monēdau aque. Cui⁹  
etiam rō tacta ē supra. Sic & mentes humane. in  
bono corpentes & quiescentes opere. in etnā subito  
computrescent miseria & dolore **Unde**. h aymo. si  
apocalyp. mens que mō a bono quiescit ope. pe  
tuo quiescet in supbia & merore. Requie De. d.  
**Fontinus**. in. Descripcōibus. vniū. Cumqz post multū  
laborem itinēria quiescim⁹ & surgim⁹. maiore mor  
in pedibus dolorem percipim⁹ & senim⁹. Cui⁹ rō  
tangeatur infra. Capitulo De virtute. Sic & nos



Dum a bono incepto opere quiescam? maiore mor  
dorem in rememorando atq; obstatu sentiemus.

**U**nde. Salustius. In. Jugurtho. Dum quiescit ab  
opere. Diffidius eandē ipm poterit inchoare. Pe  
cunat ad capm registrari De. Acadia. **fontinus.**

In. Descriptioibus. vniuersi. Circa montes. quiescit exstac  
ter. Cuius rō habita ē sup. Sic sub sanctorū confi  
dentia. quiescit semp exstac tranquillior quoq; vici

**Antenna.** In. lib. De. quatuor. Diluvio. Aqua quiescit  
et stans. lutū seu lutum fundū habet. Sic mentes  
humane. quiescit in hac msa et corpore. lutū m se co  
trahent feculentie sempiternae **Platonis.** In. lib. De

oceani. Circolo. Post quietem multam maris. pestis  
aut tempestas ualida committitur. Cui rō ē. Nam qui  
etiam existens mare multū sibi aerem. in arthrit et

inbibit. qui uentorum exstac principū. Sic post mul  
tam quietem humane acacie. tempestas sequitur in  
serie sempiternae **U**nde haymo. sup. apocalyp. post qe  
tem inqm mundane felicitatis et affluencie. in quiete

do pronemet quassatiois eterne. **philaretus.** In.  
tractatu. De. statibus. morboz. Corpus quide humane.

que in statibus sunt quiescit. multam materiam mor  
bi contrahunt et agunt. Cui rō ē. Nam in calib. no  
ait. **Antenna.** In. vi. ordinatur. lib. calor totalit sup

foctur. Sic et mentes humane. quiescit in hoc seculo  
et tranquille. morbum sibi contrahent in utilitatis  
sempiternae. Cetera registratur in tabula. et registro.

**S**ufficiens igitur determinato de. hoc elemento  
De. suo Anr agendum De. hac h. a. R. et pri  
mū quidem De. Resurrectione. C. ubi. Supra

**S**ufficiens igitur determinato de. hoc elemento  
De. suo Anr agendum De. hac h. a. R. et pri  
mū quidem De. Resurrectione. C. ubi. Supra



Sufficienter igitur determinato. De hoc elemento. **D.**  
Sunt amplius prosequendum De hac lra. **P. D.**  
si aliqua videtur de eo capitula. requirantur. In tabla.

**D.**

110

Habitus. In theoria planetarum. Surgente **Capitula**  
at Ascendente planeta aliquo. in habitabili **De. Prino.**  
regione. conceptiones anno illo sunt multae. Cum igitur ratio  
cangeatur infra. caplo. De. visione. Sic resurgente xpo  
a mortuis. conceptiones uarie accidunt celestis gratiae et  
amoris. Unde. Cassiodorus. Sup. p. 1. 1. tempore.  
quidem resurrectionis cristi. maior tempus patet in fine  
Amoris refrigerij qz diuini. **Comentatio 2.** In lib. De. In  
pressionibz. aeris. Surgente sole in suo orcu. surgunt et  
protinus ipse nubes. Cum ro e Nam ut refert Al  
lexander. sup. 3. metharou. In nocte aer nehemens  
humidus e effectus. Sol igitur oriens vaporem et hu  
morem collectum. attrahit de aeris regione. Sic et re  
surgente cristo a mortuis. resurgamz et nos a pra  
uitatibus uniuersis. Unde. Origenes. In. lib. De. Pi  
tu. Eccliaru. Nulli ad salutem cristi proderit resurre  
cio. nisi et ipse homo resurrexerit a pcc. **Costantius.** In  
Tractatu. De. natura. liquidor. Surgente sole. Inno  
orizontis mundi. surgit protinus et Ascendit uersus  
caput sagittis in corporibus uniuersis. Cum ro e. Nam  
motus sagittis sequitur motum solis. ut ostendit. An  
tonius. In. vi. 9. medicinaliu. libro. Sic resurgente cristo  
ad orizontem eternitatis. tota et i ipm coassurgat de  
uocao karitatis. Unde. Ambro. In. Exameron. Ipe  
quidem resurrectionis domini. tota et in ipm surgat  
deuocao cordis nostri. **Aristoteles.** In. lib. De. Re  
gumne. principu. ad Alexandru. Gritudinem semp et

**P.**





fero. Dum quis oriente solari lumine. in strato pman  
serit et sapore. Testante philareto. In. libro. De. Regi  
mine Sarcas. qui ait. Sompnus profundus circa  
ortum solis. nocuus est pplexionib<sup>9</sup> uniuersis. Vig  
lare aut d mane. sancta et ualitudin sume fero  
Cuius eam ratio tangeat infra caplo de uisione  
Sic et mortem infero tie. Dum quis in gloriosa  
cristi resurrectione. in actibus perstiterit aut sape  
re unde. Origenes. In. libro. De. Rit. Ecce aut  
gens inqm illa. digna e morte ppeas. que in crisi  
resurrectione in grata fuit et i digna. **Alfarabius.** In  
lib<sup>9</sup> comecoru. Ros in equam nemens. in ortu solis  
uelud nebula protinus sursum redit. Cuius signum  
est. Nam ros e. quedam<sup>9</sup> sup. In. caplo registrato  
De. Deuotione. Sic cristus postqm in equa munda  
ne tribulatiois uenit. post passionem mor suq. ad  
regnum beate patrie resurrexit. unde. Beda. In. O.  
Cristus nati debuit. pati uoluit. quib<sup>9</sup> actis resurre  
xit. atqz ad celeste solium remeant. **Archita.** Tha  
rentem? In. lib<sup>9</sup> De. Genialib<sup>9</sup>. In. placid. Vas aureum  
rore pleni. optimeqz offertum. quatuorqz in profun  
dis terre sperab<sup>9</sup>. Abcondit. succedente tamen que  
sup<sup>9</sup> etiam eleuatur. Sic cristus quancumqz post  
suam passionem sub terra latuerit. tande tamen a  
mortuis resurrexit. Notandu aut circa phabica  
qz in item redeunt capitulu De. Ascensione. et De  
Resurrectione. Et de hoc reqre In. itab<sup>9</sup> et registro  
Postqm igitur determinatum<sup>9</sup> de hoc elemento. P  
nue demceps prosequendu de hac h.a. S. Et si q  
uidetur de esse capta. requiratur. in itab<sup>9</sup> et Regist<sup>9</sup>

Z.

A.

no

b.



Sufficientem igitur determinato de hoc elemento: G.  
 Nec consequentem agendum. De hac h. a. p. 8. et  
 p. 11. quidem. De Sanctis. ad q. redituri e. p. 2.

**C**omentator. In libro. De impressionibus aeris. subest ca. De  
 sup. regionem siccam et calidam. Sumuntur Sanctis.

**E.** Testante. Anempite. sup. 3. m. orationum. qui ait. q. nu-  
 bes sex modis annihilantur. pmo quia aut quia regio  
 nubium sicca e. et calida uehement. ut ante dictu e.  
 Aut quia nubes ymbrem emiserit tota. Aut q. nu-  
 bes resoluntur in aerem. Aut quia nubes uirtute stel-  
 larum sunt sursum trahite. Alij duo modi tacti sunt sup.  
 Sic sancti sup. calidos idest felices in hoc seculo. in suo  
 delectantur auxilio uniuerso. **V**nde. Origenes. In lib. De

**S.** p. 11. Ecclesiam. Qui felices fuerit in hoc seculo. scilicet  
 Dei destituent auxilio uniuerso. **philosophus**. In proble-  
 matibus. In quantacumq. statui sumus tenebris. Accedentes  
 tamen ad parietes. p. 11. Cuius ro. e. Na aer  
 circa parietes tranquillius e. quemadmodum aer circa  
 montes. et circa litora ipsa aqua. Sic in quantacumq.  
 peccatorum caligine statui sumus. Dum tamen ad seos  
 dei deuote accedimus. ipsorum fauorem et auxilium  
 nos sentimus. **V**nde. Remigius. In Sermone. Quia

tuncumq. quis peccator fuerit. ad sanctos tam fugi-  
 ens. a timore quolibet tuncus erit. **p. tholomeus**. Alia  
 uesti. pmo. Natur. a hec e. siderum. ut aquas perahat  
 extra terram. Testante. Quicubron. In lib. 2. f. 11. vite.  
**E.** qui ait. fons maris atq. aquaru om. e. symis et  
 abyssus terre. Vnde aut quorundam stellaru. atq.  
 colarum et pertrahit extra terram. Sic mos iste e.  
 sanctoru. ut uirtute suoru meritoru. ut malis a



nobis distraxerunt unum **¶** unde. Cassianus. In lib.  
collationum scorum. primum. Sanctorum hoc proprium est de il  
latis sibi iniquis nullatenus vindicare. sed mala a nob  
oia sua iniquitate et merito elongare. Ceterum de apostolis.  
**psalmus.** In Speculo. naturalium. In estu quidem ualido  
imbres uelut uentus altius uersus celum. Cuius ratio est  
nam imbes in sublimi aere. colluctantur altius. In estu  
autem ualido aer subtilior demonstratur. Sic sancti in  
estu quidem sue tribulationis et angustie. in regionem  
colluctantur altius beatitudinis sempiternae **¶** unde. Hieronymus  
super actus. apostolorum. Sancti quippe quanto magis pre  
muntur in hoc seculo. tanto magis appropiant ipsi  
celo. **Theophilus.** In. Breuiloquio. Diuersarum. Arcuum  
perennis humidus. in manu ipsius ualide. totum  
quem in se habet exstillet humorem. Sic scorum  
quisque. meritis ipsius uirtutis atque bonorum operum  
fenore emanato solaciumque mirandum **¶** unde. In  
gustinus. In. Epistola. ad. volensium. Scorum quippe  
in ploramus auxilium. manu bonorum operum et uirtutum  
Requie De apostolis. **Archidia.** Tharcentinus. In. libro.  
De. Euenabus. In. natura. Lignum igne ustum. in ex  
tremis partibus suis. quandam uidetur exstillare gutta  
medicinis quidem aptam. Sic sanctorum ois. igne  
adustus deuotionis die. guttam nobis emittit  
consolationis in terne **¶** unde. Origenes. In. libro.  
De. Pitru. Gelasius. Deuotione attendamur ad  
sanctos. et fructus uite sumimus immisos. **Constantinus**  
In. Tractatu. De. Naturis. liquidorum. Lacte aspersa gra  
mina uiuent. sagne uero arent. Sic sancti lacte  
deuotionis aspersi. uiuorem maiorem preferet ce

f.

fla

. G.

und  
vid. dy  
wartzell  
illegib  
vultu  
A.

nois



lectis consolacōis & gratie. nostre autem in honorati in  
gratitudinis sagne. in sua arefcent erga nos pietate

**C**onde. Origenes. In libro. De. Pitu. Eccliarum. Gō  
mmirum deuacōem nostre. ymbrem refundunt celestis  
consolacōis. in gratitudinē autem & negligenciā. vitem  
reddunt pene parit & vmdute **Cōmentator.** In lib. De

Impressionib. aeris. In uehementi quidem frigore. ni  
les inciores exstant terre. Cum ratio maloplex  
& philosophis assignatur. Dicit em̄ auempite In. con  
mento. eo. q. mbes frigore naturatū aggrauat. Nū  
bes igitur aggrauate. in herent vicinus ipi terre

**Themistius.** Aut. In. Gūma. naturatū autē sic ait  
Constat quidem nāpores eē in frigore grossiores  
Nubes igitur cū nil aliud sit qm̄ nāpor. ideo gros  
sioris ē materie in frigore qm̄ calore. Id autem  
grossum fuerit. naturatū apparet ipm̄ etiam. Quā  
obrem nubes terre magis in frigore sunt vici  
ne. ite hanc rōnem quidā tenent. **Ambroson.** autem

In libro sentis uite sic ait. Nulli dubium qm̄ virtus  
celi firmiter percrebat naturatū ipsas nubes. Vnde  
quidem virtus dum validum ad est frigus. a suis  
actionibus idz attraccōibus impeditur. hoc q. phs.

approbant. **Apharabius.** tandem. In libro cōmentoz  
ait. nūem ad grāmōrem qm̄ nāporem. In ueheme

ti igitur frigore. nubes nūc sunt plene. **Alexander**  
aut sup. 3<sup>m</sup>. oretharonū sic ait. Semper quidē grām<sup>9</sup>  
est hoc q. ē frigidum qm̄ q. calidum. Nubes autē  
in uehementi frigore sunt frigide. quā p. tre vici<sup>9</sup>  
in climate Sufficiet q. ostensum ē qd in uehementi



frigore. nubes vumores exstant terre. Sic in uelhe  
 menti frigore mundane tribulacōis. Sancti viciores  
 sunt hoībus immeris. **¶** Unde Cassianus. In lib. colla  
 cionum. sanctorū. prim. Quanto maior tribulacio.  
 tanto sancti p̄stantiores sine auxilio hūc mundo  
**Theophilus.** In. Breuiloquio dīuersarū. Arcū. Cumq;  
 gladio manus deciditur homin. mox p̄m̄ manu ut  
 medulla exeat. Ad parietes uerberet & afflidat. Cui  
 ratio ē. Nam tunc putrefiunt membra etia. nisi  
 medulla expressa fuerit quidem tota. ut ostendit phi  
 laretus. Sic quibus manus deciditur opationis in  
 uiose. sanctos mox pulsant pro accipiendo auxilio  
 et amore. **¶** Unde Giddinus. In. Epistolari. Qui fa  
 cultatem amiserit boni faciendi operis. mox tota de  
 uocione i. modatur ip̄is sanctis. **philaretus.** In. tracta  
 tu. De. Naturis gorborum. Umbra mentium. sancto  
 eos qui ex humore superhabundantis colere in corpe  
 in frig. infirmantur. Cuius rō ē. Nam. umbra poros  
 claudit corporū. ne id quod pulens in corpe fuit.  
 euaporari quidem possit. Quo nō euaporato. super  
 habundare amaritudo colere inq̄m̄ potest. Quē ad  
 modum ostendit constantin. In tractatu. De ypocri  
 dia passionē. Sic & umbrosa sanctorū protectio. ab  
 morbo sanat hoīem tam inentis q̄ corpus uniusci  
**¶** Unde. hugo. De. ito autore. Nil prorsus unūq;  
 nisi i. minere poterit. q̄ scōrum in tercessio abige  
 repellereq; n̄ possit. **Centobius.** In. libro. De. Cui. o.  
 orbis. ut terra pendet i. medio aere. & eadē nō  
 potest. hoc iteo pronem. quia a stellis undiq; aq  
 uer attrahitur & tenetur. Cuius q̄ aduertendum.

M.

N.

O.



quod nemo ambigit. qm terra pendeat & sustentetur  
i medio. Et huius effectus causam philosophi uaria  
assignarunt. Dicit em. **Simplicius**. In lib<sup>o</sup> comentoru  
ceram fore dispositam sicut semitriculid. ut sup p<sup>l</sup>a  
maiem suam natate posset. n. timore aut ei<sup>9</sup> hoies  
habuarent. **Themistius** uo. In. **Suma**. Naturalin. Encunz.  
terram ostendit dispositam sicut tympanu. ut quide  
saltem aut sit ex omni sui parte natate possit sup  
aqua. Et hinc sentencie qm plurimu i mutatur. **Aucebron**  
Aucem. In. lib<sup>o</sup> fontis uite. Dicit adeo uelocem ee motu  
p<sup>l</sup>u mobilis q p uelocitate minis p<sup>l</sup>u firmameti  
terra pendeat i medio & eade nunquam qe possit.

**allabicus**. tandem. In. **Scientia**. perspectus sic inque  
terra ideo pendet i medio. quia grauis. Nam si leuis  
ess. forsitan caderet. Et hui<sup>9</sup> ratio e. Nam p<sup>l</sup>u ex  
ypothesi hoc p<sup>l</sup>u pono. q quidq e uersus celum hoc  
ee sursum. Nunc aut sit e q si tra caderet. necessa  
rio sursum caderet. quia uersus celum cadet. nul  
lum aut graue sursum cadit. **Centobius**. igit. In. lib<sup>o</sup>  
De. Curo orbis arbitratu hoc ee stellaru sideru q  
effectum. Quedmo<sup>m</sup> sup tactum e. Sic q hodierna  
die. totus persistit mundus in suo vigore & ee. hoc  
a sanctoru pro uenit efficacia & uirtute. **Condo**  
harmo. sup. apocalip. Estimo q deus didu mundum  
totu in nichilum redegit. nisi sanctoru uiroru oro  
in esset. **ypochiras**. In. lib<sup>o</sup>. Epithimoz. Anteqm enim  
alunus adueniat pestilencia regionis. multus in ea  
auium conuolatus. Huius ante ro habita e sup. Appli  
cationem ante huius require. In capto De apostolis.  
in p<sup>l</sup>atio. Huc usq de Sanctis. Sup<sup>o</sup> uero plur-a.



Sufficiens igitur determinatio De hoc Elemento. Et  
 sunt consequentia agendum de hac h<sup>ra</sup>. t. Et pri  
 mu quidem De Trinitate. Cetera autem capitula  
 registrata. De t. que & de e<sup>e</sup> inveniuntur ipis qui  
 huius libri carent notitia. requiratur infra m<sup>ta</sup>  
 bula & registro. Quemadmodum infra patebit. et  
 pro ut supra annotatum e<sup>t</sup>. videlicet De Tribulatione

**A**p<sup>er</sup> dicta. Tharentm? in libro. De Euclabio cap<sup>o</sup> De  
 In. natura. Terribilis forma Atadro. ex con Trinitate  
 cessione asseris sup carbonem igneam. & vermem sub?  
 aliquem applicatum. Sic & totus mundus in totum ex  
 frigore patris & filij spiritus quoqz sancti. **V**nde. Bi  
 larius. libro suo. De Trinitate. Totus mundus in totum  
 eo verbo Ego & pater unum sumus. Item. Babb. in. no. p. &  
 fi. & t. **A**lexand<sup>r</sup>. Sup. j<sup>o</sup>. phisicoru. Hec inquit sunt prin  
 cipia mathematica om<sup>n</sup>i rei. ipsa videlicet tria dimensio.  
 Latum. longum & profundum. Sic principium in abus  
 creaturis. est tria personarum in divinis. q<sup>u</sup>o. fili?  
 & sp<sup>o</sup> sanctus. Ille eni longitudo ob potentia. hic pro  
 fundum ob sapientiam. iste latum. ob iocunditatem qua  
 confert & gratiam ut asserit Aug<sup>9</sup>. **Philareus**. In  
 tractatu. De Naturis. morboz. Vbi quidem omne q<sup>u</sup>  
 ad mortem vergit. tribus ultimis digitis e<sup>t</sup> tangit<sup>ur</sup>  
 dum. s. medio. fido. & ultimo. Cuius ratio dupliciter  
 est reddenda. Dicit eni Constantinus. in libro. De. Me  
 lancholia. q<sup>u</sup> p<sup>er</sup>fecti digitu a corde procedunt. in nobrem  
 minus morbidu. **C**onstantin<sup>9</sup> d<sup>o</sup> ait. q<sup>u</sup> anteriores digitu  
 ad tangendum sunt frequentiores ceteris. Dicit igitur  
 Galienus. manus e<sup>e</sup> venenosas ob frequentes tact<sup>9</sup>  
 Sic Vbi humane ignorantie. tribus erat tangē  
 dum p<sup>er</sup>sona divinitatis ex celsa **V**nde. Damascenus.

S.

no

T.

no

V.



In libro. Contra errores. Gregorij. Non erat modus co-  
nemenior quo humana fragilitas. in cognoscenem diui-  
noum duceretur. qm̄ diuinam trinitas personarū.  
**fontem**. In Descripōibus vniūsi. mandragora quide  
postq̄m lacte aut humano perfusa fuerit sagne. mor-  
mamis. caput z pedes ex se pretero. Nec mirū qdē  
Dicunt aī nobis ex peritissim medicorū. q̄ in eo lo-  
co. ubi mulier aliqua suspenditur. herba quedā nascit̄  
habens totam disposiciōem effigiemq̄ humanā. quā  
mirū herbam z ipi mandragoram uocant. Item  
refert. **philinus**. In. Speculo naturali. q̄ dum homo ali-  
quis. in deserto ocafus longo iacuerit tpe. cornuta  
quodāmodo de ipsius capite generetur. gubabiles. n.  
sunt euentus nature. ut refert. **Euemio**. Sic postq̄  
diuinitas lacte z sagne humanitatis perfusa fuerat.  
mer uita ē habere caput prēm. manū que z fili⁹  
z pedem. qui scdm̄ angustinū agrie ad aptat̄ huc  
sanctus **Vnde**. origenes. In lib. De. Priu. Eccliarū.  
Permiseri agrū erat diuinam naturā humano  
generi. ut humana rō ingreſſum habet in cogni-  
tionem patris z filij z spirit⁹ sancti. Reque. de. xpo  
**philosoph⁹**. In libro. De. natu. cordis. Cor humanum  
est fons sagne z caloris. Circa quod aduertendu  
quod quidam dicunt fontem sagne fore ipm̄ ep̄m  
quidā uero ipm̄ cor. **costantinus**. ipm̄ ep̄m fontem  
sagne esse asserit et caloris. Cor aut ip̄e. **comen**<sup>or</sup>  
Et cor ipm̄ diuinitatis p̄r. est fons z origo. filij  
z spirit⁹ sancti **Vnde**. **Libido**. In. Serino. p̄acer

no bu  
x

no

y

z



quidem in divinis ē sicut cor in corpore animae. sicut enī  
cor in homine aut in animā. sic pater pater noster dicit  
verbi sui et spiritus sancti **Nestorius**. in libro De. de  
cedam Cirillo. Sunt fontes in aethiā. qui ignē in se  
habent. sed et frigū aliquatū et humorem. Ignem  
quidem. Nam corpus in ignem accenditur. frigus et  
habent et humorem. Nam corpus accensum et vitiat  
proximus exiguatur. Sic nō in inciens humane  
videndum rationem. si i eodem fonte divinitas pre  
sit filius atqz spiritus sanctus **U**nde. Augustinus  
in Epistola ad Volusianum. Si humana ratio frivola  
obmitteret argumenta. manducetur utqz ad cogi  
tendam trinitate in divinis. pater. filius et spiritus  
sanctus. **Theophrastus**. in De. parte. Sensitiva. Corp  
operatur. cum oī sit unū et idem. tribus tamē an  
cellatis digitis. tria ēē veracitē tactu demonstrat.  
Sic quāvis una et eadem sit atqz in divisibilibus seu  
in partibilibus essentia veritatis. tactu tamē huma  
ne rationis. tribus insinuat in personis **U**nde  
Ambrosius. in. Exameron. fateor et ego unū ēē deū  
sub psonis tamē tribus rite quicquidissimeqz distic  
tum. **Comēstator**. in. lib. De. Inpitionibus aeris. Unū  
oī sunt. comitū. fulmen. rupto quoqz nubis. Nisi  
quod illud videtur pns. hoc autem audit pater  
Unū rō ē. Nam visus nobilior ē prior qz auditu  
quā obrem obiectum visus pns est. quā obiectu ip  
sius auditus. ut ostendit. in. de. G. et f. **Aristoteles**.  
Sic unū et idem ē pater tonans. filius fulminans.

. a .

. b .

. c .



z spiritus sanctus. ex utroq; manens **U**nde Damasc. In lib. Cont. errores. Grecorū. Idem ē pat. filius filius z spiritus. quāvis qui in baptismo conabatur estz pater. z qui fulminabit sententiam sit filius.

**D.** z qui ab utroq; emanat sit spiritus sanctus. **A**lgazel. In tractatu. De forma Speculi. Cumq; speculum fonti imergit ad ferriorem solis. tria mox visum se ostendunt. speculum uidelz. z sol z stella. Videtur em̄ intra speculū. quedam stella preire p̄m solem. qz quidem attingit ut dicit. **cometa**<sup>02</sup> ex reflectione solarū radiorū. Sic dum speculū illud dimittatis fontē cognitionis nostrē imergit. mentis mox nra relucet trinitas psonarū. p̄r uidelz z fili<sup>9</sup> spiritus quoq; sanctus **U**nde Dionysius. In lib. De divinis nominibus. Veritas inquit z nō ficta cogitō. rationis humane. trinitas relucet divinitatis excolesse **Exar.** In lib. De sigillis lapidum. Invenitur quidā lapis. qui tūta sin parte trahit ferrū. in alia tūta sin parte. alē pellit ferrū. Per que datur intelligi. qz nō ambigū ē debet humane rationi si tūta atq; eadem divinitate. uno in respectu. sit pat. in alio filius. z eandem spiritus sanctus **U**nde. Cassian<sup>9</sup> In lib. collatōm. scōm prim. Unde inquit humana fragilitas unam atq; eandē in distinctam qz creaturā. Alias ēē potencias alias qz virtutes. z ambigū sibi dicit. si in deo sit qūa alias qz psona. sub in distincto quidē ēē. **Alagabici**<sup>9</sup>. In Eccl. perspectina. Cumq; per arbrū eclipsim solis contemplanur. ter tres mox cernim<sup>9</sup> ēē soles. Unus

**E.** **F.**



ratio tangetur infra. Capitulo. De visione. Sic et di-  
nos per orbem contemplamur humanitatis xpi. tō  
festum personas diuinitati in eē compertimus. vide  
licet patrē. filiū. et spiritum sanctum. **¶** Unde Amb-  
sius. In Exameron. lib. viii. Qui credit in aritū. ne-  
cessario et ipse credit tres in deo eē personas idis-  
tincti eē. **Thophilus.** In Breuiloquio Diuersarū Arcū.  
Lamina aurea et argentea. interposito boreae aut  
Zukbarā ad inuicem anectuntur. Sic pater et filius  
intercurrente quidem spiritali sancto. i. eandem re-  
deunt atqz eēntiam et naturam. **¶** Unde Damascus  
In libro. contra. Errores Grecorū. Haec ē persona  
patris et filij. in idm tamen eē redeunt medi-  
ante vniōne spiritalis sancti. Rētrāt ad cap. De. x.  
**Comētor.** In libro. De. suppositionib⁹ deus. Ad hoc autē  
ut fiat comitū. necesse ē. ut tres ad inuicē nu-  
bes comitantur et gemitant. Cūta quod aduertendū  
quod multi philosophorū errauerūt circa generatio-  
nem totarū. atqz filius **Thennius.** quide In. Sum-  
ma naturarū encū. totū in aliud eē asserio  
qū rumpōnem nubis. qū uidelicet vapor indit⁹  
i nube rumpit ipm nubem. Signum autē euentus  
debat esse. quē ad mō cerminis in uelica. aere  
ex sufflata. sup quā dum calcatu pedibus fuerit  
fi agor strepitus quoqz ualidus in tonelat. **Alexand.**  
aut sup. 3. Metharorū. sic ait. Vapor attentus uo-  
lute inqz nubem. successue auuēctatur. eo qd omne  
humidū calidū factū sub indiorib⁹ in apit stare  
diuentionib⁹. ut refert Anepite. Quē ad mō uideam⁹.

.G.

no

.h.

us.

.f.



in olla. que dum usqz ad medium impleta fuerit. du  
ad ignem in caluerit. super effluit ipsa aqua. Sic  
et napor in inscribis accensus nubunt. cu per in  
tatem solis in caluerit mor erumpit atqz mibe  
ipsam scindit. Que quidem mibe factio seu ruptio  
tomorum incipit. **caladmo.** vo dicit totum nil  
aliud fore. qm terrorem factum hys qui sunt in  
in ferno. cuius opio firmola demonstratur. **Augustinus**  
ante cont. falsu. ad huc ostendit totum effectum  
ee malignorum spirituum. qui ad huc ee in aere  
probant. **Alexander.** Sup. 3. q. 2. dicit totum  
causari ex eo quod uenti illi quatuor cardia  
les pugnant contra se mutuo. Ex quoru collisione  
nubis seu scissu. fit agor atqz strepitus. qm et tom  
trum dicitur generari. Ex scissione aut ad i uice  
uulsa atqz forti ignis dicitur copiosus. ut patet  
in scissione ferri. ad lapidem. **Alphar. Abi.** vo inquit  
Iste quidem ordo credendus e in generatione to  
mari. ut nubes ascendat supra nubem. et sup nu  
bem mediam tertia quedam ascendat nubes. Nubes  
igitur sic se mutuo pmentes cum quem in se ha  
bent uaporem cu uehementia uolentiaqz emittit  
Et hec inquit opinio ut a plurimis approbatur.  
Sufficiens igitur ostensum e q ad gignendu effici  
endumqz totum tres nubes comadant et serant  
videlz nubes infima. media et supina. Sic ad gigni  
endum ac ordinandum in mra cognitione illam tes  
tabilem deitatem. tres personarum comaduntqz per  
sone. pr filius spiritus quoqz sanctus. **Theophilus.**



**Theophilus.** In Brendoquo. Dicens. Arcum. Omnia q  
dem duellana triperata aut in tres partes fassa. in  
aqua noctis tempore integrantur. Sic uirga illa in pe  
rimquoz dimittas exerce. tribus personaribus  
trinitum atqz mltice triperatum. indissolubilitate in  
in partibulationis sue cōglic fore integrū atqz in  
dimissum seu in distinctum pēitus demonstrat. **Quintus**  
**Damasceus** In libro. cont. Errores. Grecorū. Deus  
quidem eternus. sub trina nobis patet personaritate.  
sub indissolubili cōmē sue essentiae unitate. **Recreat.** ad  
capitū. De. Cristo. **Comestator.** In libro. De. Sacramento  
et Nuaribi. In tria frusta desatus ipē serpens. sub fimo  
integrabitur repatur. **Istante** Aristotele In. vii. q. 2. c. 2.  
transactio ueteris. qui ait Omnia tridua amulosa  
desata uiuit. Cūis ratio ē formitas atqz symbol<sup>9</sup>  
partis ad totum. Sic dimittas illa exalta tribus  
in se personis distincta. nō obstante fimo humani  
tatis assumpte. salus manet integratqz et una. **Quidē.**  
**Ambro.** In. Exameron. Fragilis ratio ille  
homo creditur. qui ob pluriditatem personarū. mul  
titudinem dimittas in se estimat cētāru. **Recur**  
**natur** ad Tabulam et Registrū **Supra.** **fontanus.** In  
Descriptioibus. vniū. Ter perforata uir. tres dimi  
plantatur. Arbores ex se profert. Sic uir illa dulcis  
fime deitatis. i mente plantata homo. tribus se  
i mergit et in serit sub personis. **Quidē.** **Diorsius.**  
In. lib. De. Diuina Nōbis. Si qui mīpū audim. lo  
qui tribus aliquem de per sōis. dimittas ipā nō  
triplex sed trina mentaliter in notefat. **Huc** uirg

1.

0.

1.

1.



**Theophilus.** In Breuiloquio. Dmersam arcum. Tribus ignibus  
probari necesse ē omne aurum. Nam primus ignis de  
purat & grammat / secundus ignis virtuositate qua for-  
tassis tingi aut colorari possit manifestat. Tercius  
vero ignis prodit si fortassis arte magna sit con-  
fectum / Sic in qm per unitatem in diuinis persona  
litterem. similitam nate nobis fuit innotescere deitatem  
**Vnde.** Tristotomus? sup. q. No alio nobis modo diui-  
nitas innotuiss. nisi nobis se sub trinis personali-  
tatis ostendisset. **Iohannes.** In libro. De Dispositione  
membrorum. Tres sunt cordis humani foramina. vni  
debetur sanguis. Alterum aeri. tertiumqz colori. Sic in  
diuinitate tres sunt persone. quarum una pro altera fi-  
lio. tercia debetur spiritui sancto **Vnde** Ambrosius  
In Exameron. Tres necesse ē ēē in diuinitate perso-  
nas. quibus nobis diuina essentia innotescat. prem  
uideri & filium & spiritum sanctum. Requirit De. Criso-  
**Constantinus.** In libro. De Regimine Sanctis. Tres  
quidem haustus medicine cumlibet sunt sumendi.  
Sic tres haustus gloriæ debentur de. in rem-  
planda excellentissima deitate. pr uideri & filius et  
spiritus ipse sanctus **Vnde.** Augustinus? In lib. Solilo-  
quiorum. Tres inquit deitatis persone. sunt quasi qui  
tres haustus de. quibus inbibitur substantia diuina  
diuina sempiternæ. Recurrit ad Regium **Theophilus.** In  
Breuiloquio. Dmersam arcum. Cuiusqz duorum fructum  
uideri in stipite arboris facto foramine absconditur.  
Istat qz tunc tres fructus in arbore generantur Sic  
tres ille persone in abisso diuinitatis absconse. in trino



z se lumine influunt menti nostre. **C**onde. Origenes.  
 In libro. De. Ritu. Eccliaru. Impossibile nempe e i tam  
 sancta religione xpiane fidei quodam fictum aliquatit  
 repperiri. s. qui fidem ipm dei filia suo sagne con  
 secrauit. que z trinitatem ee psonaru in diuino de. **T.**  
 monstrant. **Archus.** Tharenem. In libro. De. Genab.  
 In. statua. vni z eadem aque in fonde plumbu z pfer  
 tum in lac ueretur. in fonde tandem statum z in ru  
 bore aliquatit transfundit. Sic vni z eadem atqz in  
 diuisibili deitati in fonde mente tuam. z relucet  
 pr filius z sps sanctus. **C**onde. Boet. In. lib. suo de  
 Trinitate. In mergamur totius mentis uirtute ip  
 diuinitati exerce. z ecce pr eae filius. z sps scis  
**Fontanus.** In. De. scriptoribus. vniuersi. Sagitta proiecta  
 que plumbo circumducta fuerit. duos actus facit. Na  
 strepitum efficit. z plumbum p calore distillare facit.  
**v.**  
 Sic psona in lumine simplici cognoscit mentem  
 transuolans. fiam alit ee duoru actum se ostendit  
 cognere uidelz filiu z effare spiritum sanctu. **C**  
 Crisostom. sup. ot. Deus pr duos actus sibi appro  
 priat ex natura. generare uidelz eternatit filium  
 in diuino. z mittere spiritum sanctu sanctificatis ho  
 mibz inuisis. **Restormus.** In. libro. De. oceanu. Sicut  
 vni z eadem ignis. natum i mari attingens. tuc p  
 cumqz in different corpus feriens. tria fortissima  
 sui utus nestigiaqz relinquit. Unus raso tanget  
 in fra. Capitulo. De Visione bea. Sic vnus z idē  
 ignis diuinitatis tria nobis sue nature nestigia  
 demonstrauit. prem filiu z spiritum scm. **C**onde



Dionysius. In libro. De. Divina. Nominibus. In nullo alio. di-  
vina pendet cognicio. qm̄ in termino. p̄sūso beate cri-  
minatus uestigio. **archus.** Tharenannus. In. lib. De. Euen-  
tibus. In. Natura. Idem. aurū in sole rubescit. in lune  
lunine albetit. in igne nero blanescit aliquatū. et  
ingrescat. Sic eademqz divinitas. nūc rubescit p̄t  
nitate. albetit filialitate. umbrescat spiritus sc̄i leitate

Unde. Ambrosius. In. Exameron. lib. vii. Omnis idem qz  
deus in divinis in distinctis in essentia. nūc alius nūc  
et alter aliquatū. terminatur in p̄sonis. **Algazel.** In. de  
tatu. De. forma. Speculi. Speculū. p̄tū optime qz  
politur. caput magm̄ representat. Divinū nūc ē lon-  
gum. Divinū magis acutius exstat curvū. Sic unū

idemqz speculū divinitatis. nūc p̄tū qm̄ et caput  
dicitur representat. nūc filius. nūc spiritū sanctum.  
Unū tamen habens ēē in divinum. et p̄tū in  
distinctū **philus.** In. Speculo. naturalī. Una eademqz  
plūma p̄tū. ē in grā. viridis et acria. sedm̄ d̄  
etqz in curvū sē respectū. Sic unus idemqz deus  
sibi unitate naturae. indivisibilitateqz essentiae. nūc p̄  
sonam p̄ferit p̄is nūc filij. nūc spiritū sc̄i  
Unde Damascenus. In. lib. contrā. Errores. Grecorū

**A.** Una et eadem natura essentiaqz divina. nūc stat ut  
p̄ nūc ut filius. nūc ut sp̄s sc̄us **philosophus.** In  
Problematibus. Occurrente flammā et lignū. flammā ignis  
ora p̄tū nichil nocet. Quēdā mō. videm̄ qz locu-  
latores ignem in ore statunt. nec se quidē ledūt  
ita tamen si occurrerit ip̄e flammā. ut refert In. Be-  
nitoquino **theophilus.** Et hūc rō ē. Nā os humanū. fri-



grate e nature. Anhelatus nero calet. Cumq; eia signu  
 e. Nam per eundem anhelatum manus frigidas calet  
 omnis. z abum calidum in frigidissimo. clauso tam aliq  
 liter qd ore. tunc nero paulo z apto. Et d. quodam  
 supra tactu e. Sic occurrente spiritus sancti uirtute q  
 z status dicitur. Atq; ubi seu filio. qui ligunt mui  
 pdaur. igitur qui z pr comitatus in idem ee et  
 natie ordinantur. **Ambrosius.** In libo fontis. vite. Solis  
 radus maior e qm calor eius. apparet. quantum  
 tamen mu. tantu aliu realit z in nero. Cum de  
 claretur stat in hoc. Nam ibi in uetur solis radus.  
 ubi calor quidem nullus. Unde maior e lux solis q  
 solis inuicis effluatq; caloris ut ostendit. **Euenius.**  
 Sic ob plurimam atq; distinctionem personaru in di  
 uinis. pat apparet ee maior filio. filius qz maior  
 spiritu sco. quatenus tu in? tant? reliq? u oia ue  
 ritate unde. Athanasius. Quis pater calis filio.  
 calis e z spiritus sanctus. **Auerrois.** In libru. De  
 planis. aristoteli. ois arbor nata in lapide aut in  
 muro. tres ex se radices enitit. Sic diuinitas per  
 cogitationem in mente accepta z gemitus hois. tres ra  
 dices extendit sic polahetatis. prem. fm. spm. scm  
**philosophus.** In problematib? In antiquis nob ostium.  
 ubi alia sunt ostia in uicinis. mox obuius quidam  
 uentus. Sic nobis p mentes in tantam ingreditur  
 diuina. centiam seu naturam. i qua sunt duo ostia p  
 sonaru patris z filij. obuiat z mox uentus per  
 sone spiritus sancti. **Ancenna.** In libo. De. Quor  
 Dilunys Solus z unus lapis in flumine. asperus e z

b.

c.

d.



durus. Sed de hoc requiratur in precedentibus. immediate  
 infra. Registratio ante capitulorum predictorum queratur  
 in locis suis debitis. In tabula et in regist. **Aristoteles.**  
 In libro. problematum. quicquid ostio loci aliquis calefi-  
 aer. mox ingreditur per fenestras. et calor qui ate-  
 uideri non potest tunc uidetur. Sic ingredientibus non  
 per mentis nostre cognitione abissum diuinitatis. mox  
 et altere due persone se offerunt cognoscende. cetera  
 ubi sup. In tab. et registro. **Aurelius.** In libro. De  
 Diluuiis. Solus et unus lapis in flumine assus est et  
 durus. plures uero lapides aduicem se collidunt  
 atque semores quidem fiunt. Quicquid in idem quod in flu-  
 mine. per que datur intelligi quod deus dudum humano  
 erat generi assus atque durus. tandem aut plurali-  
 tate personarum diuinitate manifestus est effectus. **Agostinus.**  
 In Genes. cum dicit. pater aut plures filios gene-  
 rare uoluit aut noluit. aut uoluit et non potuit. aut  
 uoluit et potuit Si ergo uoluit et noluit. Adde-  
 quia uindus fuit. Si uero uoluit et non potuit. im-  
 potens fuit. Si aut uoluit et potuit. cum non plu-  
 res filios generauit. per quod argumetur Arius  
 et Cherimus. infinitos esse filios in diuinis. Cuius  
 quidem simile et ualde racionis declaratio talis est i-  
 mediate sup. **Boccius.** In lib. mo. De Trinitate. locu-  
 tus est dominus per prophetam dicens. Ego dominus. ante me  
 non est formidans deus et post me non erit. Sic Abion  
 et Marcion. Si enim hoc uerbum dixit pater. mentis est.  
 quia post eum erat deus filius. Si aut dixit filius.  
 mentis est. quia ante eum erat deus pater. Relin-  
 quetur ergo quod cetera trinitatis uerbum dixerit



prefatum. Ante me nō ē formidinis timor & post me nō  
erit quod & iteo interfici ad sciendū quedā ubiq̃  
venire soli p̃sari quedam vero toti totū tracti.

**Strabus.** Sup. dñ. ad lrim. Abraham tres uidit &  
unū adorant. Et c. Huius aut declaratio cange  
infra. capitulo registrato. De. Cristo. **Crisostomus** Sup.

Iohānem. Ipsa inquit ueritas ait. Rogo te pater ut  
hū unū sim sicut & nos unū sumus. Arguit autē

Abellus a parte post. in hūc modū. dñi in quibus  
erant duodecim. Ergo & p̃sone duodecim in diuinis  
Et q̃ cristi orō ad p̃rem frustrari unquā possit.

**Sufficient** igitur determinato De hoc elemento. Et  
nūc consequendū agendum. De hac h̃a. v. Que si  
uideatur de cē capta. requēdū in tab. & regist.

**S**olimus. In libro. Perū. ṽpupa amō i mo **Capitulum**  
dñi pulchrit. in stercorebus tamen in De. visita.

dñi facit. Sic & homo quisp̃ nitidus in delicijs. mē  
te tamen sua se recognoscendo indiget in stercore.

**Unde** Salustius. In. Tugurino. Q̃nto  
quis mit floridam in se ptulerit uenustate. tanto

aspiciat & ap̃am uilitate. **Ysidorus.** In. historijs ñcu  
ralibus. P̃ano extensam candelam candam. cū pedis

deformitate aspexerit. mox deponit Sic p̃cor dñi  
candam elatois magnificat. ap̃a agnita uilitate. mox

deponit. Et de hoc sup̃ pulchrit. **Unde.** **Ysidorus.** In  
Epistolari. Si uilitate agnoveris prop̃am. depones pro  
fecto mox superbiam unūsam. hūc usq̃ registratio  
p̃sata. **philareetus.** In. Tractatu. De. Naturis õp̃bor  
om̃ib̃ quide igne lesa. finnis suppositis ipsa sanāt.



Sic sume ualeat cont<sup>ra</sup> mentis & corporis uanitatem. Appam  
interdum aspectu uilitatem **Vnde.** fulgentius. In quarto  
orthologiaru. lib<sup>o</sup>. Remedium nullu e pstantia infirm  
tati humane. qm fetore mirandu aspectu uilitatis sue

**I.** **costantinus.** In tractatu. De. sacris. liquidoru. Cumq  
rem aliquam fecidam aspiciamus. nauseam mor senti  
mus. Sic di quidam aspiciamus uilitate. mudandam  
mor audire cogimur uanitate **Vnde.** Iulianus. In  
paradoxis. lib<sup>o</sup>. 2<sup>o</sup>. Cumq ueritat<sup>is</sup> aspiciatur uilitas hu  
mana. m<sup>o</sup> mor erubescit & expauescit ratio um  
uersa. **Recitat<sup>ur</sup> ad caplm De Recognitione. Aristoteles.**  
In lib<sup>o</sup>. De. Regimine. principu ad alexandru. In aliis  
regionib<sup>us</sup> portus. omni mane locu adeo aliu<sup>us</sup> put<sup>us</sup>  
dimo aut ferina. Sic & tu ho in Alaudie h<sup>ic</sup> mundi

**M.** positus. semp p<sup>er</sup>ie res uilitati putredinib<sup>us</sup> i<sup>stis</sup>  
**Recitat<sup>ur</sup> ad capm De. Alaudie Vnde.** Seneca. In  
hercule furente. Quanto quis maiorem assortitus  
fuerit dignitatem. tanto magis sua aspiciat uilitatem  
**philaretus.** In tractatu. De. sacris. orboz. feto  
rem them abelina mor perapm<sup>us</sup>. Appum aut fecerem  
anhelu no sentimus. Sic & nos alioru uilitate agnos  
cimus. m<sup>o</sup> aut p<sup>er</sup>iculis ignoram<sup>us</sup> **fontinus.** In Descrip  
tiomb<sup>us</sup>. vniu<sup>er</sup>s<sup>is</sup>. corpora mortuoru tecta ferias. ad quide  
feterent. Sic qm delicias in hac int<sup>er</sup> p<sup>er</sup>culo emtesunt

**A.** magis qm in diuinis oculis ualidius q<sup>ue</sup> uidentur. **Et**  
**Recitat<sup>ur</sup> ad caplm De. humilitate sup habitum**  
**Theophilus.** In Breuiloquio diuinaru. arau. Arupte<sup>us</sup> ualde  
uindis. sub fimo recondita. uertitur in buffones. **Et**  
m<sup>o</sup> uenustas & pulchritudo corporalis. **Quod<sup>us</sup> sup. & d.**



**V**eniſtas. In. Summa naturalium. Quidam cap. De  
indigis putrefacti lignum aliquot fuerit **veniſtas**  
tanto in tenebris pulcherrime luceſcit. Quedam vero nido  
mus in ligno quereſcit. q. noctis tpe quide luceſcit.  
Sic quanto quis in mior in tuo fuerit. **u**ia. tanto  
ce ueniſtor matut. in hac uita. **U**nde Galenus  
In. Lugano. Quanto quis in hac uita ueniſti  
or ceruatur. tanto uior & deſpectior uidei oculis  
ceſſatur. **Archita.** Tharenin? In. lib. De Fuentib? In. ſa  
m. u. ueltes que in die ad ſolem pependunt. i. neſpe  
ſantillas igneoſas flammasq. emittut. Sic mentes hu  
mane. que in ad luce pendent ueniſtatis atq. af  
fluentie & candoris. in neſpe tandem moras igne  
eſturbunt. **Conde.** hama. **Conde.** hama.  
ſup. apocalyp. Qui in ueniſtate carnis ſue fulſerit  
igne emendu eterni doloris & miſerie eſturbat.  
**philosophus.** In. problematib? Igne quippe ois in die  
albeſcit. i. nocte aut rubens fit. Sic & humani animi  
in pnti quide uita ueniſtate albeſcit uita. i. fu  
turo aut rubet quatu. ad ſuplicia ſempiterna.  
**Conde.** Alanus. In. lib. De Dulcedie ac. Vernana  
uita in pnti ſeculo. igne in futuro. **Alzabitus** In. per  
ſpectus. **ſa.** Cometa caudam ſeu comam extendens ful  
gidam. peſtilencia mundanis idiat regionib? i. minere  
Cura q. aduertendu q. cometa e. quedam ſtella habes  
coma fulgidam **origenes.** tunc dicit cometa n. ee  
ſtella. ſed ualidam accenſione etheris ſeu etherice re  
gionis. Quid aut ſit. obſcuru. diuine quoq. prou  
dencie amittidum. Inr aut dicendu q. cometa mor  
tem indicat principum & magnatu. pecoru quoq.





2.

Fit pector sibi ex venustate sin corporis. postem adde  
 nonerit pector inferie z doloris. **¶** Ande. **¶** Haimo. sup  
 apocalip. venustas quide carnis humane. p sagnum  
 quidem e z indicium inferie sempiternae **Cometator**  
 In libro. de. Inpressionib' aeris. Galaxia candida z al  
 bescentis. ventu futurum turbine qz designat. Quid ac  
 sit galaxia. z inde causetur. p fari qz effectus ratio.  
 tactum e sup. **¶** Sic caro nre incida venustate. i fante  
 z future signu e turbulentois z Angustie. **¶** Unde. **¶** hugo  
 De. Sto. v. Candor venustatis corporis. ipso e suppli  
 cu p sagnum infernalis. **palemon.** In lib. de. Signis. Na  
 turaru. facies hominu rubee nimu z venuste. debilo  
 foraretur in posteru senectute. Sed de hoc hntu e sup  
**philaretus.** In tractatu. de. Crisi In sompnis quidem  
 corpus humanu albescentis nimu. moras vitae idici  
 um e z signu. Cui' ead ro tacta e sup. **¶** Sic albes  
 qta venustas humanoru corpus. future sepe atqz pe  
 tue inferie dimoliat ee signu. **fontinus.** In. De scripti  
 onib' vniu. Amiqz per vitam contemplamur. qz ne qde  
 uitium coloratu fuerit. italis res nra quibus appa  
 rebit. Sed de hoc requirat sup. **¶** cetera capitula. de h  
 Clemento. v. tangunt In. Tabula z registro. per co  
 sequens applicando. **¶** Sic qz liber explicat **Exemplor.**  
**I.** **¶** Explicat liber **Exemplor.** Qui z lume aie nre  
 patitur. **¶** Emptis e liber iste padue pro trib' flore  
 mis. z pro octo Turonen monet. Quis aut sit  
 editor libri. z unde ortum pmtus habuerit. i ne  
 mea In. prologo Annotato. Que autem videtur de  
 esse. requirant in Tabula z Registro **¶**



Inapit Registrum et Tabula huius Libri p[er]sumpti.

. G. T.

. 32.

. T. p.

. 30.

86

. Tat

. Abstinentia

. Re

. Abbas

. Tat

. Abiecio

. Re

. Ablatio

. Tat

Abstinentia  
Ieiunium  
Moderato  
Gula.  
Voracitas  
Tibis.  
Dietatio.  
Esurientia  
. A. T.  
Abbas  
Prelatus  
Subditus  
Domini  
Prepositus  
Ingenuus  
Obedia.  
. A. G.  
Abiecio.  
Conceptus  
Opulencia  
Dimitte  
Delicie  
Aspiratio.  
. A. B.  
Ablatio.  
res indana  
Substantia  
pauca.  
paupertas  
Spolium.

. Re

. Accessio

. Tat

. Accessus

. Re

. Accessio

. Tat

. Accusatio

. Re

Accessio  
Amor  
Dilectio  
haritas  
Dulcedo  
Gustus  
Suauitas  
. A. T.  
Accessus  
Appropinquatio  
Cristus  
Garia.  
Solium  
Ammus  
Ootum  
. A. M.  
Accessio  
Bellum  
Caro  
Vicia  
Lumbus  
Cercam  
Corpus.  
. A. G.  
Accusatio  
Correctio  
proximus  
Zelus  
Emenda  
Finitas.



. Accumulatio

Accumulatio  
 aggregatio  
 Diminutio  
 Opus  
 Anarctia  
 Appetitus  
 Cupiditas

. Acceptatio

Acceptatio  
 holo causum  
 Gratitudo  
 Oblatio  
 Oratio  
 Actio.  
 Conspectus

. Actus

Actus  
 Operatio  
 Virtus  
 Malefium  
 Vitium  
 Petrato  
 factio

. Aduentus

Aduentus  
 Inhesio  
 Anticristus  
 Inducium  
 Dampnatio  
 Timor

. Adulatio

Adulatio  
 Detractio.  
 zelus.  
 Immundia  
 Emulatio  
 Dolus  
 Fraudulentia

. Adolescentia

Adolescentia  
 Iuuentus  
 pueritia  
 Semina  
 Etas.  
 penitencia  
 Negligentia

. Aditus

Aditus  
 Iamam  
 Introitus  
 porta  
 via.  
 Iter  
 Arcitudo

. Admiratio

Admiratio  
 Scandalum  
 Bonitas  
 peruersio  
 iudicio  
 Genes  
 Communicatio



. Affinatio

Affirmatio  
 Juramentum  
 Serium  
 Mendacium  
 Verbum  
 Testimonium?  
 Assertio

. Affectio

Affectio  
 Inclinatione  
 Amor  
 Zelus  
 Emulatio  
 Amicitia  
 Confederatio

. Affectus

Affectus  
 Voluntas  
 Opus  
 Oratio  
 Elemosina  
 Paupertas  
 Egrestas.

. Affinitas

Affinitas  
 Cognatio  
 Caro.  
 Filiatio  
 Primogenium  
 Proximum  
 Amicum

. Ahabilitas

Ahabilitas  
 Dulcedo  
 Colloquium  
 Conversatio  
 Humanitas  
 Bestialitas  
 Simocritas

. Agnitio

Agnitio  
 Veritas  
 Scientia  
 Cognitio  
 Sollicitudo  
 Astutia  
 Visio.

. Aggregatio

Aggregatio  
 Accumulatio  
 Diminutio  
 Avaritia  
 Appetitus  
 Cupiditas  
 Relictio

. Agilitas

Agilitas  
 Velocitas  
 Subalutas  
 Scleritas  
 Domus  
 Glorificatio  
 Ratio.



. Aggressio

Aggressio  
Certamen  
pugna  
Bellum  
Caro  
hostilitas  
mundus

. Amissio

Amissio  
perditio  
res temporalis  
Substantia  
omnium  
patientia  
Simulatio

. Alacritudo

Alacritudo.  
Sublimitas  
Celsitudo  
honor  
Gloria  
Eminentia  
potestas

. Amor

Amor  
Dilectio  
caritas  
attentio  
Cultus  
Dulcedo  
Suauietas

. Alacritas

Alacritas  
hilaritas  
Gaudium  
Exultatio  
Consolatio  
Amicitias  
Iocunditas

. Amictus

Amictus  
vestimentum  
Indumentum  
Elatio  
Turmoz  
Superbia  
Celsitudo

. Ambicio

Ambicio  
Cupiditas  
Avaritia  
Altitudo  
Gloria  
appetitus  
Cupiditas

. Amicitias

Amicitias  
venustas  
Candor  
vilipensio  
patria  
Iocunditas  
Btutudo  
Disio.



. Angelus

Angelus  
Sancti  
apostoli  
maria  
Trinitas  
Cristus  
Latria.

. anathema

Anathema  
Excommunicatio  
Exclusio  
Ecclesia  
Synagoga  
Fraternitas  
vitatio

. Antixpe

Antixtus  
Iudicium  
Iehena  
Excomm  
Fins  
Exitus  
lamentum

. Amma

Amma  
Amnis  
Cognatio  
Sompnus  
Iubus  
lacrima  
Deuotio

. Antistes

Antistes  
abbas  
Bnguas  
prelatus  
pietas  
Correctio  
patencia

. appetitus

Appetitus  
Cupiditas  
Aueritia  
pestis.  
Ambicio  
concupia  
opulencia

. Ammus

Ammus.  
gens.  
Cor.  
Intellectus  
Ratio  
Conceptio  
fantasia  
Amma

. Apostoli

Apostoli.  
Sancti.  
Aduentus  
angeli.  
patroni  
martires  
Cristus.  
Trinitas



.Apercio

Apercio  
Iamnia  
Aditus  
Introitus  
Porta  
Deuocio  
Anhelacio

.Appropiq<sup>o</sup>

Appropiqua<sup>o</sup>  
Indinacio  
Additus  
Instus  
Voluntas  
Affectus  
Inherencia

.Aptitudo

Aptitudo  
Ydoneum  
Disposicio  
Emulatio  
Dignitas  
Ydemptitas  
Admixtio

.Arrogant<sup>ia</sup>

Arrogantia  
Timor  
Superbia  
Timultus  
Glacio  
Oppressio  
Supplantacio

.Artitudo

Artitudo.  
Anxietas  
Tribulacio  
Anxietas  
persecutio  
Necessitas  
Angustia

.Altare

Ara  
Altare  
Oblatio  
Deuoco  
holocaustu  
victima.  
Sacerdotiu

.Arrisio

Arrisio  
Inuidia  
Emulacio  
Adulacio  
affablicacio  
Collocutio  
Captatio

.Assumpcio

Assumpcio  
Assencia  
Resurrectio  
Cristus  
maria.  
festinacio  
Sollicitudo



. Astucia

Astucia  
 prudentia  
 Sapientia  
 Sollicitudo  
 Sagacitas  
 Calliditas  
 Fraudulentia

. Aspectus

Aspectus  
 Intuitus  
 Oculis  
 Misericordia  
 pietas  
 compassio  
 contempnus

. Assertio

Assertio  
 Assertio  
 veritas  
 mendacium  
 Sermon  
 Sermo  
 Testimonium

. Aspernatio

Aspernatio  
 contempnus  
 Refutatio  
 indignatio  
 paupertas  
 Equalitas  
 Abdicatio

. Astutia

Astutia  
 Iehemia  
 Iudicium  
 Supplicium  
 penitentia  
 Tormentum  
 Culpa.

. Attestio

Attestio  
 apostoli  
 Troina  
 Iudicium  
 Equanitas  
 Subiectio  
 Omnisium

. Assimilatio

Assimilatio  
 Equalitas  
 Omnis  
 ydemptitas  
 Simbolum  
 Conformatio  
 Respectus

. Atteptatio

Atteptatio  
 Dolus.  
 Fraudulentia  
 Temptatio  
 Intencatio  
 humilitas  
 Concordia



. Attractio	attractio clemencia pietas consolatio felicitas amicitia p <sup>m</sup> bonum	. Auditus	auditus obsequatio sermo. predictio iures inclinatio submissio
. Attractio	attractio immundum ventum contactus violatio comitio scandalum	. Bando	Bando. felicitas finis visio p <sup>m</sup> caitas.
. Audacia	audacia presumptio varietas ammositas fortitudo valitudo vehementia	. Bellum	Bellum pugna certam collucta <sup>o</sup> disadui
. Avaricia	avaricia cupiditas ambitio appetitus summum vanitas gloria. Stulticia.	. Breuitas	Breuitas obitus vanitas mors vita ornamentum instans. terminus.



.Bestialitas

Bestialitas  
Rusticitas  
Distortia  
Ineptitudo  
Mareo  
Vircus  
Verecundia

.Calumpnia

Calumpnia  
Iniuria  
Oppressio  
Supplicatio  
Deiectio  
Orphanus.

.Inguitas

Inguitas  
Clementia  
Pietas  
Conuersatio  
Lenitas  
Prelatura  
Prepositus

.Castitas

Castitas  
Virginitas  
Orundia  
Conomen  
Puritas  
Putschudo  
Orndmari

.Bndictio

Bndictio  
Ancites  
Sacerdos  
Impetatio  
Optatio  
Fatuor  
Affectio

.Canticum

Canticum  
Lans dei  
Iubisus  
Veneratio  
Obsequium

.Bravium

Bravium  
Premium  
Corona  
Victoria  
Eternitas  
Regnum  
Finitis.

.Castano

Castano  
Abolicio  
Amichulatio  
Renocatio  
Dilectio.



Capitas

Captivitas  
Infernus  
Antrum  
Spolum  
Rapina  
Carcer  
Indusio.

Certamen

Certamen  
Bellum  
Pugna  
Duellum  
Ducadum  
Colluctatio  
Incertum

Celsitudo

Celsitudo  
Altitudo  
Sublimitas  
Eminentia  
Excellentia  
honor  
Gloria.

Cecitas

Cecitas  
Caligo  
tenebra  
obumbratio  
oppressio  
oculus  
concupiscentia

Cermonia

Cermonia  
Legalitas  
preceptum  
mandatum  
inhibitio  
Consuetudo  
Iustitia

Celeritas

Celeritas  
Acceleratio  
velocitas  
pauisatio  
Defluxus  
obitus  
Terminus

Certitudo

Certitudo  
Assertio  
Affirmatio  
veritas  
approbatio  
Testimonium  
Essentia

Crimen

Crimen.  
factus  
Scelus  
nefas  
vitium  
Noxa  
Culpa



Contemptus

Contemptus  
abieccio  
abdectio  
Refutatio  
ambicio  
vilitas  
pumpensio

Confessio

Confessio  
Satisfactio  
Compunctio  
Concursio  
Concussio  
Osculatio  
Lumbatio

Consolatio

Consolatio  
Solacium  
vinctus  
pietas  
clementia  
Binguitas  
Reluctatio

Concordia

Concordia  
Amicitia  
vinctus  
Confessio  
pactus  
promissio  
Consensus

Compositio

Compositio  
Dolor  
Tristitia  
gestatio  
fletus  
lacrima  
Gemitus

Correctio

Correctio  
prelatio  
Subditio  
lemetas  
Binguitas  
pietas  
Suauitas

Contra

Contra  
Confessio  
penitentia  
purgatio  
vema  
Remissio  
Indulgentia

Corpus

Corpus  
Caro  
Gravitas  
hostia  
Corruptio  
Certam  
viciu



• Cupiditas	Cupiditas Avaricia Ambicio Appetitus Desideriū Anhelatio Affectio.	• Culmā	Culmā Lacra obsequiū veneratio ydolatria Dummitas Adoratio
• Curiositas	Curiositas Vanitas Apparencia Venustas Celsitudo Culmen Eminentia	• Dulcedo	Dulcedo Gustus Guantitas Intermitas Gaudium. Iubitus Extasis.
• Culpa	Culpa Peccatus Noxa Scelus peccatum Viciū Crimen Exorbitatio	• Dubiū	Dubitas Diffidētia Dolus Detractio Adulatio
• Culmen	Culmen Altitudo Celsitudo Timor Superbia Clatio.	• Dōmū	Dōmū violencia potestas principes vehement Insultatio



Culmina  
latria  
obsequium  
veneratio  
delectatio  
omnitas  
adoratio  
  
Dulcedo  
Fustus  
Guamitas  
Intermetas  
Gaudium  
Inhibilis  
Festis.  
  
Dulcedo  
Diffidens  
Dolus  
Dedecatio  
Dulstatio  
  
Domini  
Violentia  
pocellia  
princeps  
vehemen  
Insulatio

.Dolus

Dolus  
fraudulent  
Nequitia  
Intentatio  
machinatio  
Calliditas  
astucia  
versucia

.Dilectio

Dilectio  
karitas  
amor  
Dulcedo  
Guamitas  
Solacium  
consolatio

.Delectio

Delectio  
voluptas  
Delectatio  
venustas  
mollicies  
mundus  
Candor

.Delectu

Delectum  
Culpa  
flos.  
peccatum  
facinus.  
Scelus.

.Delectatio

Delectatio  
Caro  
voluptas  
Dulcedo  
viror  
amemissio  
Estus  
Incentiva

.Debitum

Debitum  
Remissio  
indulgentia  
Executio  
Domum  
Gratitudo  
Retributio

.Demon

Demon  
hostis  
Calliditas  
Serpens  
Dapnatio  
Iehenna  
Incendium

.Disciplina

Disciplina  
Saena  
oreas  
Gestus  
habitus  
virtutes



Exemplum  
 comersatio  
 virtuositas  
 Scandalu  
 attractio  
 operum  
 . E. p.  
 Eucharistia  
 Crustus  
 Divinitas  
 Trinitas  
 Dulcedo  
 Guantitas  
 Iocunditas  
 . E. F.  
 Error  
 Ignorantia  
 Deceas  
 Inertia  
 Stulticia  
 . E. D.  
 Exeratio  
 operatio  
 virtus  
 Actio.  
 Demofma

Erutus  
 libertas  
 Captivitas  
 Redemptio  
 Grego  
 Recellus  
 Euolatio  
 . E. S.  
 Exhalio  
 Papius  
 Iubilis  
 . Eratio  
 Cantium  
 Intermetas  
 Gaudiu  
 Dulcedo  
 Guantitas  
 . Qua.  
 fama.  
 Detractio  
 Demigratio  
 honor  
 vita.  
 attestatio.  
 . f. a.  
 fatuntas  
 Stulticia  
 Inertia  
 Imperudentia  
 frenelis  
 Raptus



.familias	<p>facultates                      Dinitie                      opulencia                      Substantia                      habundantia                      Beatitude                      felicitas                      .F. a.</p>	.fina	<p>fina hois                      obitus                      mors                      Decessus                      Defuncti                      Amme                      Orationes                      .F. x.</p>
.feliata	<p>felicitas                      Iocunditas                      Gaudium                      Amemitas                      Beatus                      Eternitas                      Fructus                      .F. q.</p>	.filiao	<p>filiao                      Adopracio                      Coprimas                      Copagetas                      Confinitas                      proprietas                      Affinitas.                      .F. o.</p>
.festinatio	<p>festinatio                      acceleratio                      Celeritas                      velocitas                      Subitaneus                      precipitatio                      Contentio                      exactio                      .F. p.</p>	.forma	<p>formositas                      venustas                      Speciositas                      pulchritudo                      Cantor                      Amemitas                      Vilitas                      Blandities                      .F. t.</p>
.femina	<p>femina                      mulier                      Sponsa                      fragilitas                      Vanitas                      Salsitudo                      Libido.</p>	.fructus	<p>fructus                      visio.                      Beatitude                      felicitas                      Eternitas                      Iocunditas                      Gaudium</p>



<p>. Tab<sup>a</sup></p> <p>Gracia</p>	<p>Gracia</p> <p>Dilectio</p> <p>Atentio</p> <p>Caritas</p> <p>Amor &amp;</p> <p>Dulcedo</p> <p>Locunditas</p> <p>. G. D.</p>	<p>. 2<sup>o</sup></p> <p>Gemitus</p>	<p>Gemitus.</p> <p>Singultus</p> <p>Pletus</p> <p>Lacrima</p> <p>Lamentu</p> <p>Eudatio</p> <p>gesticia</p> <p>. G. p.</p>
<p>. 2<sup>o</sup></p> <p>Gratitudo</p>	<p>Gratitudo</p> <p>Acceptatio</p> <p>Domini</p> <p>omnis</p> <p>Retributio</p> <p>Beneficium</p> <p>Lustro</p> <p>. G. D.</p>	<p>. Tab<sup>a</sup></p> <p>Gestus</p>	<p>Gestus</p> <p>ores</p> <p>modestia</p> <p>conversatio</p> <p>Exemplu</p> <p>verecundia</p> <p>virtus</p> <p>prudencia</p> <p>. G. E.</p>
<p>Tab<sup>a</sup></p> <p>Gaudium</p>	<p>Gaudium</p> <p>alacritas</p> <p>hilaritas</p> <p>locunditas</p> <p>Exultatio</p> <p>vanitas.</p> <p>Tristitia.</p> <p>. G. T.</p>	<p>. 2<sup>o</sup></p> <p>Gressus</p>	<p>Gressus</p> <p>actiones</p> <p>opera</p> <p>meritum</p> <p>premiu.</p> <p>virtutes</p> <p>Almosine</p> <p>. G. D.</p>
<p>. 2<sup>o</sup></p> <p>Garrulitas</p>	<p>Garrulitas</p> <p>femina</p> <p>Genius</p> <p>Curiositas</p> <p>vanitas</p> <p>Loquacitas</p> <p>verbositas</p>	<p>. Tab<sup>a</sup></p> <p>Germen</p>	<p>Germen</p> <p>Genus</p> <p>condicio</p> <p>Genus</p> <p>nobilitas</p> <p>visitas</p> <p>Contemptus</p>



• Rec<sup>o</sup>.

habundant

pe.

• Honor

、止。

·Luitas

Re<sup>m</sup>.

horror

 $\cdot \pm a^{\pi}$ 

Abundantia  
 affluentia  
 opulentia  
 diuitie  
 delitie  
 voluptas  
 felicitas.

h. 5.

Honor  
 Celsitudo  
 Alacritudo  
 Cultus  
 Ambicio  
 Excellentia  
 Eminencia

h. t.

humilitas  
Delectio  
Subiectio  
Recognitio  
probaentia  
Expectatio  
omiseria

. B. 12.

horror  
 & mor-  
 tēhema  
 & terror  
 & supplicat  
 Demon

॥२॥

hesitatio

• Rec<sup>o</sup>

Inlaritas

Rec<sup>d</sup>.

• hystoria

॥ अ॥

·Lionia

• 2c.

hesitatio  
 diffidentia  
 incredulitas  
 dubitatio  
 inbecillitas  
 infirmitas  
 fragilitas

h. 5

h. i. s. a. r. i. t. a. s.  
 a. l. a. c. r. i. t. a. s.  
 l. o. t. i. n. d. i. c. t. a.  
 g. a. u. d. i. u. m.  
 e. x. u. l. t. a. t. o.  
 i. n. s. u. l. t. u. s.  
 o. r. e. t. u. s.

.h.p.

Historia  
 Potulaton  
 gymus  
 gymus  
 Domini  
 Bn Acut  
 Amysio.

h. 5.

homo  
conditio  
sexus  
fragilitas  
vanitas  
vilitas.

**N**atur-8



Igmo

Janua

Januarius  
apostoli.  
artitudo  
amictus  
iudicium  
Regnum  
celum

iudicium

iudicium  
medicatio  
dampnatio  
Iehēna  
tormentum  
simplicium  
incendium

iubilus

iubilus  
gaudium  
erectio  
raptus  
interit  
dulcedo  
gustus  
sustentatio

Jeunium

Jeunium  
abstinencia  
moderatio  
Dieta.  
Gula.  
voracitas  
Cibatio.

Iraundia

Iraundia  
furia  
acensio  
Emulatio  
zelus.  
Invidia  
persecutio

Iehēna

Iehēna  
horror  
terror  
pena  
cruciatu  
tormentum  
pena.

Invidia

Invidia  
odium  
Emulatio  
furia  
Detractio  
Inimicitia  
Dolofitas  
calliditas  
Fraudulentia



.Iuuetus

Iuuentus  
Adolescent<sup>it</sup>  
pueritia  
Etas  
Stulticia  
Inertia  
peruersio

.Iusticia

Iusticia  
Rectitudo  
Equalitas  
debitu  
processus  
Euentus  
Equanitas

.Laritas

Laritas  
Dilectio  
Amor  
Dulcedo  
Gustus  
Suauitas  
Iubilo  
Cantatio  
Gratia  
Papatu  
consolatio  
Solaciu  
Refrigeri<sup>m</sup>

.Lamentum

Lamentum  
Fletus  
Sulatus  
Lacrima  
Anxietudo  
Concrecio

.Lamentudo

Lamentudo  
Torpor  
Acidia  
Desidia  
Lacese  
Lamentudo

.Labor

Labor  
Exercitium  
Opus  
Actio  
Diligentia  
Frequentatio

.Lano

Lano di  
obsequium  
Cultus  
veneratio  
Patria  
Dilectio  
Seruitus



Lapsus

Lapsus.  
 Ruma  
 casus.  
 precipitatio  
 abstinens  
 profundus.  
 Serpens

Licentia

Licentia  
 licium  
 Expediens  
 possibilitas  
 Excusatio  
 prelatus  
 Subditus

Letitia

Letitia  
 hilaritas  
 alacritas  
 Gaudium  
 gectus  
 risus  
 Exultatio

Libertas

Libertas  
 Domini  
 Boni  
 Seruitus  
 victim  
 Diabolus  
 Iugum.

Lentitas

Lentitas  
 pietas  
 clementia  
 suauitas  
 prelatus  
 Subditus  
 correctio

Litigium

Litigium  
 Discidium  
 Discordia  
 Duellum  
 Bellum  
 Certamen  
 Conflictus

Lentitas

Lentitas  
 Exoneratio  
 agilitas  
 velocitas  
 mobilitas  
 Erectio  
 Speculatio  
 hincen.  
 contemplatio

Lmior

Lmior  
 vltima  
 corruptio  
 Sanctas  
 Exorbicatio  
 Culpa  
 Noxa.  
 peccatum  
 Peccatus



Lumen

Lumen  
Candor  
Splendor  
Litor  
Venustas  
Cognatio  
Benedictio

· orarum

· Martires  
Apostoli  
· Sancti.  
· Virgines  
· Angeli  
· Confessores  
· Patrum

Luxuria

Luxuria  
Concubitus  
Concupiscentia  
Carnalis  
Delectatio  
Libido  
Volutas

· consuetudo

· Consuetudo  
· Pietas  
· Sinceritas  
· Clementia  
· Obsequium  
· Conversatio  
· Gestus.

Loquacitas

Loquacitas  
Garrulitas  
Verborum  
Conceptus  
Fauces  
Sulcat  
Apparentia  
Demencia

· magnanimitas

· Magnanimitas  
· Austeritas  
· Potestas  
· Audacia  
· Virilitas  
· Fortitudo  
· Valitudo  
· Robor

· oraria

· oraria  
· Tristitia  
· Trinitas  
· Gaudium  
· Umbra.

· oraculum

· Oraculum  
· Subiectio  
· Sermotus  
· Opusculum  
· Captivitas  
· Dilectio  
· Humilitas  
· Supplicatio



• memoria

memoria  
passio  
meditacio  
Reminiscen  
Recognicio  
Beneficium  
Gratitudo

• meditacio

meditacio  
concepacio  
Speculacio  
Iubilus  
Rapetus  
Gustus  
Exultatio

• mendacium

mendacium  
adulatio  
Dolositudo  
Fraus  
Fingitudo  
Frequentia  
Calliditas  
Versutia

• gestio

gestio  
Dolor  
Tristitia  
Lacrima  
Angustia  
Gemitus  
Fletus  
Gloria  
Combatio

• merces

merces  
Retributio  
Beneficium  
Gloria  
Dominus  
Corona  
Victoria

• misericordia

misericordia  
Compassio  
Clementia  
pietas  
Benevolentia  
Leuamen  
Consolacio

• misterium

misterium  
archanum  
Deus  
Divinitas  
Secretum  
Visio  
prophecia

• ministerium

ministerium  
Sermone  
Oratio  
Cultus  
Obsequium  
Veneratio  
Observatio  
Custodia  
Diligentia



omniscia

omniscia  
signa  
portenta  
prodigia  
mortui  
inuria  
thomistaco

omnium

omnium  
impatencia  
periculu  
rebellio  
obedia  
prelatu  
subditu

modestia

modestia  
virtus  
prudencia  
temperancia  
verecundia  
meditacio  
patencia

omnis

omnis  
domini  
histrio  
antient  
locutor  
paupers  
gestas  
retribuco  
adduco

omnis

omnis  
obitus  
decessus  
paraco  
humilitas  
perognico  
memoria

natia

natia  
festinatio  
solleptas  
nomtas  
omaria  
cristus  
ascensio  
passio  
resurr.  
sanctitas

omnis

omnis  
modestia  
virtus  
gestus  
actus  
habitus  
decencia  
toposito



. Natura

Natura  
 Genus  
 Condicio  
 humanitas  
 Species  
 consuetudo  
 vanitas

. Notitia

Notitia  
 cognitio  
 Investigatio  
 Erpugnatio  
 perscrutatio  
 exploratio  
 Ruminatio

. Negligentia

Negligentia  
 omiserunt  
 Cultus  
 Seruitus  
 Laus dei  
 labor  
 Insudatio

. Numen

Numen  
 Angelus  
 apostoli  
 Sancti  
 patrum  
 optatores  
 Virgines  
 confessorum

. Oratio

Oratio  
 Desiderium  
 Denotio  
 persensum  
 Anhelatio  
 Expectatio

. Occasio

Occasio  
 obitus  
 Decessus  
 infectio  
 mors

. Occasio

Occasio  
 Exemplum  
 Lectus  
 Investigatio  
 Inductio  
 pertractatio

. Obstinatio

Obstinatio  
 Desperatio  
 Cunctatio  
 Cessatio  
 Grauitas  
 moles  
 corpus  
 Arbitrium



ostentatio	ostentatio glacio superbia ambicio appetitio timor excellen	patien
opressio	opressio violencia paupeza paupeza spolium maledictio persecutio	parata
ordo	ordo religio conuenientia consequencia ritus conuentus comitatus	persecutio
passio	passio compassio maeror dolor tristitia	pena

patencia	patencia responsio sapientia loquela affabulatio dulcedo suauitas
parata	parata obscura auaritia cupiditas tenacitas ambicio attractio
persecutio	persecutio tribulatio arctatio angustia anxietas pernicio maledictio
pena	pena infliccio tormentum supplicium torio lechama cruciatu lesio



·pethocosten

pentecosten  
spiritus  
trinitas  
amor  
caritas  
gracia  
dilectio

·potestas

potestas  
violencia  
dominium  
subiectio  
insultatio  
oppressio  
extirpacio

·portentum

portentum  
signum  
prodigium  
miraculum  
rarum  
stupor  
mireretur

·porta

porta  
ianua  
introitus  
additus  
iter  
arcitudo  
viator  
cancelli  
molesta

·puritas

puritas  
licor  
candor  
mundicia  
resplendens  
pulchritudo  
venustas

·purpura

purpura  
vestimentum  
indumentum  
amictus  
pompa  
timor  
superbia

·pueritia

pueritia  
iuuentus  
adolescentia  
seminum  
etas  
securitas  
nascentia

·pulsatio

pulsatio  
persudans  
oratio  
preces  
dederunt  
voluntas  
appetitus  
affectio



• Dices

Dices  
Securitas  
Inastutias  
Labor  
pauca  
Serenitas  
Felicitas

• Duerimoid

Duerimoid  
omnium  
Impatia  
Garrulitas  
loquacitas  
voracitas  
verbositas

• Ratio

Ratio  
Intellectus  
prudencia  
Sapientia  
Sollertia  
astutia  
versutia  
Sunderesis  
Sagacitas  
virtus

• Pancer

Pancer  
invidia  
Emulatio  
zelus  
persecutio  
peruersio  
Inconco

• Rapina

Rapina  
furtum  
Spolium  
violencia  
oppressio  
Subiectio  
In iura

• Remissio

Remissio  
Indulgentia  
venia  
Noxa  
Pectus  
Culpa  
penitencia

• Resisten

Resistentia  
coercitio  
conflictus  
Certamen  
pugna  
Bellum  
Duellum  
Hostia  
Caro

18



• Pius

Pius  
uamitas  
Gaudium  
hilaritas  
catholus  
glorificatio  
letitia  
frustratio

• Rigor

Rigor  
Seueritas  
asperitas  
impietas  
prelatus  
Subditus  
Correctio

• Pius

Pius  
more  
consuetudo  
actus  
Inductio  
persuasio  
Bestia

• Rumor

Rumor  
fama  
Garrulitas  
verbositas  
Curiositas  
uamitas  
Ambicio  
Ectio.

• Sancti

Sancti  
summi  
apostoli  
patroni  
angeli  
uirgines  
martires  
confessores

• Sapient

Sapientia  
Gallerta  
Sagittatio  
prudencia  
astucia  
uersuta  
catholica

• Seueritas

Seueritas  
Rigor  
asperitas  
Religio

• Securitas

Securitas  
tranquillitas  
mansuetudo  
timor  
Suspicio



Seru

Seruum  
Rigor  
Seueritas  
Comitatus  
Exemplum  
Sequelae  
Magister

timor

timor  
Alacritas  
Superbia  
Alacritudo  
Culmen  
Celsitudo  
Sublimitas

Superbia

Superbia  
timor  
Alacritas  
Magitudo  
Celsitudo  
Alacritudo  
Sublimitas

tempus

tempus  
Breuitas  
hora  
conuictum  
vita  
Nihilum

trinitas

trinitas  
Diminutio  
Cristus  
Deitas  
humilitas  
mysterium

terror

terror  
horror  
pena  
tormentum  
Symphoniam  
pena  
giseria

tristitia

tristitia  
onestitia  
tribulatio  
angustia  
afflictio  
maiestas

vanitas

vanitas  
Breuitas  
sapientia  
humilitas  
Fragilitas



vastitas  
 spoliū  
 rapina  
 opressio  
 violentia  
 afflictio  
 tribulatio

vastitas

vapulatio  
 plaga  
 verber  
 inflictio  
 molestia  
 correctio  
 virga  
 flagellum

vapulatio

verbum  
 tristitia  
 trinitas  
 misterium  
 archana  
 generatio  
 oratoria

verbum

venustas  
 candor  
 nitore  
 puritas  
 utilitas  
 deformitas  
 timor

venustas

venditio

vestimentum

veritas

venia

venditio  
 emptio  
 usura  
 mendacium  
 cupiditas  
 ambitio  
 seductio

vestimentum  
 amictus  
 purpura  
 pompa  
 timor  
 claudia  
 testudo

veritas  
 assertio  
 affirmatio  
 puramentum  
 verbum  
 esse  
 deus  
 sermo

venia  
 indulgentia  
 remissio  
 gloria  
 culpa  
 peccatum  
 scelus  
 reatus



Virginitas

Virginitas  
pudicitia  
omnidia  
concomitantia  
Castitas  
Candor  
Sincor-  
punitas

Voluntas

Voluntas  
Affectus  
Intentum  
propositum  
Necessitas  
Inclinatio  
Refugium

Vilicatus

Vilicatus  
condicio  
vilitas  
fragilitas  
homo.  
Corruptio  
Spiritalia

Visio

Visio.  
Beatitudo  
fructus  
felicitas  
Consolatio  
perpetuitas

Virilitas

Virilitas  
audacia  
fortitudo  
atletica  
vehementia  
Robur  
Auxilium  
Effectus

Virtus

Virtus  
Gratitudo  
pulchritudo  
acceptatio  
habitus.  
Gestus.  
modestia  
prudencia

Viscera

Viscera  
misericordia  
compassio  
clementia  
pietas  
Benevolentia  
Clementia

Victoria

Victoria  
corona  
Regni  
Beatitudo  
felicitas  
Consolatio  
Requies  
Inquietudo



1 <sup>a</sup>	Volunt	Voluntas
Volunt		affectus
		Intentum
		propositum
		affectio
		Desiderium
2 <sup>a</sup>		v. t.
Voluntas		Voluntas
		Gemitus
		Fletus
		Singultus
		Lacrima
3 <sup>a</sup>		Sulatus
4 <sup>a</sup>		Oreos
		v. d.
Voluntas		Voluntas
		passio
		Luctus
		Comitatio
		Misericordia
		Clementia
5 <sup>a</sup>		Fugitatio
		Misericordia
6 <sup>a</sup>		v. t.
Voluntas		Voluntas
		Avaritia
		Invidiosus
		Ambitio
		Superbia
7 <sup>a</sup>		Venditio
		Appetitio



101  
102







Imperator Romanorum  
in nomine domini Amen  
1111

In nomine domini amen Anno a Nativitate domini  
Millesimo quadringentesimo



Innoce dy amen. Amos a Natunat. Amos  
Ayillesmo quadi





Libez